एम.पी.एच.आई.एन.२०१२/४५०६९ ॥ओ३म्॥ डाक पंजीयन : एम.पी./.आई.डी.सी./१४०५/२०२४-२६
प्रत्येक माह दिनांक २५ को प्रकाशित एवं प्रेषित
हिन्दी-मासिक

वैदिक संसार

● वर्ष : १३ ● अंक : ११ ● २५ सितम्बर २०२४, इन्दौर (म.प्र.) ● मूल्य : ५०/- ● कुल पृष्ठ : ३६

उस देश की, उन व्यक्तियों की अत्यन्त दुर्दशा क्यों नहीं होगी जो एक परमात्मा को छोड़कर इतर की उपासना करते हैं। -महर्षि दयानन्द सरस्वती

धर्म और राष्ट्र की बलिवेदी पर प्राण-प्रण से न्यौछावर समस्त विभूतियों को विनम्रतापूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित तथा दिवंगत पवित्रात्माओं को शत-शत नमन

महर्षि दयानन्द सरस्वती
३१ अक्टूबर, निर्वाण दिवस

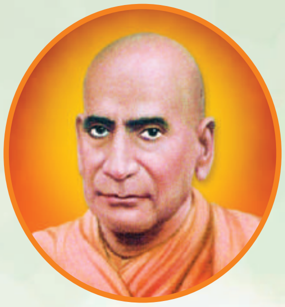
स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती
२५ दिसम्बर, बलिदान दिवस

पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा
४ अक्टूबर, जयन्ती

पं. लाल बहादुर शास्त्री
२ अक्टूबर, जयन्ती

सरदार वल्लभभाई पटेल
३१ अक्टूबर, जयन्ती

लाला हरदयाल एम.ए.
१४ अक्टूबर, जयन्ती

गोंडवाना रानी दुर्गावती
५ अक्टूबर, जयन्ती

वीरांगना भाभी दुर्गावती बोहरा
७ अक्टूबर, जयन्ती

मुंशी प्रेमचन्द
८ अक्टूबर, पुण्यतिथि

पं. गणेश शंकर विद्यार्थी
२६ अक्टूबर, जयन्ती

समस्त आर्यों को विजयादशमी पर्व एवं
नवसस्येष्टि (दीपावली) पर्व की
वैदिक संसार परिवार की ओर से
हार्दिक-हार्दिक बधाई व अनन्त शुभकामनाएँ

अश्फाक उल्ला खाँ
२२ अक्टूबर, जयन्ती

ईश्वर कृपा से वैदिक संसार के सफलतापूर्वक तेरह वर्ष की पूर्णता पर समस्त उदारमना दानी महानुभावों, विद्वान् स्नेहीजनों, सहयोगी शुभचिन्तकों, प्रकाशन कार्य के साथीगणों एवं समस्त पाठक बन्धुओं को हार्दिक-हार्दिक बधाई, आभार एवं अनन्त शुभकामनाएँ। -सुखदेव शर्मा, प्रकाशक

आर्य जगत् की सम्पन्न विविध गतिविधियाँ

नामकरण संस्कार सम्पन्न

वैदिक संसार पत्रिका के सम्पादक आचार्य ओमप्रकाश आर्य के सुपौत्र का नामकरण संस्कार दिनांक १५ अगस्त २०२४ को गुड़गाँव में आचार्य रामफल जी शास्त्री के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। बालक का नाम शुचितम रखा गया। शुचितम के पिता वेदांशु, माता निशा, दादी गायत्री, बुआ स्तुति, नाना रमेशचन्द जी शर्मा, नानी ममता शर्मा, मामा नीरज ने यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की। शुचितम का जन्म दिनांक २६ जुलाई २०२४ को गुड़गाँव में हुआ था। आचार्य रामफल जी शास्त्री ने संस्कारों के महत्व पर प्रकाश डाला और बताया कि नाम सार्थक होना चाहिए। उपस्थित सज्जनों को वैदिक पद्धति से नामकरण संस्कार बहुत अच्छा लगा और उन्होंने अपने घर पर यज्ञ करवाने की सत्प्रेरणा ग्रहण की। आचार्य रामफल जी ने बताया कि संस्कार वैदिक संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। जब से परिवारों ने संस्कारों का त्याग किया, तब से पारिवारिक तनाव भी बढ़े हैं। संस्कारों से मनुष्य का निर्माण किया जाता है। आज नैतिक मूल्यों की अत्यन्त आवश्यकता है। **-सुखदेव शर्मा, प्रकाशक वैदिक संसार**

आर्य समाज रामपुरा, कोटा (राज.) के वार्षिकोत्सव समापन दिवस दिनांक ८ सितम्बर २०२४ को आर्यसमाज रावतभाटा के प्रधान विनोद कुमार त्यागी, मन्त्री ओमप्रकाश आर्य, सदस्य रामराज मीना, ब्रह्मप्रकाश शर्मा कोटा द्वारा आर्यसमाज रामपुरा को वैदिक संसार विशेषांक भेंट किया गया। इस अवसर पर वैदिक विद्वान् योगेश जी भारद्वाज, भजनोपदेशक कुलदीप जी, बिरदीचन्द जी, श्रीचन्द जी गुप्ता, छात्राध्यापक कारूलाल सूरज जी भी साथ थे। सहयोग राशि प्रदान कर कोई भी सदस्य इस विशेषांक को प्राप्त कर सकता है। इस आकर्षक, संग्रहणीय, ऐतिहासिक विशेषांक में वेद मन्तव्य व महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवनवृत्त दर्शाया गया है।

हिन्दी पखवाड़ा महोत्सव, सीतामगढ़ी, बिहार के अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय कवि गीतकुमार गितेश को आर्य जिला सभा के प्रधान श्रीमान् उपेन्द्र जी आर्य वैदिक संसार विशेषांक प्रति भेंट करते हुए।

वेदकथा अमृतवर्षा, रतलाम (म.प्र.) आयोजन समापन अवसर पर आचार्य आनन्द जी पुरुषार्थी के साथ उपस्थितों का लिया गया सामूहिक चित्र।

जो बिना भूख के खाते हैं और जो भूख लगने पर भी नहीं खाते, वे रोग सागर में गोता लगाते हैं। –महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्राणिमात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

वर्ष : १३, अंक : ११

अवधि : मासिक, भाषा : हिन्दी

प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ सितम्बर, २०२४

- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
  सुखदेव शर्मा, इन्दौर
  ०९४२५०६९४९१
- सम्पादक
  आचार्य ओमप्रकाश आर्य
  आर्य समाज रावतभाटा (राज.)
  चलभाष : ९४६२३१३७९७
- पत्र व्यवहार का पता
  महर्षि दयानन्द स. विद्यार्थी आवास आश्रम
  ४७, जांगिड भवन, कालिका माता रोड,
  बड़वानी (म.प्र.) पिन–४५१५५१
- अक्षर संयोजन–
  नितिन पंजाबी (वी.एम. ग्राफिक्स), इन्दौर
  चलभाष : ९८९३१२६८००

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

अतिविशिष्ट संरक्षक सहयोग	५१,०००/–
पुण्यात्मक विशेष सहयोग	११,०००/–
पंचवार्षिक सहयोग	२,१००/–
त्रैवार्षिक सहयोग	१,३००/–
वार्षिक सहयोग	५००/–
एक प्रति	५०/–

(पंजीकृत डाक व्यय पृथक् से देय होगा।)

विज्ञापन : रंगीन पृष्ठ (भीतरी) ११,०००/–

खाता धारक का नाम : **वैदिक संसार**
बैंक का नाम : यूको बैंक
शाखा : ग्राम पिपलियाहाना, तिलक नगर, इन्दौर
चालू खाता संख्या : 05250210003756
आई एफ एस सी कोड : **UCBA**0000525
कृपया खाते में राशि जमा करने के पश्चात् सूचित अवश्य करें।

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज : **'वैदिक संसार'**

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ क्र.
अमृतमयी वेदवाणी : साम–अथर्ववेद शतक पुस्तक से	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	०४
विभिन्न स्त्रोतों से संग्रहीत अक्टूबर २०२४ के कुछ विशेष पर्व–दिवस	संकलित	०४
वैदिक संसार पत्रिका के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
सम्पादकीय : राम–रावण का युद्ध बहुत कुछ सन्देश दे रहा है	आचार्य ओमप्रकाश आर्य	०५
महान् विभूतियाँ : देशभक्त लाला हरदयाल एम.ए.	देशराज आर्य	०७
: लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल	डोंगरलाल पुरुषार्थी	०९
महर्षि दयानन्द के जीवन की अन्तिम घटनाएँ	खुशहालचन्द्र आर्य	११
सबसे पहले लेकर आपका नाम प्रभु	रमेशचन्द्र भाट	१२
आर्यत्व प्राप्ति के क्रमिक सोपान	वेदप्रकाश आर्य	१३
ऋग्वेद में राष्ट्रीय भावना	प्रेमप्रकाश शास्त्री	१४
आर्य समाज नूरपुर का सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक क्षेत्र में योगदान...	सी.पी. महाजन	१६
यज्ञ संहिता : यज्ञ के नियम (गतांक से आगे)	चन्द्रप्रकाश महाजन	१७
मातृशक्ति विशेष : अथर्ववेद में नारी की गरिमामयी स्थिति	पं. शिवनारायण उपाध्याय	१८
दीपावली के उपलक्ष्य में	खुशहालचन्द्र आर्य	१९
दीपावली का वास्तविक स्वरूप	डॉ. गंगाशरण आर्य	२१
फीके रंग	रामफलसिंह आर्य	२३
बसेरा (संशोधित पुनः प्रस्तुति)	सुश्री आदर्श आर्या	२४
करो धर्म के काम/करो वेद प्रचार आर्यों	पं. नन्दलाल निर्भय	२५
हम क्या खावें – घास, मांस या विषाक्त अन्न–जल?	आर्य मोहनलाल दशोरा	२६
स्वास्थ्य विशेष : पंचवटी से प्राप्त करें उत्तम स्वास्थ्य	डॉ. श्वेतकेतु शर्मा	२७
आर्यसमाज का प्रचार कैसे बढ़े? कुछ सुझाव	अशोक कुमार गुप्त	२९
ऋषि दयानन्द के चरणों में समर्पित श्रद्धांजलि	देवकुमार प्रसाद आर्य	२९
आर्य जगत् की सम्पन्न विविध गतिविधियाँ	संकलित	३०
अनुपम कृति	श्रीमती पुष्पा शर्मा	३१
दयानन्द आश्रम, बड़वानी पर सातवाँ मासिक अतिथि यज्ञ, जन्मदिवस...	सुखदेव शर्मा	३३
शोक समाचार : जगदीशचन्द्र इन्द्रिया का निधन	अधिवक्ता रमेशचन्द्र पाटीदार	३४

प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों की असहमति की स्थिति में पाठकगण सीधे लेखक से वार्ता करें, सम्पादक या प्रकाशक से नहीं।

अमृतमयी वेदवाणी

साम–अथर्व वेद शतक पुस्तक से

स्वामी शान्तानन्द सरस्वती
(एम.ए. दर्शनाचार्य)
प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दर नगर, रोहतक (हरियाणा)
सन्त औधवराम वैदिक गुरुकुल, भवानीपुर (कच्छ), गुजरात
चलभाष : ९९१८५१४८१०, ९६६४६३०११६

अद्याद्या श्वः श्वः इन्द्र त्रास्व परे च नः।
विश्वा च नो जरितृन्त्सत्पते अहा
दिवा नक्तं च रक्षिषः।। (५३)

–सामवेद उत्तरार्चिक.१३.३.१.१ (१४५८)

शब्दार्थ : सत्पते = हे सत्पुरुषों के रक्षक और पालक **इन्द्र** = परमेश्वर! **नः** = हमारी **अद्य–अद्य** = आज–आज और **श्वः श्वः** = कल–कल **परे** = और परले दिन ऐसे ही **विश्वा अहा** = सब दिन **त्रास्व** = रक्षा करो **च** = और **नः जरितृन्** = हमारी, आपकी स्तुति करने वालों की **दिवा च नक्तं रक्षिषः** = दिन में और रात्रि में भी सदा रक्षा कीजिये।

विनय : हे सत्पुरुषों, महात्माओं, विद्वानों के विशेष रक्षक और पालक परम पिता परमात्मा! आप अनन्त ऐश्वर्यवान् और अपने भक्तों की विशिष्ट प्रकार से रक्षा करने वाले हैं तथा दुष्टों को दण्ड देने वाले हैं, इसलिए आप इन्द्र कहलाते हैं। हे प्रभु! आप प्रत्येक दिन या दिन–प्रतिदिन निरन्तर दिन–रात हमारी रक्षा कीजिये तथा सब रोगों से, कष्टों से, दुःखों से, दुर्गुणों से, दुर्व्यसनों से एवं सब प्रकार की अविद्या–अज्ञानता से सदा सर्वत्र हमारी रक्षा कीजिये।

हे परम दयालु परमेश्वर! हम आपके उपासकगण प्रतिदिन प्रातः–सायं एकाग्रतापूर्वक आपकी उपासना–ध्यान कर सकें तथा दिनभर व रात्रिकाल सोते समय भी आपका स्मरण करते रहें। इस प्रकार व्यवहारकाल में आपकी स्मृतिपूर्वक सब काम कर सकें व उपासनाकाल में आपकी स्तुति–उपासना में ही मग्न रहकर आपके गुण कर्म स्वभाव को धारण कर सकें। ऐसी हम पर कृपा कीजिये। रात्रिकाल में भी कभी नींद टूटने पर आपका जप करते–करते पुनः सो जायें ऐसी निर्मल विमल चित्त की स्थिति हमें प्रदान करें।

पद्यार्थ

सत्पुरुषों के रक्षक पालक,
सत्पति इन्द्र प्रभु परमेश्वर।
आज–आज और कल–कल–परले,
निशिदिन हम सबकी रक्षा कर।
करें स्तुति भजन व सुमिरन,
शुभकर्मी बन प्रीति बढ़ाएं।
विमल वेद के वर्षा जल में
खुद नहावें सबको नहलावें।।

● **दर्शनाचार्या विमलेश बंसल**
(विमल वैदेही), दिल्ली
चलभाष : ८१३०५८६००२

विभिन्न स्त्रोतों से संग्रहीत अक्टूबर २०२४ के कुछ विशेष पर्व-दिवस

०१. विश्व शाकाहारी दिवस, विश्व वृद्ध दिवस, राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस। ०२. **लालबहादुर शास्त्री जयन्ती,** मोहनदास गाँधी जयन्ती, विश्व अहिंसा दिवस, स्वच्छता दिवस। ०२–०८ ७०वाँ राष्ट्रीय वन्य जीव संरक्षण सप्ताह। ०३. महाराजा अग्रसेन जयन्ती, विश्व प्रकृति दिवस। ०४. **पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा जयन्ती,** विश्व पशु कल्याण दिवस। ०४–१० विश्व अन्तरिक्ष सप्ताह। ०५. रानी दुर्गावती जयन्ती, विश्व शिक्षक दिवस, सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन जयन्ती। ०६. डॉ. मेघनाथ शाह जयन्ती, विश्व सेरेब्रल पाल्सी दिवस। ०७. विश्व पर्यावास दिवस (प्रथम सोमवार), वीरांगना दुर्गाभाभी बोहरा जयन्ती, विश्व आवास दिवस (प्रथम सोमवार), विश्व कपास दिवस। ०८. मुंशी प्रेमचन्द व जयप्रकाश नारायण पुण्यतिथि, भारतीय वायुसेना दिवस। ०९. वीर सीताराम कंवर बलिदान दिवस, काशीरामजी पुण्यतिथि, विश्व डाक दिवस, प्रादेशिक सेना स्थापना दिवस। १० राष्ट्रीय डाक–तार दिवस, विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस। ११. नानाजी देशमुख व जयप्रकाश नारायण जयन्ती, अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस। १२. डॉ. राममनोहर लोहिया पुण्यतिथि, विजयादशमी, राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग स्थापना दिवस, विश्व दृष्टि दिवस, विश्व गठिया दिवस। १३. अन्तर्राष्ट्रीय प्राकृतिक आपदा न्यूनीकरण दिवस। १४. विश्व मानक दिवस। १५. पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' व ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जयन्ती, विश्व विद्यार्थी दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय ग्रामीण महिला दिवस, विश्व श्वेत छड़ी दिवस। १६. विश्व खाद्य दिवस। १७. **कर्मवीर जयानन्द भारती जयन्ती,** महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, अन्तर्राष्ट्रीय निर्धनता उन्मूलन दिवस। १९. डॉ. सुब्रह्मण्यम चन्द्रशेखर जयन्ती, गुरु रामदास जयन्ती। २०. विश्व सांख्यिकी दिवस, विश्व ऑस्टियोपोरोसिस दिवस। २१. आजाद हिन्द फौज स्थापना दिवस, राष्ट्रीय पुलिस स्मृति दिवस। २२. अश्फाक उल्ला खाँ जयन्ती, अन्तर्राष्ट्रीय हकलाहट जागरूकता दिवस। २३. हिम तेन्दुआ दिवस। २४. विश्व पोलियो दिवस, संयुक्त राष्ट्र दिवस, विश्व विकास दिवस, आई.टी.बी.पी. स्थापना दिवस। २५. गुरु हरराय पुण्यतिथि। २६. पं. गणेशशंकर विद्यार्थी जयन्ती, सन्त नामदेव जयन्ती, जम्मू–कश्मीर परिग्रहण दिवस। २७. जतिन्द्रनाथ दास जयन्ती, ७८वाँ राष्ट्रीय इन्फेन्ट्री दिवस, विश्व दृश्य–श्रव्य विरासत दिवस। २८. विश्व लेमूर दिवस, स्वामी रामतीर्थ जयन्ती। २९. धन्वन्तरी जयन्ती, धनतेरस, विश्व स्ट्रोक दिवस। ३०. डॉ. होमी जहाँगीर भाभा जयन्ती, विश्व मितव्ययिता दिवस। ३१. स्वामी दयानन्द निर्वाण दिवस, सरदार वल्लभभाई पटेल जयन्ती, श्रीमती इन्दिरा गाँधी बलिदान दिवस, राष्ट्रीय अखण्डता दिवस, संकल्प दिवस, नवसस्येष्टि पर्व (दीपावली)

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानवजाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान– वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि–मुनियों एवं ऋषि दयानन्द–प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगद्रष्टा, स्वराष्ट्र–प्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित–पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, असत्य के खण्डन और सत्य के मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्–साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी महर्षि दयानन्द सरस्वती के समस्त मानवजाति पर किये गये उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जनजागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार–प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

सम्पादकीय

राम–रावण का युद्ध बहुत कुछ सन्देश दे रहा है

ओमप्रकाश आर्य

आर्य समाज, रावतभाटा, वाया कोटा (राजस्थान)
चलभाष : ९४६२३१३७९७

बात तो त्रेतायुग की है किन्तु वर्तमान में वह घटना बहुत कुछ देश–दुनिया को सन्देश दे रही है। धर्म–अधर्म, अच्छाई–बुराई, पाप–पुण्य, सदाचार– दुराचार, सुर–असुर, शान्ति–अशान्ति, न्याय– अन्याय, प्रेम–घृणा, आदर्श– अनादर्श, आदर–निरादर, मैत्री–शत्रुता, स्वार्थ–परार्थ, सज्जनता–दुर्जनता, मानवता–दानवता, सत्य–असत्य, आर्यत्व–अनार्यत्व, अहंकार– निरहंकार, ज्ञान–अज्ञान, युद्ध– सद्भावना के भावों का उद्वेलन है। किसी न किसी रूप में आज भी वे परिस्थितियाँ जन्म ले रही हैं और मनुष्य उनसे जूझ रहा है। सामना कौन करता है? जो वेद की आज्ञा का पालन करता है और वेदमार्ग पर चलता है। यह संघर्ष विभिन्न रूपों में देश–समाज को विक्षुब्ध करता है।

एक ओर राम का आदर्श चरित्र और दूसरी ओर दुरात्मा रावण का कदाचार। राम वैदिकमार्गी ज्ञान सम्पन्न ईश्वरीय आज्ञा का पालन करने वाले, वहीं ज्ञान के विरुद्ध–आचरण करने वाला अहंकारी रावण। चाहे राजनीति हो, चाहे समाज। संघर्ष वही चल रहा है। बाहर तो छोड़िए स्वयं के अन्दर भी वह चल रहा है। रावण का पुतला दहन कर देने से बुराई समाप्त नहीं होगी और न ही राम की विशाल भव्य मूर्ति बनाने से अच्छाई आएगी। यह समस्या का समाधान नहीं है। पुतले जलाने से पर्यावरण को विनष्ट करना है और बिना चरित्र को अपनाएँ राम की पूजा–अर्चना– चढ़ावा करना केवल पाखण्ड है। परम ईश्वर भक्त राम वेद के उपदेश को आत्मसात किए हुए थे, इसीलिए उनकी कीर्तिपताका आकाश में वर्तमान में भी फहरा रही है। वेद विपरीत आचरण उन्हें कदापि स्वीकार नहीं था। वे सुसंस्कारों में पालित–पोषित बड़े हुए थे। उनकी आत्मा वेद–शास्त्रों से अनुरंजित थी। यज्ञप्रेमी थे। प्रतिदिन सन्ध्या करते थे। योग उनके जीवन में समाया हुआ था। यही सब गुण अपनाने से जीवन सुधरेगा, अन्यथा कोरा गीत गाने से कुछ प्राप्त होने वाला नहीं है। रावणीय आचरण के लिए प्रयत्न की आवश्यकता ही नहीं है। चरित्रवान् बनने के लिए तप करना पड़ता है, चरित्रहीनता तो अपने आप आ जाती है। जीवन को सफल और सार्थक बनाने के लिए वेद ही एक ऐसा उपाय है जो सत्यज्ञान का बोध कराता है, अन्यथा मनुष्य का जीवन पाखण्डों में समाप्त हो जाता है। यह कटु सत्य है कि आसुरी प्रवृत्तियाँ भारी पड़ती है, क्योंकि उन प्रवृत्तियों में केवल शक्ति होती है, सद्विचार, मानवीय गुण होते ही नहीं है। देवत्व पूर्णत: सत्य पर आधारित और आचरित होता है।

चारों ओर अवैदिक विचार छाए हुए हैं और रामराज्य लाने की बात की जाती है। यह कैसे सम्भव होगा? जब तक वैदिक शिक्षा, वैदिक आचरण, वैदिक मार्ग, वैदिक आलोक प्रशस्त नहीं होगा, तब तक सब बातें निराधार होंगी। **झूठा इतिहास पढ़ाया जाता है कि रावण का वध दशहरे के दिन हुआ था और राम दीपावली के दिन अयोध्या लौटे थे। ऐसा इतिहास पहली कक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक पढ़ाया जाता है, जबकि दशहरे और दीपावली का सम्बन्ध राम–रावण से है ही नहीं।** ऐसे ही रामायण के पात्रों को असत्य रूप में दर्शाया जाता है। वानर जाति को पेड़ पर रहने वाले बन्दर के समान, रीछ, नाग, जटायु, सागर आदि को भालू, सर्प, पक्षी, समुद्र आदि के रूप में चित्रित करके भावी पीढ़ी को दिखाना सब असत्य इतिहास बताया जा रहा है जो सारा का सारा असम्भव है। राम को श्रेष्ठ आदर्श मानव न मानकर साक्षात् ब्रह्म सिद्ध करना और यह कहना कि वे सब यहाँ लीला कर रहे थे। वे अवतार धारण करके भक्तों को तारने आए थे। भगवान भक्तों के वश में होता है। सत्य से कोसों दूर क्या–क्या कल्पनाएँ कर ली गई हैं। राम के आदर्श चरित्र को असत्य और असम्भव कल्पनाओं से ढँक दिया गया है। महर्षि दयानन्द का कितना बड़ा उपकार है कि उन्होंने हम आर्यों को सत्य का मार्ग बताया। आज सत्य की बात करने वाले आर्य समाज की बातें किसी को अच्छी नहीं लगतीं।

जन्मना जाति–पाँति की जड़ें, रसातल तक पहुँच चुकी हैं। आसुरीवृत्तियाँ चारों ओर ताण्डव नृत्य कर रही हैं। स्वार्थ और पदलिप्सा ने मनुष्य को अन्धा बना दिया है। स्वार्थ के वशीभूत मानव ने अपने गौरवपूर्ण इतिहास को विस्मृत कर दिया है। भविष्य में क्या होगा, इसकी भी उसे कोई चिन्ता नहीं है। वह कहाँ जा रहा है? इससे उसे कोई सरोकार नहीं है। भविष्य के लिए पर्यावरण सुरक्षित रहेगा या नहीं, इसका जरा भी भान नहीं है। बच्चों को जो पढ़ाया जा रहा है उसका उन पर क्या संस्कार पड़ेगा, इससे किसी को कोई सरोकार नहीं है। वे सुरक्षित जीवन जी सकेंगे या नहीं, इसका भी ध्यान नहीं है। देश–धर्म पर बलिदान होने वाले वीरों को भी विस्मृत किया जा रहा है और जिनका जीवन पक्षपातपूर्ण विचारों से भरा हुआ था उनका गुण गाया जाता है। भला ऐसे विचारों से देश का भविष्य कैसा होगा? यह चिन्ता का विषय है। सत्य बातें अच्छी नहीं लगतीं, झूठी ही सुहाती है। राम के आदर्श चरित्र से हम क्या शिक्षा ले रहे हैं? अन्दर से तो रावण का साम्राज्य संचालित हो रहा है।

शिक्षा का व्यावसायीकरण, गुरु–शिष्य सम्बन्ध समाप्त। घर–परिवार से संस्कार खत्म, तनाव–चिन्ता–मनमुटाव–संघर्ष जीवन पर्यन्त। कृत्रिम जीवनशैली का बोलबाला। प्रकृति का आशीर्वाद समाप्त। पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव, मर्यादाओं का तिरस्कार। बड़ों की महत्वाकाँक्षा, बचपन छीना। वैदिकधर्मी राम के मन में पदलिप्सा थी ही नहीं। आज प्रबल संचार के साधन विद्यमान हैं। घटनाओं को तोड़–मरोड़कर परोसा जाता है। नौनिहालों पर उसका क्या प्रभाव पड़ेगा, उससे धनलोलुपों को कोई लेना–देना नहीं। दिखावा और बनावटीपन जीवन का अंग

बन चुका है। खाद्य पदार्थों की शुद्धता केवल पुस्तकों तक सीमित रह गई है। फिर भी रावण का पुतला जलाया जाता है और वायु, ध्वनि प्रदूषण उत्पन्न करके खुशियाँ मनाई जाती हैं। राम का राष्ट्रप्रेम, प्रजाप्रेम कितना उच्च था, आज के राजनेता उस राम के जीवन से क्या सीख लेते हैं? सीता और राम के बीच कभी मनमुटाव हुआ ही नहीं, जबकि चौदह वर्ष का वन का जीवन कितना कठिन रहा होगा। धूप, शीत, वर्षा, कन्दमूल का आहार, धरती पर शयन, जंगली जानवरों का भय सबका सामना किया। वर्तमान की युवा पीढ़ी उस जीवन से क्या सीख लेती है। विवाह होते ही तनाव शुरू हो जाता है। निकटतम पवित्र सम्बन्धों में भी दूरी दिखाई देती है, फिर भी हम अपने को रामभक्त कहते हैं। राम ने आसुरी वृत्तियों को समाप्त किया था क्योंकि उनके रहते सत्पुरुष सुरक्षित नहीं थे। सम्प्रति, संस्कार और संस्कृति को नष्ट करने वालों की कमी नहीं है। राष्ट्रद्रोही लोग शत्रुदेश का समर्थन करने से भी बाज नहीं आते हैं। ऐसे में राम के आदर्श चरित्र से शिक्षा लेना अत्यावश्यक हो जाता है। केवल माथा टेकना राम की भक्ति नहीं हो सकती। रावण भी यज्ञ करता था, वेदों का ज्ञाता था, किंतु उसका वह ज्ञान आसुरी प्रवृत्ति में लिपटा हुआ था। जीवन में आदर्शों का पालन करने से जीवन ऊँचा उठता है। ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, स्वार्थ, बैर, संकीर्णता, क्षुद्रता, धोखा, लघुता से जीवन का आनन्द समाप्त हो जाता है। **यह एक चिन्तन का विषय है कि हम अपने अन्दर राम के गुणों को धारण कर रहे हैं या रावण के?**

आज रावणीय विचारों का अधिक प्रचार-प्रसार है। इसी कारण सत्य बातें गले के नीचे नहीं उतरतीं। मांसाहार का सेवन बढ़ता जा रहा है। शराब की दुकानें गली-गली मिल जाएँगी। पर्व-त्योहारों में अनेकश: विकार आ चुके हैं, सब स्वरूप से बिगड़ चुके हैं। मनुष्य ने सत्यासत्य, करणीय-अकरणीय, धर्म-अधर्म का चिन्तन छोड़ दिया है। इसी कारण वेद का मार्ग कठिन लगने लगा है। धर्मग्रन्थों में मिलावट इतनी हो गई है कि मिलावटी चीजों को सत्य मानकर उन पर विवाद किया जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया था। जब तक देश-समाज वेदमार्ग पर नहीं आएगा, तब तक समस्याओं का अम्बार लगा रहेगा। इस विज्ञान के युग में भी विज्ञान विपरीत, असत्य आधारित पाखण्डों की बाढ़ आई हुई है। ज्योतिष के नाम पर अन्धविश्वासों ने मनुष्य के मस्तिष्क को ऐसा भयभीत कर रखा है कि बिना मुहूर्त के कोई शुभ कार्य प्रारम्भ ही नहीं करता। वह शुभ कार्य भी बिना समय के असमय सम्पादित किया जाता है क्योंकि वह फलित ज्योतिष का अन्धविश्वास है। ग्रह-नक्षत्रों को चेतन मानकर उनकी पूजा-अर्चना की जाती है। यह सब क्या है? अवैदिक विचार ही तो है। कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में सत्य और असत्य का युद्ध ही तो है।

अज्ञानता के कारण अधर्म कार्य भी धर्म मानकर किया जाता है। धर्म के नाम पर पशुवध कहाँ तक उचित है? पर सब हो रहा है। धार्मिक समारोह के नाम पर शराब का सेवन युवा पीढ़ी को नष्ट करना है। ऐसे ही अनेक कृत्य किए जाते हैं। इस प्रकार देखें तो राम-रावण का युद्ध चल ही रहा है। इस युद्ध में सबसे अधिक क्षति पर्यावरण की हुई है। उसका परिणाम भी विश्व के सामने है। सम्बन्धों में कटुता और दूरी आई है। राजनीति के क्षेत्र में तो बहुत ह्रास आया है। स्वार्थी तत्व कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। उसका क्या परिणाम होगा? उसकी कोई चिन्ता नहीं। अच्छा काम करने का विरोध करना मानसिक दिवालियापन का प्रतीक है। अब चिन्तन का समय है। मनुष्य अपने अन्दर आसुरीपन को ढूँढकर उसे दूर करे। संस्कारों का क्षय होने से बचाए। पर्यावरण के साथ खिलवाड़ न करें। नदियाँ और समुद्र इस धरती का हृदय हैं। हम राम के जीवन से अपने को ऊँचा उठाएँ। उनके चरित्र से शिक्षा लेकर अपने को संस्कारवान् बनाएँ, अन्यथा यह युद्ध कभी समाप्त नहीं होगा। राम का जीवन वेदानुकूल था। आज उसी की आवश्यकता है।

देश के नेता रामराज्य की बातें करते हैं। प्रजा के हित की डींगे हाँकते हैं किन्तु पदलिप्सा के सामने भविष्य को भूल जाते हैं। इतिहास को विस्मृत कर बैठते हैं। महर्षि वाल्मीकि अपने रामायण ग्रन्थ के युद्धकाण्ड के ७४वें सर्ग के २७वें श्लोक में वर्णन करते हैं-

सर्वं मुदितमेवासीत्सर्वो धर्मपरोऽभवत्।
राममेवानुपश्यन्तो नान्यहिंसन्परस्परम्।।

अर्थात् - ''रामराज्य में सब अपने-अपने वर्णानुसार धर्मकृत्यों में तत्पर रहते थे। अत: सब लोग सदा सुप्रसन्न रहते थे। राम दु:खी होंगे इस विचार से प्रजाजन परस्पर एक-दूसरे को दु:ख नहीं देते थे।''

इसी सर्ग के ३१वें श्लोक में वर्णन करते हैं-

आसन् प्रजा धर्मरता रामे शासति नानृताः।
सर्वे लक्षणसम्पन्नाः सर्वे धर्मपरायणाः।।

अर्थात्- ''श्रीराम के राज्य में सारी प्रजा सत्यपरायण थी। झूठ से सदा दूर रहती थी। सब लोग शुभ लक्षणों से युक्त थे और सब लोग धर्मपरायण होते थे।''

आदर्श राजा और आदर्श प्रजा का चरित्र द्रष्टव्य है। प्रजा यह सोचकर कोई अहितकर कार्य नहीं करती थी कि उससे उनके न्यायप्रिय राजा दु:खी होंगे। उसके मन में राम के प्रति कितनी निष्ठा थी। सारी ही प्रजा धर्मपरायण थी। उसके अन्दर शुभ लक्षण होते थे। इसके होते हुए भला वे अशुभ कार्य कैसे कर सकते थे। आज प्रजा भी उत्पाती और राजा के लिए कोई आदर्श नहीं। प्रजा जातियों में विभक्त और राजा उसे भुनाने में पूर्णत: लिप्त। उसका परिणाम क्या होगा, किसी को कोई चिन्ता नहीं। राम-रावण के युद्ध के पीछे नारी अपहरण ही कारण था, आज नारी की स्थिति सबके सामने है। न जाने कितनी दुष्कृत्य की घटनाएँ होती हैं। प्रजा में कहाँ आदर्श रहा? हर छोटी-बड़ी घटना सियासत की दृष्टि से आँकी जाती है। जातियों का रजिस्ट्रेशन, सम्मेलन, आरक्षण, सभा, गोष्ठी अपने अलग भगवान, अलग धर्म-सम्प्रदाय, मान्यताएँ ये सब विनाश की ओर ले जाने वाली भावनाएँ हैं। राम वेदमार्गी थे। आज वेद की बात कोई सुनना पसन्द नहीं करता। कल्पित मीठी कथाएँ मुक्ति का द्वार खोलती हैं या बन्धन का विचारणीय है। जब तक संसार वेदमार्ग पर नहीं चलेगा, तब तक मानव-मानव के मध्य संघर्ष भी नहीं टलेगा। धर्म-जाति के नाम पर मानव का विनाश होता रहेगा। वेद **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** का सन्देश देता है। उसकी कितनी ऊँची सोच है। वह अन्दर की दुनिया सुधारकर प्राणिमात्र का हित चाहता है। आइये, वेद के सन्देश को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयत्न करें। ■

महान् विभूति

देशभक्त लाला हरदयाल एम.ए.

लाला हरदयाल
जन्म : १४ अक्टूबर १८८४
निधन : ४ मार्च १९३९

देशराज आर्य
पूर्व प्राचार्य, रेवाड़ी (हरियाणा)
चलभाष : ९४१६३३७६०९

प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में अवश्य भारतवासियों को सफलता नहीं मिली, परन्तु उनके शौर्य और उत्साह में कमी नहीं आई। शूरवीरों और देशभक्तों ने स्वयं को नई ऊर्जा से पोषण शुरू कर दिया। ठीक इसी समयावधि में महर्षि दयानन्द ने समाज में नई जागृति उत्पन्न करके सामाजिक उत्थान एवं राष्ट्रीय एकता के लिए आर्य समाज की १८७५ में स्थापना की तथा सत्यार्थप्रकाश को रचा। आर्य समाज के प्रभाव में अनेक देशभक्तों ने राष्ट्रहित में विशेष अभियान चलाकर भारत को स्वतन्त्र कराने की भावना को जीवित रखा। १८८३ में महर्षि दयानन्द की मृत्यु से लेकर १९०० तक बड़ी-बड़ी विभूतियों ने जन्म लिया। इस अवधि में आर्य समाज के उत्थान के लिए महात्मा मुन्शीराम (श्रद्धानन्द स्वामी) जैसे समाज सुधारक, देशभक्ति से ओतप्रोत लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द, उच्च कोटि के लेखक बंकिमचन्द्र चटर्जी, मुंशी प्रेमचन्द, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, समाज सेवक ईश्वरचन्द्र विद्यासागर आदि हर क्षेत्र में विशेष सुधार और योगदान देने हेतु महान् आत्माओं ने जन्म लिया। इन जैसे अनेक महापुरुषों ने भारत को अंग्रेजों से स्वतन्त्र कराने के लिए कराने के लिए अपने-अपने जीवन को आहुत कर दिया। सभी ने अपने-अपने प्रयास में तन-मन-धन से अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान राष्ट्रहित में दिया। इन्हीं महामानवों में गिने जाने वाले देशभक्त लाला हरदयालजी भी थे जिन्होंने अपना समस्त जीवन भारत को स्वतन्त्र करवाने में अर्पण कर दिया। लाला हरदयाल के जीवन का संक्षिप्त चित्रण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। जिससे वर्तमान भावी पीढ़ी उनके जीवन संघर्ष के सन्दर्भ में जान सकें।

लाला हरदयालजी का जन्म १८८४ में दिल्ली के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। उन दिनों ईसाई मिशनरियों के ही विद्यालय-महाविद्यालय एवं शिक्षक हुआ करते थे। अत: लाला हरदयाल की शिक्षा भी इन्हीं विद्यालय-महाविद्यालय में हुई। बी.ए. करने के बाद १९०३ में वे लाहौर के शासकीय महाविद्यालय से एम.ए. करने चले गए। वहाँ उन्होंने इतिहास और साहित्य दोनों विषयों में प्रथम श्रेणी में एम.ए. किया। उनकी स्मरण शक्ति तीव्र थी। एक बार जिस बात को पढ़ लेते या सुन लेते वह उनके स्मृति पटल पर पत्थर की रेखा की भांति अमिट हो जाती थी और यह विशेषता आजीवन बनी रही। अंग्रेजी में एम.ए. करने के लिए निबन्ध लिखना होता था। उन्होंने ऐसा निबन्ध लिखा जिसे पढ़कर निरीक्षक ने टिप्पणी लिखी कि 'इतना अच्छा निबन्ध तो मैं भी नहीं लिख सकता।' ऐसी थी लाला हरदयाल की प्रतिभा।

उनकी योग्यता से प्रभावित होकर पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर ने इंग्लैण्ड में पढ़ने हेतु लालाजी की संस्तुति की तथा सरकार द्वारा आगे पढ़ने के लिए २०० पौण्ड वार्षिक छात्रवृत्ति भी दी। वे सन् १९०५ में लन्दन के ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में शिक्षा पाने हेतु इंग्लैण्ड चले गए तथा वहाँ जाकर वर्तमान इतिहास का ऑनर्स कोर्स पढ़ना प्रारम्भ किया। उन्हीं दिनों इनकी भेंट प्रसिद्ध क्रान्तिकारी महर्षि दयानन्द के शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा से हुई तथा दोनों में घनिष्ठ सम्पर्क बन गया। बाद में लालाजी श्यामजी कृष्ण वर्मा के शिष्य बन गए। वे इतिहास विषय का अध्ययन इस दृष्टि से करने लगे कि भारत को अंग्रेजों ने अपने आधिपत्य में किस प्रकार लिया। गहनता से इतिहास पढ़ने के कारण लालाजी को अंग्रेजी शासन, अंग्रेजी जीवन शैली और अंग्रेजी विचारधारा से एकदम घृणा हो गई तो आपने २०० पौण्ड वार्षिक मिलने वाली छात्रवृत्ति को ठोकर मार दी। लालाजी की योग्यता और मेधावी बुद्धि का सिक्का तो अंग्रेज अध्यापकों पर जम ही चुका था। उसी से प्रभावित होकर आपके अंग्रेज प्रिंसिपल ने आपसे कहा कि तुम पढ़ाई जारी रखो, परीक्षा दो और व्यय तुम्हें मैं अपनी तरफ से दूँगा। इसके जवाब में लालाजी ने उत्तर दिया कि 'मैं यहाँ डिग्री लेने नहीं आया अपितु ज्ञान बढ़ाने के लिए आया था क्योंकि भारत में उच्च ज्ञान प्राप्त करने के लिए साहित्य का अभाव था।

वहाँ रहते हुए इसी अवधि में इंग्लैण्ड का रंग-ढंग देखकर उनके हृदय में भारत को स्वतन्त्र देखने की इच्छा प्रबल हो उठी तथा सन् १९०७ में आप पढ़ाई छोड़ भारत वापस चले आए और यहाँ आकर अपनी जन्मभूमि दिल्ली को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। सबसे पहले आपने अंग्रेजी पहनावे कोट, पेंट, हैट, बूट को उतार फेंका तथा देशी जूता, धोती-

कुर्ता और कन्धे पर चादरा रखना अपनी वेशभूषा बना ली। अपने कमरे से मेज-कुर्सी हटा वहाँ चटाई बिछा ली तथा विदेशियों से हाथ मिलाना भी बन्द कर दिया। प्रारम्भ में अपने संगठन में उन्होंने साधु-सन्तों को जोड़ना चाहा परन्तु वे सफल नहीं हो सके। उन्होंने शिक्षित नौजवानों को अपने साथ जोड़ने हेतु विचार प्रकट करना प्रारम्भ किया। उनके त्याग, तप और देशभक्ति की भावना देखकर अनेक युवक उनके दल में मिलने लगे। यहाँ दिल्ली में काम कर लेने के बाद लालाजी लाहौर पहुँचे। वहाँ एक साल में ही इतना कार्य किया कि अंग्रेज सरकार ने उन्हें पीस डालने की तैयारी कर ली थी। लाला लाजपतराय को जब सरकार की चाल का पता चला तो उन्होंने हरदयाल को भारत छोड़ने का सुझाव दिया, वे मान गए तथा १९०८ में उन्होंने मातृभूमि को छोड़ दिया और पुनः इंग्लैण्ड चले गए। इसके बाद लाला हरदयाल अपनी मातृभूमि भारत में जीवित नहीं लौट सके।

अब तक लाला हरदयालजी अंग्रेजों का विरोध करने वाले समूह के अग्रणी मुखिया के रूप में जाने जाने लगे थे। मेधा बुद्धि, स्मरण शक्ति, कई भाषाओं का ज्ञान, त्याग की भावना, सादगी एवं भारत को स्वतन्त्र कराने की लालसा के कारण वे अग्रिम पंक्ति के क्रान्तिकारियों में गिने जाते थे। इंग्लैण्ड की सरकार को पता लग चुका था कि यहाँ रहने वाले भारतीय भी क्रान्ति की तैयारी करते हैं। उस समय भारतवासी भी महारानी विक्टोरिया की प्रजा थी। सन्देह होने पर उन्हें पकड़कर भारत भेजने लगी। दो वर्ष तक लाला हरदयाल ने इंग्लैण्ड में यहाँ-वहाँ घुमक्कड़पन में काटे, फिर वे फ्रान्स चले गए। लालाजी फ्रेन्च भाषा खूब जानते थे। अनेकों राजनीतिज्ञों के साथ उनका समागम हुआ। एक वर्ष बाद १९११ में अमेरिका के प्रसिद्ध नगर सान फ्रान्सिस्को चले गए। वहाँ हजारों की संख्या में सिक्ख हिन्दुस्तानी रहते थे। नागरिक नहीं होने के कारण सुविधाएँ तो प्राप्त न थी परन्तु ये परिश्रमशील थे इस कारण काम मिल जाता था। लाला हरदयाल पंजाबी भी जानते थे, वहाँ संगठन बनाया तथा उन्हें बताया कि यहाँ अमेरिका में तुम्हारी पूछपरख अथवा इज्जत इसीलिए कम है कि तुम्हारा देश पराधीन है। यदि तुम्हारा भारत देश भी स्वतन्त्र हो जाएगा तो तुम्हारी भी पूछ फ्रान्स, इटली और जर्मनी जैसी हो जाएगी। उन्हें यह बात अच्छी लगी और उन्होंने लाला हरदयाल को अपना नेता बनने के लिए कहा। लालाजी ने उनसे शराब व नशा छोड़ने की शर्त रखी तो उन्होंने शपथ ली तथा लालाजी उनके नेता बन गए।

बड़ा संगठन बन जाने पर उन्होंने एक मकान लिया और उसमें मुद्रण घर लगाया तथा गदर नामक समाचार-पत्र उर्दू, पंजाबी और अंग्रेजी में निकालने लगे। गदर की प्रतियाँ विदेशों में स्थित भारतीयों तथा भारत में भी आती थी। गदर पत्र में खुले शब्दों में अंग्रेजों का विरोध करने तथा अंग्रेजों को भारत से मार भगाने की बातें लिखी जाती थी। गदर समाचार पत्र का कार्यालय और इनका मकान ५, ब्रूड स्ट्रीट में खाड़ी के पास एक सुन्दर पहाड़ी पर बना हुआ था। सिख लोग खूब दान देते थे, मुद्रण कार्य और समाचार पत्र पर अधिक व्यय नहीं होता था तथा पैसे की कमी न थी। परन्तु लाला हरदयाल भरण-पोषण मात्र लेते थे जबकि उनसे लेखा-जोखा लेने वाला कोई नहीं था। कभी-कभी चने खाकर भी रह जाते थे तथा वेशभूषा भी वही भारतीय धोती-कुर्ता थी। कई भाषाओं का ज्ञान, भाषण देने और पढ़ाने की विशेष कला के चलते वे लिलैण्ड स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में अपना जीवन यापन करने हेतु दर्शनशास्त्र पढ़ाने चले जाते थे। एक दिन प्राचार्य ने आपसे कहा कि आप प्रोफेसरों जैसे कपड़े पहना करें तो आपने कहा, इस वेश में यदि मेरे पढ़ाने में कोई कमी रहती हो तो कहिए। इसके बाद उन्हें नहीं टोका गया। आप अनेकों बैठक वार्ताओं में भाषण देते थे। एक भाषण में आपने प्रभावी ढंग से यह सिद्ध किया कि मानव ने आदि सृष्टि में सबसे पहला अक्षर 'ओं' उच्चारण किया था। लोग इनकी विद्वता से प्रभावित थे जो सम्पर्क में आया प्रभावित हुआ। उस समय के सुविख्यात अंग्रेज उपन्यासकार मिल जैक भी आपके मित्र बन गए थे। अमेरिकन लोग इनसे इतने प्रभावित थे कि ब्रिटिश सरकार के दबाव के कारण अमेरिका की सरकार ने इनको अभिरक्षा में ले तो लिया, परन्तु वहाँ के लोगों ने तुरन्त जमानत पर मुक्त करा दिया तथा अत्यधिक विरोध प्रदर्शन किया। यद्यपि ५ वर्ष के निवासी न होने के कारण लालाजी वहाँ के नागरिक भी नहीं बन पाए थे। लाला हरदयाल अमेरिका छोड़ स्वीडन होते हुए जर्मनी चले गए। अनेक भारतीय अमेरिका से गदर में भाग लेने भारत चले आए थे। लालाजी ने जर्मनी से शस्त्र भिजवाने का संकल्प किया। यहाँ से टर्की गए तथा काफी समय वहाँ रहे। जर्मनी और टर्की में चार वर्ष लालाजी ने बिताए, परन्तु जो वे चाहते थे वह सहयोग उन्हें नहीं मिला। उन्होंने एक पुस्तक भी लिखी जिसका नाम था **'जर्मनी और टर्की में मेरे चव्वालिस मास'**। फरवरी १९१६ से नवम्बर १९१७ तक वे जर्मनी की हिरासत में भी रहे।

प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त होने के बाद वे स्टाकहोम में व्याख्यान देकर अपना भरण-पोषण करने लगे। लालाजी ने भारत में अपने मित्र को अपने भरण-पोषण की बात लिखी तथा यह बताया कि वे कुछ लिखना चाहते हैं जो धनाभाव से सम्भव नहीं है। **'प्रताप'** कानपुर के यशस्वी सम्पादक श्री गणेशशंकर जी विद्यार्थी ने उन्हें ३० पौण्ड भेजे जिससे लाला हरदयाल ने **'संसार के महापुरुष'** नाम की लेखमाला आरम्भ की। १९३४ में उन्होंने **'निजी उन्नति के संकेत'** तथा १९३८ में **'बारह धर्म और आधुनिक जीवन'** नाम की पुस्तकें लिखी। अब वे इंग्लैण्ड में आ बसे थे तथा भारत लौटने का सुयोग उनको प्राप्त हो चुका था। परन्तु भाग्य की विडम्बना रही कि उनका देहान्त हो गया। वे ३० वर्ष विदेशों में भारत की स्वतन्त्रता के लिए भटकने वाले एकमात्र नर-पुंगव थे। वे स्वतन्त्र जन्मभूमि के दर्शनों से भी वंचित रहे। केवल और केवल मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने की भावना को लेकर लाला हरदयाल ने अपना ५४ वर्ष का जीवन मातृभूमि पर न्यौछावर कर दिया। लाला हरदयाल के जीवन बलिदान यशोगाथा को भुलाया नहीं जा सकता। ■

लौह पुरुष ''सरदार वल्लभभाई पटेल''

डोंगरलाल पुरुषार्थी
प्रधान आर्य समाज, कसरावद,
जनपद : खरगोन (म.प्र.)
चलभाष : ८९५१०-५१०११

न तो सजता कभी, न वो कभी संवरता था।
विपत्तियाँ हों कैसी ना कभी भी डरता था।।
चुनौती दे के जीतने का दम्भ भरता था।
सदा विरुद्ध ही धारा के बहा करता था।।
आग थी ऐसी कि लोहा भी पिघल जाए।
विचारधारा ने मोड़ी विरोधी धाराएँ।।
तेरे विचारों की सच्चाई की अभिव्यक्ति को।
मातृभूमि के प्रति सच्ची देशभक्ति को।।

खतरों से खेलना उनको प्रिय लगता था, मेरे साथ कोई खिलवाड़ नहीं कर सकता। वे ज्वालामुखी थे, उनके हृदय में सदा एक आग जला करती थी। ऐसी आग जो एक ही बार में सहस्त्रों को भस्म करने की क्षमता रखती हो। उसी आग से उनका रक्त हमेशा उबला करता था। भुजाएँ फड़कती रहती थीं तथा वाणी सदा आग उलगने के लिए तैयार रहती थी। इतिहास उन्हें आधुनिक भारत का निर्माता और भारत का एकीकरण करने वाले के रूप में स्मरण करेगा। स्वतन्त्रता युद्ध के वे महान् सेनापति थे। हैदराबाद का निजाम अपने अक्खड़पन के लिए जाना जाता था इसलिए सेना की कुछ टुकड़ियों को हैदराबाद भेजा तथा थोड़े विरोध व प्रतिरोध के बाद अकड़ू निजाम ने आत्मसमर्पण कर दिया व उसे भारतीय संविधान को स्वीकार करना पड़ा। कश्मीर की समस्या नेहरू के जिम्मे थी, जिसे नेहरू ने राष्ट्रसंघ में ले जाकर उलझा दिया। कश्मीर को भारत में विलय कराने तथा बचाने में सरदार पटेल और वहाँ के नेता मेहरचन्द्र महाजन का ही विशेष योगदान रहा है। अगर उस समय सरदार पटेल भारत के गृहमन्त्री नहीं होते तो इतनी शीघ्र सैनिक कार्यवाही नहीं हो पाती तथा कश्मीर को बचाना कठिन और असम्भव होता। ऐसे जीवट, साहसी और सूझ-बूझ वाले व्यक्तित्व को लौहपुरुष और सरदार कहना न्यायोचित ही है। वे सरदार (सिख) नहीं थे किन्तु असरदार थे। ऐसे ही एक देशभक्त ने ३१ अक्टूबर १८७५ को भारत भूमि पर जन्म लिया। जिसका नाम वल्लभभाई रखा गया। इनके पिता का नाम झवेरभाई पटेल था, जो गुजरात के बोरसद तालुका के एक कमरसद गाँव के निवासी थे। माता का नाम लाड़कीबाई था। वल्लभभाई के बड़े भाई का नाम विठ्ठलभाई था। झवेरभाई एक साधारण किसान थे, बालक वल्लभभाई अपने पिता के काम में हाथ बँटाता था। एक दिन पिताजी हल चला रहे थे, इनके पीछे बालक वल्लभ अपना काम करते हुए पहाड़े भी याद कर रहा था। पहाड़े याद करने में बालक इतना मग्न था कि उसके पैर में काँटा चुभ गया, उसे पता ही नहीं चला। अचानक पिता की दृष्टि बालक के पैर पर पड़ी, पैर से रक्त निकलता देखकर वे दंग रह गए। पुत्र के पैर से काँटा निकालने के बाद किसी वृक्ष की पत्तियाँ रगड़ दी, जिससे रक्त बहना बन्द हो गया।

सरदार पटेल
जन्म : ३१ अक्टूबर
पुण्यतिथि : १५ सितम्बर

झवेरभाई बड़े देशभक्त थे जब १८५७ में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम चल रहा था तो कृषि कार्य छोड़ रानी लक्ष्मीबाई के राज्य झाँसी के युद्ध में भाग लेने चले गए तथा युद्ध में वीरता दिखाई। अन्त में पकड़े गए और जेल में डाल दिये गये। विठ्ठलभाई की प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में ही हुई। विद्यालय जाते हुए एक बार मार्ग में एक बड़ा पत्थर पड़ा था, जिससे प्राय: पथिकों को ठोकर लगती रहती थी। बालक ने उस पत्थर को वहाँ से हटाने की ठान ली। मित्रों ने कहा- 'पत्थर पर जोर क्या आजमाना? तुम देखकर और बचकर निकल जाओ।' वल्लभ ने कहा- 'मित्रों! मैं तो बचकर निकल जाऊँगा किन्तु अन्धेरे में निकलने वाले यात्रियों को कौन बचाएगा?' ये थी बालक में सर्वहिताय की भावनाएँ। जिसके कारण वल्लभभाई ने पाँच से अधिक रियासतों को उखाड़ फेंका, जो भारत की प्रगति की पथ पर बाधा बन रही थी। इनके बचपन की एक और जीवट व निडरता की घटना इनकी बगल में एक बड़ा-सा फोड़ा निकल आया था। यह विषैला फोड़ा ठीक होने का नाम ही नहीं ले रहा था। औषधि का प्रभाव नहीं होने की स्थिति में वैद्य ने कहा- लोहे की सलाख गरम करके फोड़े को फोड़े तो सारा पीप निकल जाएगा। नाई गरम सलाख भोंकने में सकुचा गया, बालक वल्लभ ने तुरन्त उसके हाथ से सलाख छीन कर स्वयं ने ही फोड़े को फोड़ दिया। यह थी बालक की जीवटता।

विद्यार्थी-जीवन में वल्लभभाई छात्रों के नेता थे। नडियाद के जिस विद्यालय में वल्लभभाई पढ़ते थे वहीं के एक शिक्षक पुस्तकों का व्यापार भी करते थे और छात्रों को विवश करते थे कि पुस्तकें उन्हीं की दुकान से खरीदें। वल्लभभाई को यह बात अच्छी नहीं लगी। अस्तु इन्होंने छात्रों को उकसाया कि कोई छात्र इनकी दुकान से पुस्तकें न खरीदें। वल्लभभाई के नेतृत्व में छात्रों ने हड़ताल कर दी और एक सप्ताह विद्यालय बन्द रहा। अन्त में शिक्षक को झुकना

पड़ा और छात्रों की हड़ताल खत्म हुई।

इसी तरह वल्लभभाई जब १०वीं कक्षा में थे, पहले इन्होंने संस्कृत ले रखी थी, बाद में संस्कृत कठिन पड़ने की स्थिति में गुजराती ले ली। गुजराती के शिक्षक स्वयं संस्कृत प्रेमी थे। जो छात्र संस्कृत नहीं पढ़ते थे, वे सदा उनसे अप्रसन्न रहते थे। वल्लभभाई जब पहली बार उनकी कक्षा में पहुँचे, तो शिक्षक ने उनसे व्यंग्यतापूर्वक कहा- 'पधारिए महापुरुष' उन्हें क्या पता था कि उनकी वाणी सत्य होकर रहेगी। शिक्षक ने फिर कहा- 'संस्कृत छोड़कर गुजराती लेना तुम जैसे होनहार लड़के को शोभा नहीं देता।' वल्लभभाई ने प्रश्न किया- 'पर मास्टर साहब! अगर हम सबने संस्कृत ही ले ली होती, तो आप क्या करते?' शिक्षक ने कहा- 'शैतान कहीं का' बेंच पर खड़े हो जाओ, प्रश्न करते हो।'

अब गुरु-शिष्य में खुलकर वार्तालाप होने लगा। मास्टर जी रोज वल्लभभाई को गृह कार्य में पहाड़ा लिख लाने को कहते थे। दसवीं कक्षा के छात्र के लिए यह अपमानजनक कार्य था। वल्लभभाई ने अपमान का बदला लेने की ठान ली। पहाड़े को गुजराती में 'पाड़े' भी कहते हैं। जो भैंस के बच्चे को भी कहा जाता है। एक दिन वल्लभभाई से मास्टरजी ने पूछा- अरे तुम 'पाड़े' लाए। वल्लभभाई ने अपने स्वाभाविक विनोद के साथ उत्तर दिया- 'मास्टर सा.! पाड़े तो लाया था, पर विद्यालय के दरवाजे पर उनमें से दो भड़क पड़े, इनके भड़कते ही सारे पाड़े भाग गए। मास्टर साहब क्रोध से लाल हो गए और इनकी रिपोर्ट हेडमास्टर साहब के पास भेजी। हेडमास्टर ने वल्लभभाई को बुलाया और पूरा हाल पूछा। तत्पश्चात बिना कोई दण्ड दिए, इन्हें यह कहकर छोड़ दिया- 'ऐसा लड़का मैंने अभी तक नहीं देखा। वल्लभभाई ने २२ वर्ष की अवस्था में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् १९०० में इन्हें मुख्तार की नौकरी मिल गई। सरदार पटेल बैरिस्टर बनना चाहते थे, अस्तु कानून की पढ़ाई के लिए इंग्लैण्ड चले गए। इन्होंने सन् १९१३ में बैरिस्टर की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। जब वे भारत आए तो कुछ ही समय बाद इनकी गिनती अच्छे बैरिस्टरों में होने लगी। ये अपने ज्ञान एवं तर्कों के बल पर न्यायाधीशों को उचित निर्णय देने को बाध्य कर देते थे।

सन् १९०९ में सरदार पटेल की निर्ममता एवं कर्तव्यनिष्ठा का अनुपम उदाहरण मिला। आप प्रकरण में तर्क प्रस्तुत कर रहे थे, आपको एक तार मिला आपने पढ़ा तथा अपने तर्क जारी रखे। तर्क समाप्त होने के बाद ही आपने कोर्ट से बिदाई ली। तार में समाचार था- 'आपकी पत्नी का देहान्त हो गया।' सरदार पटेल की तीस वर्ष की अवस्था में पत्नी का साथ छूट गया था। इनकी एक पुत्री और एक पुत्र था।

गोधरा में राजनीति कार्यों के लिए बनाई गई उपसमिति में वल्लभभाई को मन्त्री बनाया गया। सर्वप्रथम पहला काम वल्लभभाई ने गुजरात में बेगार प्रथा बन्द करवाने का किया। पहले कमिश्नर को पत्र लिखा गया और चेतावनी दी गई थी कि सात दिन के अन्दर बेगार बन्द न हुई तो जनता को परामर्श के लिए बुलाया। बेगार प्रथा बन्द की गई। सार्वजनिक जीवन में वल्लभभाई की यह पहली विजय थी। सन् १९१७ में वर्षा ऋतु में फसलें खराब हो गई। खेड़ा जिले में अकाल जैसी स्थिति हो गई। किसानों में इतनी शक्ति नहीं थी कि लगान दे सके। किसानों ने सरकार से लगान माफी के लिए प्रार्थना की, किन्तु किसानों की पुकार पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। सरकार चाहती थी कि किसानों से जबरदस्ती लगान वसूल की जाए। किसान दुविधा में थे कि ऐसे समय लगान कहाँ से दे। पशुओं को चारा प्राप्त नहीं हो रहा था। निर्धनों की भूखे मरने की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। इस समय सरदार पटेल ने खेड़ा में लगान न देने का आन्दोलन आरम्भ कर दिया। सरदार पटेल ने सरकार और जमींदारों के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया। साथ ही विदेशी वस्त्र उतार कर स्वदेशी वस्त्र धारण कर लिए और गाँव-गाँव घूमना शुरू कर दिया। सरदार पटेल ने किसानों में नवजागरण किया। थोड़े दिनों में जिले के सारे किसान सरकार को लगान न देने के लिए तैयार हो गए। आन्दोलन ने जोर पकड़ा, सरकार की आँखें भी खुलीं। आन्दोलन को जोर पकड़ता देख सरकार ने किसानों की माँग स्वीकार कर ली और उनका लगान माफ कर दिया गया। ये सरदार पटेल की दूसरी विजय थी।

सन् १९२२ में एक नई समस्या सामने आई। लगान की अधिक दर दे पाना तो कठिन था ही, साथ ही डाकुओं के हमले भी बढ़ने लगे। वल्लभभाई ने गाँव-गाँव में स्वयंसेवकों के दल बनाए, जिससे डाके पड़ने बन्द हो गए। उन्हीं दिनों गुजरात में बाढ़ आ गई। वल्लभभाई से किसानों की दुर्दशा देखी नहीं गई। उन्होंने बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए सरकार से एक करोड़ पचास लाख रुपए स्वीकृत करवाए। बारडोली आन्दोलन को भी उनके राजनीतिक जीवन की उपलब्धि माना जाता है। सरकार ने किसानों पर ३० प्रतिशत लगान बढ़ा दिया था। किसानों ने वल्लभभाई के नेतृत्व में सरकार का डटकर विरोध किया। लगान की एक पाई भी जमा नहीं करवाई। सरकार ने जीभर कर अत्याचार किए। वल्लभभाई ने किसानों को इन अत्याचारों के विरुद्ध संगठित किया और पूरे देश में किसानों को प्रेरणा और शक्ति दी। अन्तत: सरकार को झुकना पड़ा। इसी सत्याग्रह की सफलता से वल्लभभाई को **'सरदार'** की उपाधि से विभूषित किया गया। इनके नाम के पहले सरदार लिखा जाने लगा।

सरदार पटेल जो कहते थे, वही करने में विश्वास रखते थे। काठियावाड़ के राजनीतिक परिषद् में अस्पृश्यता निवारण का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया, किन्तु आयोजकों ने हरिजनों के बैठने की अलग व्यवस्था की, लेकिन वल्लभभाई को यह व्यवस्था नागवार अनुभूत हुई अस्तु वे स्वयं हरिजनों के बीच जाकर बैठ गए तो आयोजकों को अपनी भूल की अनुभूति हो गई। अपने कर्तव्य-पालन का सदा पालन करने वाले लौहपुरुष सरदार पटेल का १५ सितम्बर १९५० को निधन हो गया। मरणोपरान्त सन् १९९१ को **'भारत रत्न'** से अलंकृत किया गया। सरदार पटेल की बैंक पासबुक में केवल २०७ रुपए जमा थे और किराये के मकान में आप रहते थे। यह था उनका वितैषणा से विरक्ति का अनुपम उदाहरण। आपको शत-शत नमन है।

सम्मान न पाता हर कोई व्यक्ति,
सम्मान त्याग से सदा कमाया जाता है।
अपनी सर्वस्व जनता के लिए मिटाता है जो,
सर, आँखों पर उसे ही बिठाया जाता है।।

■

महर्षि दयानन्द के जीवन की अन्तिम घटनाएँ

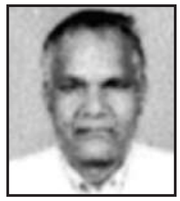

खुशहालचन्द्र आर्य

द्वारा- गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गान्धी मार्ग, कोलकाता
चलभाष : ९८३०१३५७९४

स्वामीजी जगन्नाथ द्वारा दिया दूध पीकर सो गए तो रात्रि में ही भयंकर उदरशूल से पीड़ित हो उठे। वे जागे और उन्होंने तीन बार वमन किया, कुल्ले कर-कर के देव दयानन्द ने सोने का प्रयास किया, किन्तु वेदना फलस्वरूप उनकी आँख न लग पाई। उदर शूल कम न हुआ व हृदय में घबराहट भी बढ़ती गई। कण्ठ सूखने लगा और दस्त का क्रम भी आरम्भ हो गया। सर्वप्रथम डॉ. सूर्यमल ने उन्हें औषधि दी और फिर सहायक सर्जन ने किन्तु दस्त की संख्या बढ़ती ही गई और हृदय में घबराहट भी। कहा जाता है कि महर्षि जी इच्छा के विपरीत सहायक सर्जन ने उपचार आरम्भ किया।

बताया जाता है कि यह सहायक सर्जन डॉ. अली मरदान, नन्हीं जान का चाहने वाला था और चाटुकार भी। महर्षि की दुर्बलता बढ़ते-बढ़ते स्थिति अनियन्त्रित हो गई तो स्वामी जी को आबू पर्वत पर भेजने की योजना बनी। २१ अक्टूबर को स्वामीजी को पालकी द्वारा आबू पर्वत पर पहुँचाया गया।

मार्ग में ही अस्पताल से चिकित्सक डॉ. लक्ष्मणदास स्थानान्तरित होकर आबू से अजमेर जा रहे थे कि उन्होंने पालकी में लेटे एक काषाय वस्त्रधारी संन्यासी को देखा, पूछताछ करने पर जब उन्हें विदित हुआ कि यह तो सुप्रसिद्ध संन्यासी देव दयानन्द हैं तो आपने उनकी नाड़ी देखी और उन्हें मोनिया की थोड़ी-थोड़ी मात्रा तीन बार दी। इस औषधि के फलस्वरूप अचेत महर्षि दयानन्द की चेतना लौटी और उन्होंने लेटे-लेटे नेत्र खोले और बोले 'मुझे किसी ने अमृत दिया है।' डॉ. लक्ष्मणदास ने भी निश्चय कर लिया कि चाहे नौकरी रहे या जाए, वे स्वामीजी की चिकित्सा करेंगे और वे भी महाराज के साथ ही आबू पर्वत लौट आए। उनकी चिकित्सा से स्वामीजी को पर्याप्त लाभ भी हुआ। उनका उदरशूल शान्त हो गया और दस्त बन्द हो गए। २४ अक्टूबर को निद्रा भी आ गई। पर राजस्थान का मुख्य चिकित्सा अधिकारी कर्नल स्पेन्सर की आज्ञानुसार डॉ. लक्ष्मणदास को अजमेर जाना था किन्तु वे स्वामीजी की सेवा में लगे रहना चाहते थे। उन्होंने दो मास के अवकाश की प्रार्थना भी की, परन्तु कर्नल ने उसे स्वीकार न किया। इस पर उन्होंने सेवा से त्यागपत्र लिख दिया, किन्तु देव दयानन्द ने त्यागपत्र फाड़कर डॉ. लक्ष्मणदास को अजमेर जाने का आदेश दिया। (नोट : यह है महर्षि दयानन्द की महान् उदारता का उदाहरण तथा परहित की चिन्ता)

अन्ततः डॉ. लक्ष्मणदास ने पुनः कर्नल को त्यागपत्र भेजा, किन्तु उसे अस्वीकार करते हुए स्पेन्सर ने कहा कि तुम चिन्ता न करो, मैं स्वयं तुम्हारे गुरु (महर्षि दयानन्द) की चिकित्सा करूँगा। कर्नल की चिकित्सा स्वामीजी के अनुकूल नहीं आई और रोग पुनः उग्र हो गया। यद्यपि महर्षि शरीर की इस विषम स्थिति में भक्तजनों को कष्ट नहीं देना चाहते थे, परन्तु भूपालसिंह व श्री सेवकराम और कर्षनदास आदि के अनुरोध पर २६ अक्टूबर को स्वामीजी ने आबू पर्वत से प्रस्थान किया और अगले दिन चार बजे ब्राह्म मुहूर्त में अजमेर पहुँचे, वहाँ आगरा दरवाजे के समीप स्थित भिनाई कोठी में उनके विश्राम की व्यवस्था की गई।

डॉ. लक्ष्मणदास ने पुनः चिकित्सा आरम्भ की परन्तु स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव दिखते ही रहे। अन्ततः देव दयानन्द को आभास हो गया कि अब इस देह के त्याग की घड़ी सन्निकट है। पूरे शरीर में विष का प्रभाव व्याप्त हो चुका था। छाले भी फैलने लगे थे। दीपावली से दो दिन पूर्व पं. गुरुदत्त विद्यार्थी एम.ए. और लाला जीवनदास भी महाराज के दर्शनार्थ लाहौर से यहाँ पहुँच गए और उदयपुर से सोहनलाल विष्णुलाल पांड्या भी उनका कुशल-क्षेम जानने के लिए आ गए।

कार्तिक अमावस्या (३० अक्टूबर १८८३) को डॉ. लक्ष्मणदास ने महाराज के जीवन की सब आशाएँ छोड़ दी। अजमेर के सिविल सर्जन डॉ. न्यूमैन बुला लिए गए। उन्होंने स्वामीजी की अवस्था देखकर कहा- **'ये बड़े साहसी तथा सहनशील हैं। इनकी नस-नस और रोम-रोम में रोग का कीड़ा घुसकर कुलबुलाहट कर रहा है, परन्तु ये प्रसन्नचित्त है। ऐसे रोग में भी जीते रहना इन्हीं का काम है।'**

जब डॉ. लक्ष्मणदास ने उन्हें बताया कि ये महापुरुष स्वामी दयानन्द है तो उन्हें अत्यधिक शोक हुआ। एक अन्य मुस्लिम वैद्य पीरजी ने भी स्वामीजी की सहनशीलता देखकर दाँतों तले अंगुली दबा ली।

यद्यपि आज के दिन हालत अधिक गंभीर थी, किन्तु स्वामीजी स्वयं को कुछ अच्छा अनुभव कर रहे थे। ११ बजे चार जनों की सहायता से उठकर शौच से निवृत्त हुए। उस समय श्वांस की गति शीघ्र थी। भक्तजनों के प्रश्न करने पर आप बोले 'एक मास के उपरान्त आज का दिन आराम का है।' जब लाला जीवनदास ने पूछा 'आप कहाँ हैं?' तो महाराज बोले 'ईश्वरेच्छा में।'

अपराह्न दो सौ रुपए और दो दुशाले मंगवाकर कहा- ये आत्मानन्द और भीमसेन को दे दो। सुदूर प्रदेशों से आए सभी ऋषिभक्त शोक विह्वल थे। वे श्रद्धा भरी भावना सहित महाराज के समक्ष खड़े हो गए। स्वामीजी ने सभी पर कृपादृष्टि डाली। मानों मौन उपदेश दे रहे हों कि **'भद्र पुरुषो! धैर्य और साहस**

रखो। अधीर न होओ। उदास होने से क्या लाभ? यह शरीर तो नाशवान है।'

महाराज के शान्त मुखमण्डल पर किसी शोक या खेद का चिह्न नहीं। न कोई आह न कराह। उसी समय अलीगढ़ से स्वामीजी के भक्त शिष्य श्री सुन्दरलाल भी आ गए।

५ बजे के पश्चात् स्वामीजी ने समागत भक्तजनों को आदेश दिया कि वे उनके पीछे खड़े हो जाएँ और कहा कि 'सभी द्वार और खिड़कियाँ खोल दो।' फिर पूछा 'आज कौनसा मास- पक्ष और दिवस है?'

एक भक्त ने उत्तर दिया 'भगवन् आज कार्तिक मास, अमावस्या और मंगलवार है।' यह सुनकर स्वामीजी ने ऊपर दृष्टि डाली। फिर चतुर्दिक् ज्योतिपूर्ण दृष्टि से निहारा और वेदमन्त्रों का पाठ किया। तदुपरान्त संस्कृत में ईश्वर स्तुति की। प्रभु गुणगान में रत होकर गायत्री मन्त्र का उच्चारण किया और शान्त समाधिस्थ हो गए। पुनः नेत्र खोले और ओ३म् का उच्चारण कर बोले 'हे दयामय, सर्वशक्तिमान ईश्वर! तेरी यही इच्छा है, तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो। अद्‌भुत है तेरी लीला।' इन शब्दों का उच्चारण कर स्वयं करवट ली। एक बार श्वास को रोका और पुनः सदैव के लिए बाहर निकाल दिया। दीपावली का दिन, सायं ६ बजे थे। देव दयानन्द इहलीला समाप्त कर ज्योतिर्मय की शरण में समर्पित हो गए। भक्तजन निहारते रह गए। पाश्चात्य विज्ञान के विद्यार्थी, ईश्वर के प्रति कुछ कम विश्वास रखने वाले गुरुदत्त विद्यार्थी ने भी महायोगी की यह लीला देखी। गुरुदत के मन का अन्धकार नष्ट हो गया। दिव्य ज्योति का अन्तःप्रवेश हो गया और वे आज से पूर्ण आस्तिक हो गए।

भक्तजनों के नेत्र अश्रुपूर्ण थे। इस विदाई के दृश्य से उनके हृदयों में एक अद्‌भुत ज्योति का प्रवेश हो रहा था। उनके लिए यह दीपमालिका का अमिट प्रकाश था।

देव दयानन्द धरती के घरौंदे को त्याग कर प्रभु की अनन्त सत्ता में विलीन हो गए थे। पूर्ण प्रभा सहित भारत के गगन पर चमका यह महान् नक्षत्र भावी पीढ़ियों का पथ आलोकित कर अपनी कीर्ति कौमुदी से इस जग में एक अमर सुगन्ध और एक शाश्वत ज्ञान का प्रकाश बिखेर गया था। अगले दिन इस योगिराज के शरीर की अन्त्येष्टि क्रिया की तैयारी हुई। शरीर पर चन्दन का लेप किया गया। उनकी शवयात्रा के साथ सहस्रोंजन चल रहे थे। सभी प्रदेशों के तथा सभी वर्गों के।

अर्थी बहुत बड़ी थी। उनके शव को उठाने के लिए १६ व्यक्ति लगे थे। श्मशान भूमि में शव दाह सम्पन्न हुआ। रामानन्द और आत्मानन्द ने यथाविधि अग्न्याधान किया। अग्नि स्पर्श होते ही घृत सिंचित (चित्ता ज्वालामालाओं से आवृत्त हो गई। उस दाह कुंड में चार मन घी, पाँच सेर कपूर, एक सेर केसर और दो तोले कस्तूरी डाली गई। चारों ओर से घृत की पुष्कल आहुतियों से हुत श्री महाराज का शव भक्तों के सजल नेत्रों के समक्ष अपने कारणों में लीन हो गया। स्वामीजी की अस्थियों का चयन करके उन्हें शाहपुराधीश के दिये उद्यान में गाड़ दिया गया। यह उद्यान आनासागर के किनारे पुष्कर जाने वाली सड़क पर है।

यह जानकर आपको प्रसन्नता होगी कि पूज्य बहन राकेश रानी ने अपनी लोकप्रिय पत्रिका जन-ज्ञान के महीना अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर वर्ष २०१८ तथा अंक महीना जनवरी वर्ष २०१९ यानि चार पत्रिकाओं में महर्षि देव दयानन्द की सम्पूर्ण जीवनी बहुत ही सुन्दर ढंग से अलंकृत भाषा में प्रकाशित की है, जिसको पढ़ने में अति आनन्द तो आता ही है, साथ ही पढ़ने वाले को अपने जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए अच्छी शिक्षा व सद्प्रेरणा भी मिलती है। इसी उद्देश्य से मैंने जन-ज्ञान के जनवरी २०१९ वाले अंक में महर्षिजी ने अपने जीवन के अन्तिम समय में किस प्रकार से अपने शरीर को त्यागा उसका वर्णन मैंने इस लेख में किया है। इस लेख को पढ़कर सुधी पाठकगण अपने ज्ञान की वृद्धि करके अपने जीवन को उपयोगी व सफल बना सकेंगे। इसी आशा के साथ बहनजी को अपना हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए इस लेख को विराम देता हूँ आपका। ■

सबसे पहले लेकर आपका नाम प्रभु

सबसे पहले लेकर आपका नाम प्रभु,
करते हैं प्रारम्भ आज का काम प्रभु।

तृष्णाओं को मन से मेरे मिटाओ प्रभु,
जो भी मिला है उसमें खुशियाँ पाऊँ प्रभु।
लोभ मोह मद काम क्रोध से बचाओ प्रभु,
दुष्कर्मों को भी दग्ध बीज कर जाओ प्रभु।
सबसे पहले लेकर...

माया के पिंजड़े का मोह मिटाओ प्रभु,
जन्मों के बन्धन से मुझे छुड़ाओ प्रभु।
तुमसे बिछड़ा, तुमसे मिलना चाहूँ प्रभु,
अपना सच्चा ज्ञान हमें करवाओ प्रभु।
सबसे पहले लेकर...

पाप पुण्य के द्वन्द्व से हमें बचाओ प्रभु,
वृत्तासुर संग्राम में विजयी बनाओ प्रभु।
शुद्ध ज्ञान पा तेरा ध्यान लगाऊँ प्रभु,
तेरा ही ज्ञान लगाए भव से पार प्रभु।
सबसे पहले लेकर...

तुमको देखूँ तुमको ही सुन पाऊँ प्रभु,
तेरे गुणों को जीवन में अपनाऊँ प्रभु।
मधुर वाणी से तेरे गुणों को गाऊँ प्रभु,
तेरे आनन्द में तरकर तर जाऊँ प्रभु।

सबसे पहले लेकर ओम का नाम रमेश,
आर्य पथिक करता है हर एक काम प्रभु।

रमेशचन्द्र भाट 'आर्य पथिक'
प्रबन्धक : ऋषि उद्यान, अजमेर
पसन्द नगर, कोटड़ा, अजमेर (राज.)
चलभाष : ९४१३३५६७२८

आर्यत्व प्राप्ति के क्रमिक सोपान

वेदप्रकाश आर्य

सागरपुर ईस्ट, नई दिल्ली–१६
चलभाष : ९३११८०१२१२

१. अण्डा–मांस–मछली, बीड़ी–सिगरेट, शराब, तम्बाकू, चरस, भाँग, गांजा आदि नशीले पदार्थ के सेवन से सर्वदा एवं सर्वथा दूर रहें।

२. ब्रह्मचर्य की शिक्षा अर्थात् वीर्य रक्षण एवं सदुपयोग अर्थात् वीर्य को शरीर में पचा पाने की जानकारी लेना परम आवश्यक है। इसके बाद ही व्यभिचार त्यागी बने रह सकते हैं।

३. व्यभिचार त्यागी होना– इस विषय में महर्षि दयानन्द ने **'आर्योद्देश्य रत्नमाला'** नामक पुस्तक में स्पष्ट लिखा है– **'जो अपनी स्त्री के बिना दूसरी स्त्री के साथ गमन करना और अपनी स्त्री को भी ऋतुकाल के बिना वीर्यदान देना तथा अपनी स्त्री के साथ भी वीर्य का अत्यन्त नाश करना और युवा अवस्था के बिना विवाह करना है। यह सब व्यभिचार कहलाता है। इसको छोड़ देने का नाम व्यभिचार त्याग है।'**

४. **'ईश्वर'** और **'धर्म'** इन दो शब्दों के सत्यार्थ को समझने के लिए आर्य समाज के सत्संग में नियमित रूप से भाग लेना।

५. वैदिक सिद्धान्तों की रूपरेखा और आर्य समाज के १० नियमों का ज्ञान (कण्ठस्थ) होना।

६. नित्य प्रात:–सायं सन्ध्या उपासना का स्वभाव बनाना।

७. अवैदिक पूजा पद्धतियों मूर्तिपूजा, अवतारवाद आदि पाखण्डों में लिप्त न रहना।

८. वेदविरुद्ध मान्यताओं को अपने ज्ञान सामर्थ्य से समझा पाना अर्थात् विचार विनिमय की भाषा सम्बन्धी योग्यता प्राप्त करना।

९. अपने घर–परिवार में दैनिक यज्ञ या साप्ताहिक यज्ञ या अमावस्या, पूर्णिमा पर पाक्षिक यज्ञ या मासिक यज्ञ इनमें से किसी एक को यथासामर्थ्य करने का व्रत धारण करना।

१०. गाय पालना। यदि किसान है तो गो–कृषि विज्ञान पर आधारित विष रहित खेती करना।

११. दैनिक यज्ञ करने का सामर्थ्य प्राप्त करना।

१२. स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से चाय, डालडा घी, ब्रेड आदि फास्ट फूड, मैदा निर्मित तले पदार्थ, तेज मसाले वाली दाल–सब्जी, सफेद चीनी, सफेद नमक, रिफाइण्ड तेल एवं बाजारू आटा एवं प्रिजर्वेटिव डाले पैकेट के खाद्य पदार्थ सब त्याज्य हैं। कोल्ड्रिंक, कोका कोला आदि भी त्याज्य हैं। रसोई में एल्यूमीनियम के बर्तनों का बहिष्कार करना चाहिये। भोजन के मध्य व तुरन्त बाद पानी कभी न पीएँ।

१३. स्वयं व बच्चों को संस्कृत भाषा का प्रारम्भिक ज्ञान करना–करवाना।

१४. अपने बच्चों को वैदिक धर्म एवं संस्कृति के रक्षण हेतु राष्ट्रभाषा हिन्दी का उच्च स्तरीय ज्ञान प्राप्त कराना।

१५. राष्ट्र में अलगाववाद को समाप्त करने हेतु मातृभाषा के साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचलन को प्रतिष्ठित करने में योगदान देना।

१६. भारत को भारतीयता के आधार पर खड़ा करने हेतु अंग्रेजियत एवं साम्प्रदायिकता का बहिष्कार करना।

१७. सम्पूर्ण विश्व में मनुष्य जाति की एकता के आधारभूत सिद्धान्तों को इस प्रकार मान्यता देना :–

एक राष्ट्र में एक धर्म, एक भाषा,एक ध्वज, एक समान कानून, एक अभिवादन हो।

एक धर्म : सत्य सनातन वैदिक धर्म

एक भाषा : संस्कृतनिष्ठ आर्य भाषा हिन्दी

एक ध्वज : ओ३म् नाम से अंकित निश्चित् आकार–प्रकार वाला।

एक समान कानून : वेद अनुकूल सर्वहितैषिता वाला हो। विशुद्ध मनुस्मृति आदि से विभूषित।

एक अभिवादन : नमस्ते।

उपर्युक्त का निज सामर्थ्य से पालन करना आर्यत्व का द्योतक है।

१८. चिकित्सा पद्धति में प्राकृतिक चिकित्सा योग प्राणायाम एवं आयुर्वेद आदि की प्रधानता को व्यवहार में लाना।

१९. वैदिक वाङ्मय का विद्वान् होना।

२०. भारतवर्ष को पुन: आर्य राष्ट्र के रूप में स्थापित करने हेतु तन–मन–धन से प्रयत्न करना। आर्यों का सहयोग करना।

२१. अलगाववाद को हटाते हुए विश्व में पुन: आर्यों का चक्रवर्ती राज्य स्थापित करने में कुछ ना कुछ योगदान यथासामर्थ्य अवश्य देना।

२२. आर्यों के संगठन की लघुतम इकाई आर्य समाज की गति की दिशा :–

विश्व में सुख–शान्ति हेतु मनुष्य समुदाय के वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, राजनीतिक और वैश्विक जीवन को वेदानुकूलता में प्रतिष्ठित करना–करवाना या करने में सहयोग देना।

उपर्युक्त सोपानों में प्रतिष्ठित होते हुए अन्तत: प्रयत्नशील रहना ही सच्चे ईश्वर–पुत्र आर्यों का आत्मिक गुण होता है।

आर्य परिवारों का संगठन ही आर्य समाज है। ■

ऋग्वेद में राष्ट्रीय भावना

प्रेमप्रकाश शास्त्री

स्नातक, गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ (उ.प्र.)
चलभाष : ९९९३०५१२१२, ९४७९१०१७६५

ऋग्वेद के अनेक विषयों के अन्तर्गत वर्ण्य उपविषय है- **ऋग्वेद में राष्ट्रीय भावना।** इसी विषय में अन्तर्गत भगवती श्रुति का आशीर्वाद प्राप्त करते हुए चिन्तन की ओर अग्रसर होते हैं। महर्षि पाणिनि के अनुसार **'राजृ दीप्तौ'** धातुपाठ भ्वादिगण (उभयतोभाष:) धातु क्र. ५६९ धातु एवं उणादि कोष के सूत्र ४/१४८ **(सर्वधातुभ्य: ष्ट्रन्)** के ष्ट्रन् प्रत्यय तथा **'व्रश्चभ्रस्जसृज-मृजयजराजभ्राजच्छशां ष:'** अष्टाध्यायी ८/२/३६ सूत्र के अनुसार 'ज्' को मूर्धन्य 'ष्' होकर **'राष्ट्र'** शब्द निष्पन्न होता है। प्रख्यात संस्कृत हिन्दी कोष के रचयिता श्रीमान् वामन शिवराम आप्टे के अनुसार राष्ट्र का अर्थ राज्य, देश और साम्राज्य है। अमरकोष के रचनाकार श्रीमान् अमरसिंहजी ने राष्ट्र दुर्ग बलानि च (द्वितीय काण्ड क्षत्रिय वर्ग) में राष्ट्र का अर्थ राष्ट्र, दुर्ग और बल किया है।

राष्ट्रे जात:, राष्ट्रे भव और राष्ट्रस्यायम् आदि अर्थों में **राष्ट्रवारपाराद् घखञौ** अष्टाध्यायी ४/२/९२ सूत्र के माध्यम से 'घ' और **'वद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम्'** अष्टाध्यायी १/१/७२ व **वृद्धाच्छ:** अष्टाध्यायी सूत्र के ४/२/११३ सूत्र के योग से 'छ' प्रत्यय लगकर क्रमश: **'राष्ट्र'** व **'राष्ट्रीय'** शब्द सिद्ध होते हैं। इन्हीं शब्दों के आगे भावार्थ में **'तस्य भावस्त्वतलौ'** अष्टाध्यायी ५/१/११८ सूत्र से 'तल्' प्रत्यय के संयोग से **'राष्ट्रीयता'** शब्द बनता है। राष्ट्रीयता शब्द से अभिप्राय है किसी देशविशेष से भावपूर्ण लगाव। उसके प्रति प्रेम की भावना, उस देश की संस्कृति, सभ्यता, परम्परा, भाषा, इतिहास, धर्म, दर्शन, तीर्थ, नदियाँ, वन, पर्वत, कला, साहित्य, खेल आदि के प्रति आत्मीयता व लगाव का होना। प्राकृतिक सम्पदाओं जैसे समुद्र, पर्वत, नदियों आदि भौतिक सीमाओं से घिरे भूभाग को हम देश कह सकते हैं और जब प्रशासनिक इकाई के साथ भावनात्मक सम्बन्ध जोड़ते हैं तो इसे राष्ट्र शब्द से जाना जाता है। इसमें स्वाधीनता, सार्वभौमिकता, सार्वजनिकता की भावना जुड़ जाती है। किसी देशविशेष की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, साहित्यिक, कलात्मक, धार्मिक, बौद्धिक प्रगति और समृद्धि को उस देश की राष्ट्रीय सम्पदा या राष्ट्रीय उत्थान के नाम से अभिहित किया जाता है।

परमपिता परमेश्वर ने सृष्टि की आदि में तप:-पूत चार ऋषियों के अन्त:करण में वेदज्ञान को प्रकट किया। महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी ने वेदार्थ प्रक्रिया को सही-सही ढंग से जानने व समझने के लिए **'ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका'** की रचना की और चारों वेदों को ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान के **'वर्ण्य विषय'** के रूप में प्रतिष्ठापित किया। उनमें अनेकानेक विषय के प्रतिपादन के साथ-साथ **'अथ राजप्रजाधर्मविषय: संक्षेपत:'** के अन्तर्गत ऋग्वेद के मन्त्र का उल्लेख करते हुए राजधर्म के विषय के बारे में संकेत किया है। तीन प्रकार की सभा ही को राजा मानना चाहिए, एक मनुष्य को कभी नहीं। वे तीनों ये हैं- प्रथम राज्यप्रबन्ध के लिए एक **'आर्य राजसभा'** कि जिससे विशेष करके सब राज्यकार्य ही सिद्ध किए जाएँ, दूसरी **'आर्य विद्यासभा'** कि जिससे सब प्रकार की विद्याओं का प्रचार होता जाए, तीसरी **'आर्य्यधर्मसभा'** कि जिससे धर्म का प्रचार और अधर्म की हानि होती रहे। इन तीन सभाओं से (विदथे) अर्थात् युद्ध में सब शत्रुओं को जीत के नाना प्रकार के सुखों से विश्व को परिपूर्ण करना चाहिए।

त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि
विश्वानि भूषथ: सदांसि।
अपश्यमत्र मनसा जगन्वान् व्रते
गन्धर्वा अपि वायुकेशान्।।

–महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेद भाष्य
मण्डल ३, सूक्त ३८, मन्त्र ६

इसी मन्त्र की व्याख्या महर्षि जी ने अपने किए हुए ऋग्वेद-भाष्य में इस प्रकार की है। **हे राजाना-** राजा और प्रजाजनो! मैं इस संसार में वर्तमान **जिन व्रते-** सत्यभाषणादि व्यवहार में **गन्धर्ववान्-** उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी वा पृथिवी को धारण करने और **वायुकेशान्-** वायु के सदृश प्रकाश वाले तथा अन्य भी शिष्ट अर्थात् उत्तम पुरुषों को **मनसा-** विज्ञान से **जगन्वान्-** प्राप्त हुआ **अपश्यम्-** देखता हूँ उन लोगों से **त्रीणि-** तीन **सदांसि-** सभाएँ नियत कराके **विदथे-** विज्ञान को प्राप्त कराने वाले व्यवहार में **पूरूणि-** बहुत **विश्वानि-** सम्पूर्ण व्यवहारों को **परि-** सब प्रकार **भूषथ:-** शोभित करते हो, इससे सम्पूर्ण कार्य के सिद्ध करने वाले होते हो।

इस मन्त्र के माध्यम से ऋषि दयानन्द ने उत्तम रीति से राजकार्य चलाने के लिए उत्तम गुण, कर्म और स्वभाव वाले विद्वान् पुरुषों की तीन प्रकार की सभाओं (राजसभा, विद्यासभा, धर्मसभा) के गठन की चर्चा की है जिससे राजा अपने राज्य सम्बन्धी सभी कार्यों को ठीक तरह से पूर्ण कर सके और राज्य में सभी लोग सुखपूर्वक रह सकें।

राज विषय का प्रतिपादन करते हुए स्वामीजी ने उल्लेख किया है कि राजा को कोमल वचनों का प्रयोग करते हुए प्रजा का पालन करना चाहिए, जिससे मेघ से प्राप्त होने वाले जल के समान अनेक प्रकार का ऐश्वर्य राजा को प्राप्त हो सके।

तदिन्न्वस्य वृषभस्य धेनोरा
नामभिर्ममिरे सक्म्यं गो:।
अन्यदन्यदसूर्यं वसाना नि
मायिनो ममिरे रूपमस्मिन्।।

–महर्षि दयानन्द कृत वेद भाष्य
मण्डल ३, सूक्त ३८, मन्त्र ७

जो मनुष्य **अस्य-** इस **वृषभस्य-**

बलिष्ठ की **धेनोः-** वाणी के **नामभिः-** नामों से **नु-** शीघ्र जिसको आ, **ममिरे-** सब ओर से नापते हैं **तत्-** उस **सक्म्यम्-** संयोग जिस पदार्थ में करता है उसमें उत्पन्न **गोः-** वाणी से **अन्यदन्यत्-** पृथक्- पृथक् वर्तमान **असूर्यम्-** मेघपन को **वसानाः-** ढाँपते हुए **मायिनः-** उत्तम बुद्धि वाले **अस्मिन्-** इस राज्य में **रूपम्-** रूप को नि, **ममिरे-** उत्पन्न करते हैं वे **इत्-** हि राज्य कर सकते हैं।

'राजप्रजाधर्म' विषय के अन्तर्गत ही ऋग्वेद के निम्नलिखित मन्त्र का उद्धरण देते हुए राजा के द्वारा प्रयोग किए जाने वाले नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्र, तोप, बन्दूक, धनुषबाण और तलवार आदि आयुध राजा के पास शस्त्रागार में स्थिर और पर्याप्त मात्रा में हों जिससे वह युद्ध होने पर अपने शत्रुओं को परास्त कर सके तथा चारों ओर से अपने राज्य को सुरक्षित कर सके।

स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीळू उत प्रतिष्कभे।
युष्माकमस्तु तविषी पनीयसी मा मर्त्यस्य मायिनः।।

ऋग्वेद १/३९/२

इस मन्त्र में ईश्वर मनुष्यो को आशीर्वाद देता है कि- हे मनुष्यो! तुम लोग सब काल में उत्तम बल वाले हो। किन्तु तुम्हारे **(आयुध)** अर्थात् आग्नेयादि अस्त्र और **(शतघ्नी)** तोप, **(भुशुण्डी)** बन्दूक, धनुषबाण और तलवार आदि शस्त्र सब स्थिर हों तथा **(पराणुदे)** मेरी कृपा से तुम्हारे अस्त्र और शस्त्र सब दुष्ट शत्रुओं के पराजय करने के योग्य होवें **(वीळू)** तथा वे अत्यन्त दृढ़ और प्रशंसा करने के योग्य होवें **(उत प्रतिष्कभे)** अर्थात् तुम्हारे अस्त्र और शस्त्र सब दुष्ट शत्रुओं की सेना के वेग थामने के लिए प्रबल हों तथा **(युष्माकमस्तु)** हे मनुष्यो! तुम्हारी **(तविषी.)** अर्थात् सेना अत्यन्त प्रशंसा के योग्य हों। जिससे तुम्हारा अखण्डित बल और चक्रवर्ती राज्य स्थिर होकर दुष्ट शत्रुओं का सदा पराजय होता रहे **(मा मर्त्यस्य.)** परन्तु यह मेरा आशीर्वाद केवल धर्मात्मा, न्यायकारी और श्रेष्ठ मनुष्यो के लिए है और जो **(मायि.)** अर्थात् कपटी, छली, अन्यायकारी और दुष्ट मनुष्य है उसके लिए नहीं, किन्तु ऐसे मनुष्यो का तो सदा पराजय ही होता रहेगा। इसलिए तुम लोग सदा धर्म कार्यों ही को करते रहो।

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉक्टर कृष्णकुमारजी ने **'वैदिक साहित्य का इतिहास'** नामक ग्रन्थ लिखा है। इसके अन्तर्गत **'ऋग्वेद का वर्ण्यविषय'** शीर्षक के अन्तर्गत राष्ट्रीयता का उल्लेख करते हुए उदात्त शब्दों में कहा है कि वैदिक युग में अपने देश के प्रति प्रेम तथा राष्ट्रीयता की भावना का विकास हो चुका था।

'व्यचिष्टे बहुपाय्ये स्वराज्ये'

ऋग्वेद ५/६६/६ (पृष्ठ संख्या ८९) में उपदेश किया गया है कि स्वराज्य की रक्षा अनेक उपायों से की जानी चाहिए। वैदिक ऋषियों ने सम्पूर्ण विश्व के लिए एक राष्ट्र की कल्पना की थी। उन्होंने राजा के आदर्शों को प्रस्तुत किया था। राष्ट्र का राजा ऐसा होना चाहिए, जिसे प्रजा अपने मन से स्वीकार करे। उस एकछत्र राजा के शासन में कहीं पर भी भ्रष्टाचार नहीं होना चाहिए। वह राजा पर्वत के समान स्थिर होकर राष्ट्र को धारण करता है ऐसा स्पष्ट उल्लेख है।

'इहैवैधि मापच्योष्ठाः पर्वत इवाविचाचलिः।
इन्द्रइवेह ध्रुवस्तिष्ठेह राष्ट्रमु धारय।।'

ऋग्वेद १०/१७३/२
(पृष्ठ संख्या ९०)

यद्यपि ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के विविध सूक्तों के अन्तर्गत अनेक मन्त्रों के माध्यम से राजा, सेनाध्यक्ष या सेनापति के कर्तव्यों का विशद वर्णन है।

स्योना पृथिवी भवानृक्षरा निवेशनी।
यच्छा नः शर्म सप्रथः।

–ऋग्वेद १/२२/१५

इस मन्त्र में पृथ्वी को अत्यन्त सुख प्रदान करने वाली, समस्त दु:खों को हरने वाली और नाना प्रकार के रत्नों को प्राप्त कराने वाली हो, ऐसा परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की गई है।

अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे।
पृथिव्याः सप्त धामभिः।।

–ऋग्वेद १/२२/१६

मन्त्र के माध्यम से चराचर जगत् में व्याप्त जगदीश्वर पृथ्वी को मिलाकर सात (७) अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, विराट्, परमाणु और प्रकृति पर्यन्त लोकों को धारण करता और रचना करता है। इस कारण से विद्वान् लोग उन लोकों की विद्या को समझते हैं तथा प्राप्त कराते हैं।

इसी मण्डल के अन्तर्गत २८वें सूक्त में राष्ट्रीय भावना से अनुप्राणित एक ऋचा में राजा को किस प्रकार की सेना को अपने अधीन रखना चाहिए उसका अत्यन्त सजीव चित्रण है। इसमें कहा गया है कि राजपुरुषों को दो प्रकार की सेना अर्थात् पहले सवारी युक्त (घोड़े, रथ और हाथी आदि) और दूसरी पैदल सेना (अस्त्र-शस्त्र के साथ पैदल चलने वाले सिपाही)। राजा को उक्त सेना के लिए उत्तम रथ और शस्त्र आदि इकट्ठी करनी चाहिए। अच्छी शिक्षा और औषधि प्रदान कर उसे शुद्ध, बलयुक्त और नीरोग रखनी चाहिए जिससे पृथ्वी पर एकछत्र राज्य नित्य स्थापित कर सके।

उच्छिष्टं चम्वोर्भर सोमं पवित्र आ सृज।
निधेहि गोरधि त्वचि।।

–ऋग्वेद १/२८/९

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का ८०वाँ सूक्त जिसमें १६ ऋचाएँ हैं और प्रत्येक ऋचा के अंत में 'स्वराज्यम्' पद दृष्टिगोचर होता है। यही कारण है कि इसको कतिपय वैदिक विद्वानों ने **'स्वराज्य सूक्त'** के नाम से भी अभिहित किया है। इस सूक्त के ऋषि **'गौतम'** हैं और देवता इन्द्र। इस स्वराज्य सूक्त के अन्दर १६ मन्त्रों में राष्ट्रीयता व स्वराज्य के जिस उदात्त भावना की प्रार्थना की गई है वह अपने आपमें अनुपम है। **'राष्ट्रदेवो भव'** का जीवन्त उदाहरण है। इस सूक्त का एक-एक मन्त्र राष्ट्रीय भावना और राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। इस सूक्त के अनेक मन्त्र में सेनापति को चक्रवर्ती राज्य की सामग्री को इकट्ठी कर और उसकी रक्षा करके विद्या और सुख की निरन्तर वृद्धि करें ऐसा स्पष्ट निर्देश है।

इसी **'स्वराज्य सूक्त'** के अन्तर्गत एक मन्त्र में शस्त्रास्त्रयुक्त सेना बड़े-बड़े अग्नियन्त्र से चलने वाली नौकाओं को बनाकर, द्वीप-द्वीपान्तरों में गमनागमन कर उत्तम व्यवहार से

धन आदि लाभों को बढ़ाकर अपने राज्य को धन-धान्य से सुभूषित करे।

वि ते वज्रासो अस्थिरन्नवर्ति
नाव्या ३ अनु।
महत्त इन्द्र वीर्यं बाह्वोस्ते बलं
हितमर्चन्ननु स्वराज्यम्।।

–ऋग्वेद १/८०/८

ऋग्वेद के इस **'स्वराज सूक्त'** इन १६ ऋचाओं के अन्दर राष्ट्रीय भावना के जो गीत गाए हैं उन्हें सुनकर मृतप्रायः शरीर में भी नवजीवन का संचार हो जाता है।

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. महावीरजी ने पावमानी शोध पत्रिका के एक विशेष अंक जनवरी से मार्च १९९४ वैदिक राष्ट्रगीत में ऋग्वेद के मण्डल ५/५/८ का उदाहरण देते हुए **इळा** (मातृभूमि) **सरस्वती** (मातृ संस्कृति) और **भारती** (मातृभाषा) के प्रति सम्मान का भाव प्रकट किया है।

आर्य जगत् की महान् विभूति, त्यागी, तपस्वी, श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ, वेद, ब्राह्मणादि ग्रन्थों के प्रकाण्ड विद्वान् गुरुकुल प्रभात आश्रम के कुलाधिपति पूज्य गुरुवर स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने **'विवेक सन्दोह'** नामक ग्रन्थ के अन्तर्गत पृष्ठ संख्या ०४-०६ **'राष्ट्र सन्दोह'** के प्रसंग में उल्लेख किया है कि 'राष्ट्र किसी भूखण्ड मात्र का नाम नहीं अपितु भूखण्ड में प्रवाहित होने वाली नदियाँ, पर्वत, पशु, पक्षी, मनुष्य, कानून, भाषा, वेश, आचार-विचार आदि सब कुछ मिलकर राष्ट्र है। उसके प्रति निष्ठावान् व्यक्ति ही राष्ट्रभक्त है। इसके अन्तर्गत पूज्य स्वामीजी महाराज ने महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी को अद्वितीय राष्ट्रभक्त के रूप में निरूपित किया है। राष्ट्र धर्म से सम्बन्धित सत्यार्थ प्रकाश के अनेक उद्धरणों की चर्चा करते हुए स्वामीजी महाराज ने ऋषि दयानन्द के **'सत्यार्थ प्रकाश'** के एकादश समुल्लास की राष्ट्र प्रशंसा का उल्लेख किया है जो हम सभी आर्यजनों के लिए प्रेरणास्पद है।

'यह आर्यावर्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं। आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूपी दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।'

उपर्युक्त वेदमन्त्रों के प्रमाण एवं अन्य उद्धरणों से यह सुतरां सिद्ध होता है कि ऋग्वेद के अनेक स्थलों में राष्ट्रीय भावना को सर्वोपरि माना गया है। परमपिता परमात्मा हम सभी को सामर्थ्य प्रदान करें कि ऋग्वेद के इस राष्ट्रीय भावना को अपने अन्दर आत्मसात् कर सकें और **'राष्ट्रदेवो भव'** विचारधारा से अनुप्राणित हो सकें। ■

आर्यसमाज नूरपुर का सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक क्षेत्र में योगदान महत्वपूर्ण व गरिमायुक्त : सी.पी. महाजन

नूरपुर। आर्यसमाज नूरपुर, जिला– मण्डी, हिमाचल प्रदेश का सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक क्षेत्र में योगदान महत्वपूर्ण व गरिमायुक्त रहा है। स्वतन्त्रता से पहले आर्यसमाज नूरपुर का इतिहास गौरवशाली रहा है वहीं वर्तमान काल में भी प्रशंसनीय है। यह जानकारी एक शिष्ट भेंटवार्ता में वर्तमान में आर्यसमाज नूरपुर के प्रधान सी.पी. महाजन ने देते हुए बताया कि विश्व में आर्य समाज की भूमिका सर्वोपरि रही है। आर्यसमाज में सिलाई केन्द्र चालू किया गया है जिसमें करीब १०० महिलाएँ सिलाई सीखकर अपनी आजीविका चला रही हैं। एक कोर्स में १०–१५ महिलाएँ सिलाई सीखती हैं। ये महिलाएँ गुरुवार को अलग से यज्ञ करती हैं और रविवारीय यज्ञ में भी भाग लेती हैं।

आर्यसमाज मन्दिर की समिति के सहयोग से आर्य समाज मन्दिर का पुनर्निर्माण आधुनिक तरीके से किया गया जिसमें सभी प्रकार की मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध हैं। आर्य समाज मन्दिर की सम्पत्ति का भी उदारीकरण किया गया है। नूरपुर से लगभग ५ कि.मी. दूर बागनी में स्वामी वेदानन्द जी के आश्रम में भी योगदान दे रहे हैं जहाँ छोटे बालक–बालिकाओं को वेदमन्त्र सिखाए जाते हैं और आर्यसमाज की रीति अनुसार हवन यज्ञ सिखाया जाता है। इन बच्चों को समय–समय पर उनकी आवश्यकता के अनुसार मान–सम्मान भी दिया जाता है ताकि इनका मनोबल ऊँचा रहे। श्री महाजन ने बताया कि भूतकाल में १९०० के करीब आर्यसमाज में कार्य आरम्भ हो गया था। सन् १९०५ के भूकम्प में सहायता की। अकाल के समय आधी कीमत पर अन्त वितरित किया। प्रथम विश्वयुद्ध के कारण अप्रत्याशित लाभ का प्रयोग आर्यसमाज के भवन व हॉल का निर्माण स्व. सत महाजन के दादा श्री कन्हैयालाल घऊ ने करवाया था। उनके पुत्र ताराचन्द के समय औषधालय व विद्यालय खोला गया व आर्यवीर दल ने काम किया। हैदराबाद आन्दोलन व हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी भाग लिया। भविष्य में भी आर्यसमाज संस्था भलाई के लिए, जनहित में काम करती रहेगी।

आर्यसमाज नूरपुर ने निर्णय लिया है कि सराय विद्यालय के विद्यार्थियों का जन्मदिन उनके गाँव में जाकर मनाया जाएगा। अभी हाल में १४ मई २०२४ को नूरपुर विधानसभा क्षेत्र के गाँव ठाना में एक विद्यार्थी का जन्मदिन मनाया गया जिससे गाँव के लोगों में आर्यसमाज के लिए जागरूकता व प्रसन्नता की लहर देखी गई। अब आर्यसमाज संस्था अपना रुख गाँव की तरफ करेंगी। इस सम्पूर्ण आहुति में आर्यसमाज मन्दिर समिति का पूरा सहयोग प्राप्त हुआ है। ■

यज्ञ संहिता (हवन महत्व)
पुस्तक से

यज्ञ के नियम

गतांक पृष्ठ २३ से आगे

अभियन्ता चन्द्रप्रकाश महाजन

प्रधान : आर्य समाज, नूरपुर (हिमाचल प्रदेश)
चलभाष : ९४१८००८०४४

१. यज्ञ का स्थान स्वच्छ व पवित्र होना चाहिए।

२. प्रत्येक यज्ञ कार्य के आरम्भ में संकल्प पाठ वाचन करना आवश्यक है

३. पति-पत्नी को साथ बैठकर यज्ञ करना चाहिए। बिना धर्मपत्नी के यज्ञ अधूरा है।

४. यज्ञ जैसे सर्वश्रेष्ठ कर्म में पत्नी को पति के दाहिनी ओर बैठना चाहिए।

५. अपना चलभाष सुप्तावस्था में रखें।

६. यज्ञ में व्यवस्थानुसार आयोजकों अथवा यज्ञब्रह्मा से स्वीकृति प्राप्त कर बैठें। साथ में बैठे व्यक्ति का आपस में स्पर्श न हो।

७. परस्पर में वार्तालाप न करें, केवल ईश्वर का ध्यान करें।

८. बाहर गिरी सामग्री को यज्ञकुण्ड में न डालें।

९. आचमन करके हाथ को सिर पर न ले जाएँ।

कलावा/मौली वैदिक यज्ञ में नहीं बाँधे जाते। यह पौराणिक यज्ञों में लाल-पीले रंग का धागा बाँधते हैं। कई वैदिक यज्ञों में यह अवैदिक कार्य किया जाता है जो बन्द होना चाहिए। इसी प्रकार माथे पर तिलक या टीका लगाना भी पौराणिक प्रथा है। वैदिक यज्ञ पद्धति में कहीं भी इसका वर्णन नहीं है। (मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति)

१०. यज्ञ में किसी भी प्रकार की हिंसा व बलि का निषेध है। यज्ञ पूर्ण अहिंसात्मक प्रक्रिया है।

११. हवन कुण्ड एक ही होना चाहिए। उसके चारों ओर चार जोड़े अर्थात् कुल आठ सदस्य बैठने का विधान है।

१२. कोई भी चमड़े वाली वस्तु जैसे गैजेट्स व बटुआ, बेल्ट, घड़ी में चमड़े का पट्टा आदि साथ नहीं होना चाहिए।

१३. यज्ञोपवीत यज्ञ करने का अधिकार प्रदान करता है। शुभ कर्म करने की प्रेरणा देता है।

१४. जलती हुई तीव्र अग्नि में घी की आहुति दें।

१५. यज्ञ करने से पूर्व आचमन का विधान है। आचमन सदा दाहिने हाथ से करना चाहिए। जल शुद्ध शीतल होना चाहिए।

१६. यज्ञ में गाय के घी का ही प्रयोग होना चाहिए। इस घी को डालने से उसमें यज्ञवाष्प अधिक विकिरण के प्रभाव को समाप्त कर देती है। गाय का घी विष प्रतिरोधक शक्ति रखता है।

१७. समिधाओं के चयन में विशेष सावधानी रखना चाहिए। इसका वर्णन समिधाओं में किया गया है। समिधा किसी प्रकार से दूषित व घुन लगी न हो।

१८. मन्त्रोच्चारण करते समय मन स्थिर, शान्त व प्रसन्न होना चाहिए। यज्ञ के समय मन्त्रों का उच्चारण करना लाभदायक है। इसका हमारे मन, मस्तिष्क व आत्मा पर विशेष प्रभाव पड़ता है। मन्त्रोच्चारण पुरोहित जी के स्वर के साथ स्वर मिलाकर करें। आगे-पीछे नहीं।

१९. यज्ञ करते समय यजमान का मन पवित्र एवं शुभ संकल्पों वाला होना चाहिए। यज्ञ बड़ी श्रद्धा व प्रेम से करना चाहिए। राग-द्वेष रहित करना चाहिए।

२०. हवन कुण्ड, यज्ञ के पात्र सोने, चाँदी अथवा ताम्बे के होने चाहिए। ताम्बे को सर्वोत्तम माना गया है क्योंकि इसमें कीटाणु नाशक शक्ति अधिक होती है।

२१. यज्ञ सामग्री ऋतुओं के अनुसार उपयोग करना चाहिए।

२२. यज्ञ का अधिकारी पवित्र आचरण वाला होना चाहिए। वह सदाचारी, धर्मात्मा, श्रद्धावान् होना चाहिए।

२३. यज्ञ के अन्त में दान-दक्षिणा आदि देना भी आवश्यक है जिसके बिना यज्ञ अधूरा है। कहते हैं कि आहुतियों से देवता (पृथ्वी, सूर्य, जल, वायु, आकाश आदि) प्रसन्न होते हैं तथा दक्षिणा से याज्ञिक मनुष्य तृप्त होते हैं।

२४. यज्ञ सब मनुष्य कर सकते हैं। धनाढ्य-निर्धन, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, नर-नारी सभी कर सकते हैं। इसमें ऊँच-नीच का कोई भेदभाव नहीं है। सदाचारी, धर्मात्मा, श्रद्धावान् व्रतादि कर्म में दीक्षित, शुद्ध अन्त:करण वाला व्यक्ति ही यज्ञ करने का अधिकारी है।

२५. यज्ञ के पश्चात् वहीं बैठकर दीर्घ श्वास-प्रश्वास तथा प्राणायाम करने से अधिक लाभ होता है।

२६. वेदों को जानने वाला विद्वान्, पवित्र आचरण वाला व्यक्ति ही यज्ञ करवाने का अधिकारी है। वह ही ब्रह्मा पद पर आसीन हो सकता है।

२७. सिगरेट, तम्बाकू आदि तामसिक पदार्थ यज्ञ मण्डप में अपने साथ कोई भी न लायें। यज्ञ करने वाले व्यक्ति का आहार-व्यवहार सात्विक होना चाहिए।

२८. यज्ञशाला में किसी को सोना नहीं चाहिए।

२९. कात्यायन ऋषि का आदेश है कि मन्त्रोच्चारण के पश्चात् स्वाहा के साथ ही यज्ञ कुण्ड में शुद्ध घृत तथा सामग्री की आहुति प्रदान करना चाहिए। ऋग्वेद में भी यही आदेश है।

३०. घृत तथा सामग्री की आहुतियाँ सदा अग्नि के ऊपर ही दी जाती है। अनजली समिधाओं पर नहीं। देखा गया है कि यजमान अनजाने समिधाओं को प्रज्वलित करने के भाव से उनके ऊपर घी डालते हैं। यह गलत है, क्योंकि इससे अग्नि मन्द हो जाती है। **(क्रमश: आगामी अंक में)**

मातृशक्ति विशेष

अथर्ववेद में नारी की गरिमामयी स्थिति

शिवनारायण उपाध्याय

७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा (राज.)
दूरभाष : ०७४४–२५०१७८५

नारी की स्थिति अथर्ववेद में भी लगभग वैसी है जैसी कि ऋग्वेद में वर्णन की गई है। स्त्री और पुरुष को वेद में एक-दूसरे का पूरक माना गया है। स्त्री और पुरुष दोनों मिलकर ही इस संसार को आगे बढ़ाते हैं। अकेली स्त्री अथवा अकेला पुरुष अधूरा है। दोनों मिलने पर ही पूर्ण होते हैं। अथर्ववेद में भी कन्या को हेय दृष्टि से नहीं देखा गया है। उसे वेदाध्ययन का पूरा अधिकार है।

रैभ्यासीअनुदेयी नारशंसी न्योचनी।
सूर्याया भद्रमिद् वासो गाथयैति परिष्कृता।।

–अथर्ववेद १४/१/७

पदार्थ- **(रैभी)** वेद वाणी **(सूर्याया)** प्रेरणा करने वाली कन्या की **(अनुदेयी)** साथिन (समान) और **(नाराशंसी)** मनुष्यों के गुणों की स्थिति **(न्योचनी)** नीची (छोटी सहेली के समान) **(आसीत्)** हो और **(भद्रम्)** शुभ कर्म **(इत्)** ही **(वासः)** वस्त्र समान हो क्योंकि वह **(गाथया)** गाने योग्य वेद विद्या से **(परिष्कृतः)** सजी हुई **(एति)** चलती है।

भावार्थ- मन्त्र में स्पष्ट कहा गया है कि वेदवाणी से प्रेरणा करने वाली कन्या की स्थिति साथिन के समान या (आयु व विद्या में) पुरुष से छोटी होने के कारण छोटी सहेली के समान मानी जानी चाहिए। उसके शुभ कर्म ही उसके श्रेष्ठ वस्त्रों के समान हैं। गाने योग्य वेदवाणी में पारंगत होने के कारण वह उसी से सजी हुई चलती है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि कन्या को ब्रह्मचारिणी बनकर वेद विद्या पढ़नी होती थी। पूर्ण शिक्षा प्राप्त करके ही कन्या विवाह का विचार करती है।

स्तोमा आसन् प्रतिधयः कुरीरं छन्दः ओपशः।
सूर्याया अश्विना वराग्निरासीत् पुरोगवः।।

–अथर्ववेद १४/१/८

पदार्थ- **(स्तोमाः)** स्तुति करने योग्य गुण **(सूर्यायाः)** प्रेरणा करने वाली या सूर्य की चमक के समान तेज वाली कन्या के **(प्रतिधयः)** वस्त्रों के अंचल (समान) **(आसन्)** हों। **(कुरीरम्)** कर्त्तव्य कर्म **(छन्दः)** आनन्दप्रद वेद **(ओपशः)** मुकुट (समान) हों और **(अग्निः)** अग्नि (शारीरिक एवं बाहरी अग्नि द्वारा स्वास्थ्य, शिल्प, यज्ञ आदि विधान) **(पुरोगवः)** अग्रगामी (पुरोहित समान) **(आसीत्)** हो। (जबकि) **(अश्विना)** विद्या को प्राप्त दोनों (वधू-वर) **(वरा)** परस्पर चाहने वाले हों।

भावार्थ- जब कन्या ब्रह्मचर्य से पूर्ण विद्या प्राप्त करके स्वास्थ्य आदि विधान में निपुण हो जावे और वैसा ही विद्वान् वर हो और जब दोनों एक-दूसरे को चाहने लगे तब परस्पर विवाह की कामना करें। विवाह से पूर्व दोनों एक-दूसरे की परीक्षा भी करके देख लें कि क्या उनका विवाह सफल होगा?

सोमो वधूयुःभवदश्विनास्तामुभा वरा।
सूर्यां यत् पत्ये शंसन्तीं मनसा सवितावदात्।।

–अथर्ववेद १४/१/९

पदार्थ- **(सोमः)** शुभ गुणयुक्त ब्रह्मचारी **(वधूयुः)** वधू की कामना करने वाला **(अभवत्)** हो, **(उभा)** दोनों **(अश्विना)** विद्या को प्राप्त कर (वर-वधू) **(वरा)** परस्पर चाहने वाले **(आस्ताम्)** हों **(यत्)** जब **(पत्ये)** पति के लिए **(मनसा)** मन से **(संशन्तीम्)** गुण कीर्तन करती हुई **(सूर्याम्)** प्रेरणा करने वाली कन्या को **(सविता)** जगत् का उत्पत्ति करता परमात्मा **(अददात्)** देवें।

भावार्थ- ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी पूर्ण विद्या प्राप्त करके परस्पर गुणों की परीक्षा करके अथवा कराके गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करें। परमेश्वर को धन्यवाद दें कि बड़े भाग्य से तुल्य गुण कर्म स्वभाव वाले स्त्री-पुरुषों का जोड़ा मिलता है।

पुंसि वै रेता भवति तत् स्त्रियामनुषिच्यते।
तद् वै पुत्रस्य वेदनं तत् प्रजापतिरब्रवीत।।

–अथर्ववेद ६/११/२

भावार्थ- युवा अवस्था में ही मनुष्य पूर्ण बलवान् और वीर्यवान् होकर उत्तम सन्तान उत्पन्न करे। यह ईश्वरीय नियम है।

तेन भूतेन हविषायमा प्यायतां पुनः।
जायां यामस्मा आवाक्षुस्तां रसनाभि वर्धताम्।

–अथर्ववेद ६/७८/१

पदार्थ- **(अयम्)** यह पुरुष **(तेन)** उस (प्रसिद्ध) **(भूतेन)** बहुत **(हविषा)** ग्राह्य अन्न के साथ **(आ)** सब ओर से **(पुनः)** अवश्य **(प्यायताम्)** बढ़ती करे। **(अस्मै)** इस पुरुष को **(याम् जायाम्)** जो वीरों को उत्पन्न करने वाली पत्नी **(आवाक्षुः)** इन लोगों से प्राप्त कराई है **(ताम अभि)** इस पत्नी के लिए यह **(पति)** पति **(रसेन)** अनुराग से **(वर्धताम्)** बढ़े।

भावार्थ- पुरुष सम्पूर्ण विद्या प्राप्त कर जब परिश्रम व योग्यता द्वारा पर्याप्त धन अर्जित कर ले तब माता-पिता, आचार्य आदि की अनुमति से स्त्री-पुरुष गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करे।

प्रतीची सोममसि प्रतीच्युत सूर्यम्।
प्रतीची विश्वान् देवान् तां त्वाच्छावदामसि।।

–अथर्ववेद ७/३८/३

पदार्थ- हे वधू! **(प्रतीची)** निश्चित ज्ञानवती तू **(सोमम्)** चन्द्रमा को **(उत्)** और

(प्रतीची) प्रतिज्ञापूर्वक मार्ग वाली तू **(सूर्यम्)** सूर्य को और **(प्रतीची)** प्रतिष्ठापूर्वक उपाय वाली तू **(विश्वान्)** सब **(देवान्)** उत्तम गुणों को **(असि असत्सि)** प्राप्त होती है। **(ताम् त्वा)** उस तुझको **(अच्छावदामसि)** हम स्वागत करके बुलाते हैं।

भावार्थ- सब स्त्री-पुरुष चन्द्रमा समान शान्त, सूर्य समान तेजस्विनी और सर्वगुण वाली वधू का यथावत् आदर करें।

परन्तु वर को वधू पहले चुनती है।

येना निचक्र आसुरीन्द्र देवेभ्यस्परि।
तेना नि कुर्वे त्वामहंयथा तेऽसानि सुप्रिया।।

–अथर्ववेद ७/३८/२

पदार्थ- **(येन)** जिस **(उपाय)** से **(आसुरी)** बुद्धिमानों या बलवानों का हित करने वाली बुद्धि से **(इद्रम्)** बड़े ऐश्वर्य वाले मनुष्य को **(देवेभ्यः)** उत्तम गुणों के लिए **(परि)** सब ओर से **(निचक्र)** नियत किया था। **(तेन)** उस उपाय से **(अहम्)** मैं **(त्वम्)** तुझको **(नि कुर्वे)** नियत करती हूँ **(यथा)** जिससे मैं **(ते)** तेरी **(सुप्रिया)** बड़ी प्रीति वाली **(असानि)** रहूँ।

अहं वदामि नेत् त्वं सभायामह त्वं वद।
ममेदसस्त्वं केवलो नान्यासां कीर्तयाश्चन।।

–अथर्ववेद ७/३८/४

पदार्थ- **(अहम्)** मैं **(न इत्)** अभी **(वदामिह)** बोल रही हूँ **(त्वम् त्वम्)** तू- तू **(अह)** भी **(सभायाम्)** सभा में **(वद)** बोल। **(त्वम्)** तू **(केवलः)** केवल **(मम इत्)** मेरा ही **(अस)** होवे **(चन)** और **(न)** न **(अन्यासाम्)** दूसरी स्त्री का **(न कीर्तयाः)** तू ध्यान न करे।

भावार्थ- वर और वधू दोनों सभा में पंचों के सामने यह प्रतिज्ञा करें कि वे सदाचारी और धर्म पर आरूढ़ रहकर कभी भी व्यभिचार में लिप्त नहीं होंगे।

विवाह की विधि पिता ही करता है।

सूर्याया वहतुः प्रागात् सविता यमवासृजत्।
मघासु हन्यन्ते गावः फल्गुनीषु व्युह्यते।।

–अथर्ववेद १४/१/१३

पदार्थ- (सूर्याया) सूर्य की चमक के समान तेज वाली कन्या का **(वहतुः)** दाय, दहेज **(प्र आगात्)** सम्मुख चले **(यम्)** जिस पदार्थ को **(सविता)** जन्मदाता पिता **(अव असृजत)** दान करे। **(मघासु)** सत्कार क्रियाओं में **(गावः)** वाचायें **(हन्यते)** चलें और वह वधू **(फल्गुनीषु)** सफल क्रियाओं के बीच **(वि उह्यते)** ले जाई जावे।

यदश्विना पृच्छमानावयातं त्रिचक्रेण वहतुं सूर्यायाः।
क्वैकं चक्रं वामासीत् क्व देष्ट्राय तस्थथुः।।

–अथर्ववेद १४/१/१४

पदार्थ- हे स्त्री पुरुषो! **(यत्)** जब **(सूर्यायाः)** सूर्य की चमक के समान तेजस्विनी कन्या के विवाह को पूछते हुए तुम

दीपावली के उपलक्ष्य में

दीपावली अन्धकार पर प्रकाश की विजय का त्योहार।
इसलिए छोड़ दो अन्धविश्वास, पाखण्ड जिनका नहीं है कोई आधार।।
दीपावली है अन्याय पर न्याय की विजय का त्योहार।
मिटाते रहो अन्याय, स्थापित करो न्याय, यही है गीता का सार।।
दीपावली है अधर्म पर धर्म की विजय का त्योहार।
अन्य मतों को छोड़, वैदिक धर्म को अपनाओ, जो देता है आत्मा को आधार।।
दीपावली है धोखाधड़ी पर, पारदर्शिता की विजय का त्योहार।
जीवन में यदि उन्नत होना चाहो तो करो सभी से पारदर्शिता का व्यवहार।
दीपावली है कूड़ा-कर्कट पर स्वच्छता की विजय का त्योहार।
कूड़ा-कर्कट से बनाओ दूरी और स्वच्छता से करो नित्य प्यार।।
दीपावली है हँसो और हँसाओं और सबको प्रसन्न रखने का त्योहार।
सबसे करो अच्छा व्यवहार, मत करो किसी भी प्राणी पर अत्याचार।।
अधिकतर लोग समझते हैं, इसे रावण पर राम की विजय का त्योहार।
जो भी हो इससे सीखें, कैसे आवे मेरे जीवन में राम के संस्कार।।
दीपावली है त्योहार, हमें सिखलाता, सबसे करना प्यार।
न कभी किसी से अन्याय करें, न कभी किसी से कोई दुर्व्यवहार।।
यदि करोगे हमेशा हर व्यक्ति से प्यार और रखोगे सबसे सद्व्यवहार।
तभी हम कह सकेंगे मनाया हमने सच्चे अर्थों में दीपावली का त्योहार।।
दीपावली है बुराइयों को छोड़, अच्छाइयों को अपनाने का त्योहार।
कहता 'खुशहाल' इस सिद्धान्त को लो अपने जीवन में उतार।।

खुशहालचन्द्र आर्य

द्वारा- गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गान्धी मार्ग, कोलकाता
चलभाष : ९८३०१३५७९४

अगले तीन पहिये वाले **(ज्ञान, कर्म, उपासना)** रथ से पहुँचो। वहाँ पर तुम दोनों का एक **(आत्मबोध रूप)** पहिया रहे, जहाँ पर उपदेश के लिए आप दोनों ठहरें?

भावार्थ- स्त्री-पुरुष विवाह उत्सव पर एकत्र होकर परस्पर आत्मोन्नति और परस्पर उपकार में स्थिति का विचार करें।

विवाह के साथ ही कन्या पर लगे कई प्रतिबन्ध हट जाते हैं। इस विषय में अथर्ववेद का कथन है।

प्र त्वां मञ्चामि वरूणस्य पाशाद्
येन त्वाबध्नात् सविता सुशेवाः।
ऋतस्य योनौ सुकृतस्य लोके
स्योनं ते अस्तु सहसंभलायै।।

–अथर्ववेद १४/१/१९

भावार्थ– जिस कन्या को पिता ने योग्य वर मिलने तक रोका था। वर कहता है कि मैं तुझे इस रुकावट के बन्धन से अच्छी तरह छुड़ाता हूँ जिसके साथ तेरे पिता ने तुझे बाँधा है। वर उसको पिता के घर से प्रसन्नता के साथ ले जाकर प्रेम से रखे और घर के सब लोग उसे उचित सम्मान दें। सास–ससुर आदि उसे उपहार दें।

शं ते हिरण्यं शमु सन्त्वापः
शमेयिर्भवतु युगस्य तद्मे।
शं ते आपः शत पवित्रा भवन्तु
शमु पत्या तन्वं सं स्पृशस्व।।

–अथर्ववेद १४/१/४०

पदार्थ– हे वधू! तेरे लिए सोना (स्वर्ण आभूषण) **(शम्)** सुखदायक हो, **(उ)** और **(आपः)** प्रजाएँ (सन्तान, सेवक आदि) **(शम्)** सुखदायक **(सन्तु)** होवें, **(मेथिः)** पशु बाँधने का काष्ठ दण्ड (खूँटा) **(शम्)** आनन्दप्रद और **(युगस्य)** जुए का **(तदंम्)** छिद्र **(शम्)** शान्तिदायक **(भवतु)** होवे। **(ते)** तेरे लिए **(शत पवित्राः)** सैकड़ों प्रकार शुद्ध करने वाले **(आपः)** जल **(शम्)** शान्तिदायक **(भवन्तु)** होवें। **(शम्)** शान्ति के लिए **(उ)** ही **(पत्या)** पति के साथ **(तन्वम्)** अपने शरीर को **(सं स्पृशस्व)** संयुक्त कर।

ससुराल में उसकी स्थिति का विवरण इस प्रकार हो।

सम्राज्ञयेधि श्वशुरेषु सम्राज्ञयुत देवृषु।
ननान्दुः सम्राज्ञयेघि सम्राज्ञयुत श्वश्रवाः।।

–अथर्ववेद १४/१/४४

पदार्थ– हे वधू! तू अपने ससुर आदि के मध्य सम्राज्ञी और अपने देवरों (वर के छोटे–बड़े भाई) के बीच सम्राज्ञी हो। अपनी ननद (वर की बहिन) के लिए सम्राज्ञी और अपनी सास (वर की माता) की भी सम्राज्ञी बन।

भगस्ते हस्तमग्रहीत् सविता हस्तमग्रहीत्।
पत्नी त्वमसि धर्मणाहं गृहपतिस्तव।।

–अथर्ववेद १४/१/५१

पदार्थ– ऐश्वर्यवान् परमात्मा ने तेरा हाथ पकड़ा है। धर्म से तू मेरी पत्नी है और मैं गृहपति घर का पालन करने वाला हूँ। ससुराल में सभी का यह प्रयत्न रहे कि वधू को कोई कष्ट न हो।

मा हिं सिष्टं कुमार्य स्थूपो देवकृते पथि।
शालाया देव्या द्वारं स्योनं कृण्मो वधूपथम्।।

–अथर्ववेद १४/१/६३

पदार्थ– हे दोनों स्थिर स्वभाव वाली स्त्री–पुरुषों की पंक्ति वधू को विद्वानों के बनाए मार्ग में कष्ट मत पाने दो। योग्य भवन के सुखदायक द्वार को हम वधू का मार्ग बनाते हैं।

ससुराल में वधू कैसे रहे इस पर अथर्ववेद का कथन है।

सुमङ्गली प्रतरणी गृहाणां सुशेवा
पत्ये श्वशुराय शंभूः।
स्योना श्वश्र्वै प गृहान् विशेमान्।।

–अथर्ववेद १४/२/२६

पदार्थ– हे वधू! बड़ी मंगल वाली, घर वालों की बढ़ाने वाली, पति के लिए बड़ा सुख देने वाली, ससुर के लिए शान्ति देने वाली और सासू के लिए आनन्द देने वाली तू गृहकार्यों को सम्भाल।

स्योना भव श्वशुरेभ्यः स्योना पत्ये गृहेभ्यः।
स्योनास्ये सर्वस्यै विशे स्योना पुष्टयैषां भव।।

–अथर्ववेद १४/२/२७

पदार्थ– तू ससुर आदि के लिए सुख देने वाली, पति के लिए सुख देने वाली और घर वालों के लिए सुख देने वाली और इनके पोषण के लिए सुख देने वाली हो। ससुराल वाले उसे **'सुमङ्गली'** उपमा से सम्बोधन करते हैं।

सुमङ्गलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत।
सौभाग्यमस्यै दत्त्वा दौर्भाग्यैर्विपरेतन।।

– अथर्ववेद १४/२/२८

पदार्थ– हे विद्वानो! यह वधू बड़े मङ्गल वाली है, मिलकर आओ, इसे देखो। इस वधू को सौभाग्यपन का आशीर्वाद देकर दुर्भाग्यपन से इसे दूर रक्खो।

इयं नार्युप ब्रूते पूल्यान्याव पन्तिका।
दीर्घायुरस्तु से पति जींवाति शरदः शतम्।।

–अथर्ववेद १४/२/६३

पदार्थ– यह नारी संगति के कर्मों को (बीज समान) बो देती है और बोलती है– 'मेरा पति लम्बी आयु वाला होवे और सौ वर्षों तक जीवित रहे।'

सास–ससुर उन्हें अलग से घर बसाने से रोककर उसी घर में प्रेमपूर्वक रहने का आग्रह करते हैं।

इहैव स्तं मा वियोष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोद मानौ स्वस्तकौ।।

– अथर्ववेद १४/१/२२

पदार्थ– हे वर–वधू! तुम दोनों ही गृहस्थाश्रम के नियमों को पालते हुए रहो। कभी अलग मत होओ। पुत्रों के साथ तथा नातियों के साथ क्रीड़ा करते हुए, हर्ष मनाते हुए और उत्तम घर वाले तुम दोनों आयु को प्राप्त होओ।

वधू को गृहकार्यों में भी सभी को सहायता देना चाहिए।

शर्म वर्मैतदा हरास्यै नार्या उपस्तरे।
सिनीवालि प्र जायतां भगस्य सुमतावसत्।।

–अथर्ववेद १४/२/२१

पदार्थ– हे विद्वान्! यह (गृहकार्य रूप) सुखदायक कवच इस नारी को ओढ़ने के लिए ला। हे अन्नपूर्णा पत्नी! तुझसे उत्तम सन्तान होवे और वह भगवान् की सुमति में रहे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि नारी की स्थिति अथर्ववेद में अच्छे प्रकार से वर्णन की गई है। अथर्ववेद में इस सम्बन्ध में लगभग ३०० मन्त्र हैं। हमने तो केवल कुछ मन्त्रों के आधार पर देख लिया है कि अथर्ववेद की दृष्टि में नारी किसी भी तरह से नर से हीन नहीं है। **इति शम्।** ■

दीपावली का वास्तविक स्वरूप

डॉ. गंगाशरण आर्य, 'साहित्य सुमन'

चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला,
ग्राम- शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली,
चलभाष : ९८७१६४४१९५

पर्वों का मनाना भारतीय संस्कृति की प्राचीन परम्परा है। हमारे पूर्वज ऋषि-मुनियों ने मानव जीवन में उमंग-उल्लास और उत्साह भरने के लिए पर्वों की परम्परा को प्रारम्भ किया। पर्व का शाब्दिक अर्थ है- पोरी, गाँठ, पड़ाव आदि। गन्ने की पोरी को संस्कृत में पर्व कहा जाता है। जैसे प्रत्येक पोरी के बाद गन्ने के रस का मिठास बढ़ता जाता है उसी प्रकार ये पर्व निरन्तर जीवन में मिठास को बढ़ाने के लिए आते हैं। जिस प्रकार रस्सी में थोड़ी-थोड़ी दूर पर गाँठ लगाकर और उन गाँठों पर पैर रखकर लक्ष्य की ऊँचाई तक चढ़ा जा सकता है उसी प्रकार ये पर्व जीवन की ऊँचाइयों को छूने के लिए प्रेरित करते हैं। एक यात्री यात्रा के लक्ष्य को पाने के लिए यात्रा के बीच-बीच में पड़ाव डालकर अपनी यात्रा को सरल बना लेता है। उसी प्रकार जीवन भी एक यात्रा है और प्रत्येक पर्व यात्रा में आने वाला पड़ाव है जो मानव को नई स्फूर्ति और ऊर्जा प्रदान करता है। जिससे उसे जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने में सुलभता होती है। भारत कृषि प्रधान देश है जिसमें खरीफ और रबी की दो प्रमुख फसल होती है। ज्वार, बाजरा, मूँग, धान आदि खरीफ की फसल कार्तिक मास में पककर तैयार होती है तथा गेहूं, चना, जौ, सरसों आदि रबी की फसल फाल्गुन मास के अन्त तक पककर तैयार होती है। इसी प्रसन्नता को व्यक्त करने के लिए हमारे पूर्वजों ने दिवाली और होली नाम के पर्व मनाने प्रारम्भ किए। इन पर्वों को नवसस्येष्टि (नई फसल पर किया जाने वाला यज्ञ) भी कहा जाता है। दीपावली पर्व शुद्ध रूप से सामाजिक एवं भौगोलिक पर्व है। इसको द्वापर में भगवान श्रीकृष्ण, पाण्डव और कौरव एवं उनकी प्रजा भी मनाया करती थी। त्रेतायुग में भगवान् राम और राम के पूर्वज भी मनाया करते थे और इससे पहले सतयुग में भी उसको मनाया जाता था दीपावली का वास्तविक नाम है **'शारदीय नवसस्येष्टि पर्व'** अर्थात् **'शरद ऋतु में आई हुई नई फसल का यज्ञ'** हमारी संस्कृति यज्ञ प्रधान हैं। यज्ञ से प्राणिमात्र का कल्याण होता है। इस महान् आर्यावर्त देश में यज्ञ करने की महान् परम्परा रही है। सभी मनुष्य अपने घरों में यज्ञ करते थे और विशेष पर्वों पर नवसस्येष्टि आदि सामूहिक रूप से मोहल्ले और गाँव के लोग इकट्ठे होकर यज्ञ करते थे। कालान्तर में इस यज्ञ परम्परा में विकार आ गए। हमारा दुर्भाग्य है आज हम दीपावली के शुभ अवसर पर वेद-विरुद्ध (मूर्ति पूजा-गणेश व लक्ष्मी पूजन, जुआं खेलना, शराब आदि व्यसनों का सेवन करना) आचरण करते हैं। प्रदूषण के निवारण हेतु यज्ञ-हवन तो करते नहीं हैं बल्कि पटाखे इत्यादि जलाकर प्रदूषण को और अधिक बढ़ाते हैं, पहले सरसों के तेल के दीपक जलाकर कुछ तो संक्रमण वातावरण से दूर किया जाता था अब तो उनके स्थान पर भी मोमबत्तियाँ व चाइनिज लाइटें लगाने का प्रचलन हो गया है जिसका कोई लाभ नहीं है।

क्या दीपावली को राम अयोध्या लौटे थे?

यह जानने के लिए क्या दीपावली को राम अयोध्या लौटे थे हमें निम्नलिखित तथ्यों पर विचार करना होगा।

दशहरा और दीपावली में २० दिन का अन्तर है। दशहरा रावण वध के लिए प्रसिद्ध है कि इस दिन राम ने रावण को मार कर लंका पर विजय प्राप्त की थी और दीपावली राम के अयोध्या आगमन की खुशी में मनाई जाती है ऐसा प्रसिद्ध है। **जरा विचार करो कि यदि रावण का वध राम ने दशहरे के दिन किया था तो २० दिन का राम के अयोध्या आगमन में अन्तर कैसे आया?** क्योंकि राम तो रावण का वध करके उसकी अन्येष्टि वैदिक रीति से करवाकर विभीषण का राज्याभिषेक कराकर तत्काल वापस आ गए थे इसलिए एक, दो दिन या चार, पाँच दिन का तो अन्तर आ सकता है, लेकिन २० दिन का नहीं, ये विचार करने योग्य बात है।

हाँ ये तो कह सकते हैं कि १४ वर्षों के वनवास के बाद अयोध्या आगमन से राम के राज्याभिषेक होने के बाद अर्थात् रामराज्य की प्रथम दीपावली अर्थात् शारदीय नवसस्येष्टि यज्ञ लोगों ने अत्यधिक हर्षोल्लास के साथ घी के दीपक जलाकर मनाई थी इसलिए राम के आगमन के उपलक्ष में जो प्रजा में उल्लास था उसी से दीपावली का विशेष महत्व हो गया, दीपावली पर उसी हर्षोल्लास से आज भी राम को स्मरण किया जाता है पर **दीपावली की तिथि का राम के अयोध्या आगमन की तिथि से कोई सम्बन्ध नहीं है।** इस प्रकार दीपावली पर्व के साथ अयोध्या के राजा राम का प्रसंग भी जुड़ गया। जब हम वाल्मीकि रामायण पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि अयोध्या काण्ड के पहले सर्ग में राजा दशरथ श्रीराम को युवराज बनाने पर विचार करते हैं और इसके लिए विभिन्न राजाओं और नगर एवं जनपद के लोगों को मन्त्रणा (विचार-विमर्श करने हेतु) के लिए दरबार में बुलाते हैं। दूसरे सर्ग में राजा दशरथ द्वारा राम के राज्याभिषेक का प्रस्ताव रखा जाता है और श्रीराम के गुणों को ध्यान में रखते हुए सभासदों द्वारा उक्त प्रस्ताव को सहर्ष समर्थन दिया जाता है। सर्ग तीन में राजा दशरथ वशिष्ठ एवं वामदेव को श्रीराम के राज्याभिषेक की तैयारी करने के लिए कहते हैं। इसी सर्ग के श्लोक-४ में राज्याभिषेक का समय दिया हुआ है अवलोकन करें-

चैत्रः श्रीमानयं मासः पुष्पः पुष्पितकाननः।
यौवराज्याय रामस्य सर्वमेवोपकल्प्यताम्।।

(अयोध्या काण्ड सर्ग ३, श्लोक ४)

अर्थात् इस श्रेष्ठ और पवित्र चैत्र मास में जिसमें वन पुष्पों से सुशोभित हो रहे हैं, श्रीराम के राज्याभिषेक की तैयारी कीजिए। इसी सर्ग के श्लोक-२२ में राज्याभिषेक-दिवस के नक्षत्र का

वर्णन है। देखें-

यतस्त्वया प्रजाश्चेमाः स्वगुणैरनुरञ्जिताः।
तस्मात्त्वं पुष्ययोगेन यौवराज्यमवाप्नुहि।।

(अयोध्या काण्ड सर्ग ३, श्लोक २२)

अर्थात् क्योंकि तुमने अपने गुणों से प्रजा को प्रसन्न कर रखा है इसलिए तुम कल पुष्प नक्षत्र में युवराज पद प्राप्त करो। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि श्रीराम का राज्याभिषेक चैत्रमास में निश्चित हुआ था। राज्याभिषेक की सारी तैयारी भी हो चुकी थी, लेकिन दासी मंथरा द्वारा कैकयी को भ्रमित करने के कारण श्रीराम को चौदह वर्ष का वनवास हो गया। इसलिए चौदह वर्ष की अवधि जब भी पूरी होगी, वह चैत्र मास में ही होगी, कार्तिक या अन्य मास में नहीं। कैकयी की माँग के अनुसार श्रीराम चौदह वर्ष से पूर्व अयोध्या लौट नहीं सकते थे और भरत की प्रतिज्ञा थी कि चौदहवें वर्ष के पूरा होते ही यदि श्रीराम अयोध्या नहीं लौटेंगे तो वे अग्नि में प्रवेश कर प्राण त्याग देंगे। **राज्याभिषेक की तिथि, वनवास की अवधि, कैकेयी की माँग और भरत की प्रतिज्ञा,चारों को ध्यान में रखते हैं तो श्रीराम चैत्र मास से बहुत पहले या बहुत बाद में नहीं लौट सकते थे। अतः यह कहना कि श्रीराम सीता सहित कार्तिक अमावस्या (दीपावली) को अयोध्या लौटे थे, तो यह रामायण के आलोक में गलत है। यह लोगों में फैला एक भ्रम मात्र है, सच्चाई नहीं।**

श्रीराम की अयोध्या वापसी तिथि कौनसी है?

उपर्युक्त तथ्यों से प्रमाणित हो जाता है कि श्रीराम कार्तिक महीने में अयोध्या नहीं लौटे थे? अब प्रश्न यह है कि श्रीराम अयोध्या कब लौटे थे? जब श्रीराम लंका से विमान द्वारा चलकर भारद्वाज ऋषि के आश्रम में पहुँचे, उस समय का वर्णन वाल्मीकि रामायण में इस प्रकार है-

पूर्णे चतुर्दशे वर्षे पचम्यां लक्ष्मणाग्रजः।
भारद्वाजाश्रमं प्राप्य ववन्दे नियतो मुनिम्।।

(युद्धकाण्ड सर्ग ७०, श्लोक १)

अर्थात् वनवास के चौदह वर्ष पूरे हो जाने पर चैत्र शुक्ल पंचमी के दिन श्रीराम भारद्वाज के आश्रम में पहुँचे और उन्हें यथाविधि प्रणाम किया। इसी सर्ग के श्लोक १२ में भारद्वाज ऋषि राम से कहते हैं कि अब आप आज मेरा आतिथ्य स्वीकार कर यहीं निवास करके अयोध्या के लिए कल प्रस्थान करना। राजकुमार राम ने भारद्वाज की आज्ञा को शिरोधार्य कर और अत्यन्त आनन्दित होकर कहा- 'बहुत अच्छा।' फिर भोजन आदि के पश्चात् राम उस रात्रि को सुखपूर्वक वहीं रहे और चैत्र शुक्ल पक्ष की षष्ठी के दिन अयोध्या में प्रवेश किया। श्रीराम ने अपने आगमन की सूचना देने के लिए हनुमानजी को भरत के पास भेजा था, क्योंकि ज्ञात था कि आज वनवास के १४ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। यदि आज भरत को उनकी वापसी का सन्देश नहीं मिला तो वह चित्रकूट में की हुई अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार अग्नि में प्रविष्ट हो जाएगा। (देखें वाल्मीकि रामायण सर्ग ७१ श्लोक १) जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि राज्याभिषेक चैत्रमास में निश्चित हुआ था। इसलिए चौदह वर्ष की अवधि चैत्रमास में ही पूरी हो सकती है, अन्य मास में नहीं। अत: प्रमाणों से श्रीराम के अयोध्या लौटने का समय चैत्र मास ही सिद्ध होता है। यद्यपि वाल्मीकि रामायण के अनुसार लंका विजय के पश्चात् अयोध्या में श्रीराम की वापसी चैत्र मास में हुई थी फिर भी किसी ऐतिहासिक भूल के कारण कार्तिक मास में ही श्रीराम की अयोध्या वापसी प्रसिद्ध हो गई। अब यही असत्य मान्यता दृढ़ हो चुकी है।

दीपावली का वैज्ञानिक पक्ष

मनुष्य मात्र में मौलिक प्रवृत्ति है कि वह नित्य प्रतिदिन जो कार्य/व्यवसाय करता है उससे कभी-कभी विश्राम तथा हृदयोल्लास का कार्य करता है वस्तुत: आनन्द का पूर्ण प्रकाश मानव जीव में ही होता है। मनुष्य ही आनन्दमय कोष का अधिकारी है। पर्व या उत्सव पर स्वास्थ्य लाभ के साथ-साथ हार्दिक आनन्द के विकास का यथार्थ अवसर मिलता है। ऋतुओं की सन्धि पर रोग उत्पन्न हो जाते हैं उन रोगों के निवारण हेतु भारतवर्ष में ऋतु सन्धि के अवसर पर यज्ञ आदि के माध्यम से पर्व/उत्सव मनाने की सदियों प्राचीन परम्परा रही है। पर्व मनाने के साथ ही सर्वसाधारण के मनोरंजन को ध्यान में रखकर हम दीपावली की विशेष चर्चा करेंगे।

वर्षा के बीतने और शीतकाल के प्रारम्भ होने पर जनता को कुछ विशेष तैयारियाँ करनी पड़ती है। वर्षाऋतु के वृष्टि बाहुल्य से वायुमण्डल तथा घर-बार विकृत, मलिन व दुर्गन्धित हो जाते हैं। वर्षा ऋतु के अन्त में उनकी शुद्धि और स्वच्छता की आवश्यकता होती है। घर-बाहर की स्वच्छता सफाई, लिपाई-पुताई से की जाती है। शीत निवारण के लिए गरम वस्त्रों का प्रबन्ध करना होता है। इसी समय चावल (धान) की फसल का आगमन होता है। किसान के आनन्द की सीमा नहीं होती है। उनके घर अन्न-धान, मूँग, बाजरा, मक्का, तिल और कपास से भरपूर होते हैं। भारतीय वैदिक संस्कृति में किसी भी ऋतु में आई हुई फसल को घर में लाने या खाने से पूर्व यज्ञ में अर्पित किए जाने की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है इस नए अन्न के द्वारा सर्वप्रथम सृष्टि के सभी जड़-चेतन देवों की पूजा की जाती है अग्नि देवताओं का मुख होने से सबसे पहली आहुति यज्ञ के माध्यम से अग्निदेव को समर्पित की जाती है बाद में आहार के लिए भण्डारगृह में रखी जाती है। इसे ही ऋषियों ने नव-नए, सस्य- अनाज (फसल) से इष्टि- यज्ञ करना कहा है। दीपावली शरदऋतु में मनाई जाती है अर्थात् यह **'शारदीय नवसस्येष्टि'** है। नई फसल (नए अन्न) का स्वागत करने के लिए कार्तिक मास की अमावस्या की तिथि प्राचीन काल से नियत चली आ रही है। उसको दीपावली भी कहते हैं। **जैसे शरद पूर्णिमा की चाँदनी वर्षभर की बारह पूर्णिमाओं में सर्वोत्कृष्ट होती है उसी प्रकार कार्तिक अमावस्या का अन्धकार वर्ष भर की बारह अमावस्याओं में सघनतम (सबसे गहरा अर्थात् घना अन्धकार) होता है।** ऐसी घनी काली अँधियारी रात में नवीन फसल के आगमन से प्रमुदित भारतीयजनों द्वारा कृषि प्रधान भारतवर्ष में वर्ष की प्रथम उक्त सस्य (फसल) के स्वागत के लिए दीपमाला का उत्सव मनाया जाता है। दीपमाला से गृहों की वर्षाकालीन आर्द्रता (ह्युमिडिटी) से संशोधन में सहायता होती है। इस दिन राजमहल से लेकर निर्धन की कुटिया तक की शोभा अपूर्व होती है अर्थात् सभी छोटे-बड़े घर पंक्तिबद्ध प्रदीप्त (जलाकर रखे गए) किए गए दीपों से ऐसे लगते हैं मानों दीपों की माला से सुशोभित और अलंकृत हो रहे हों। इसलिए दीपावली का दूसरा नाम दीपमालिका पर्व भी है। सरसों के तेल से दीपमाला (छोटे-छोटे दीवलों) की मानों होड़ लग जाती है। इस अवसर पर तरह-तरह के मिष्ठान्नों तथा खीलों-खिलौनों का आदान-प्रदान किया जाता है। **(क्रमशः आगामी अंक में)**

दीपावली विशेष

फीके रंग

● रामफल सिंह आर्य

वैदिक प्रवक्ता, भिवानी (हरियाणा)

चलभाष : ९४१८२७७७१४, ९४१८४७७७१४

त्योहारों के इस अवसर पर नगर में चारों ओर चहल-पहल दृष्टिगोचर होती थी। बाजारों की सजावट प्रत्येक को अपनी ओर बरबस आकर्षित कर लेती थी। आबाल, वृद्ध सभी के मन में उत्साह भरा हुआ था और हर प्रकार की दुकानों के ऊपर भीड़ ही भीड़ दिखाई देती थी। वस्त्र, जूते, आभूषण, विद्युतीय उपकरण, बर्तन, फल, मेवे, मिठाइयाँ, वाहनों, ऊनी वस्त्रों आदि सभी की दुकानों के आगे ग्राहकों को लुभाने वाले एवं भारी छूट को दर्शाने वाले आकर्षक बैनर एवं विज्ञापन लगे थे। दीपावली के पर्व में सजावट का ही तो कार्य अधिकतर होता है। रंगाई-पुताई का कार्य करने वाले लोगों के पास आजकल समय था ही नहीं। सायंकाल के समय तो ऐसा लगता था मानों घरों से सारी भीड़ निकल कर बाजारों में समा गई हो। हर व्यक्ति अपने लिए कुछ न कुछ क्रय करने में लगा था। यदि कहीं पर कुछ कम उत्साह दिखाई देता था तो वह थी रेलवे स्टेशन के दक्षिणी भाग में झुग्गी झोपड़ियों की यह बस्ती जिसे लोग झोपड़-पट्टी के नाम से पुकारते थे। पिछले दस-बारह वर्षों से ये लोग इस स्थान पर डेरा डाले बैठे थे और इस समय लगभग एक सौ पचास-साठ झोपड़ियाँ इस स्थान पर बन चुकी थी जिनमें लगभग सात-आठ सौ जीव निवास पा रहे थे। इन लोगों के लिए त्योहारों की इस चमक-दमक का कोई मूल्य नहीं था। जीवन का संघर्ष जैसे पहले चल रहा था वैसे ही अब भी था। न पानी की व्यवस्था, न प्रकाश की, न कोई भोजन का ठिकाना, न सुरक्षा का। फिर शिक्षा, चिकित्सा एवं सुख सुविधाओं की गाथा ही व्यर्थ है। पीने के लिए पानी ये लोग रेलवे के रिसते हुए पानी के टैंक से लेते हैं। जब तक रेलवे वाले उसे ठीक नहीं करते तब तक पानी सरलता से मिल जाता है उसके पश्चात् इन्हें स्थानक की दूसरी ओर लगे नल तक जाना पड़ता है।

गुल्लू का परिवार भी इन्हीं झोपड़ियों में अपना आश्रय पाए हुए जैसे- तैसे जीवन की गाड़ी को धक्का देकर चला रहा था। इसके परिवार में पाँच जीव थे, पत्नी केलां, बड़ा बेटा काली, छोटा सत्तू और एक बेटी संतरो। गुल्लू का परिवार मूर्तियाँ बनाने का कार्य करता था। मिट्टी से यह परिवार अत्यन्त सुन्दर मूर्तियाँ बनाता था जिनमें विभिन्न देवी-देवताओं की, पक्षियों, पशुओं एवं अन्य खिलौनों की मूर्तियाँ होती थी। बड़ा बेटा रेल स्थानक पर कुली का कार्य करता था शेष लोग गुल्लू का हाथ बँटाते थे। उसकी पत्नी केलां एवं बेटी सन्तरों रंग करने का कार्य करती थी। गुल्लू एवं सत्तू मूर्तियाँ उठाकर सुबह-सुबह रेलवे फाटक के पास एक स्थान पर दुकान लगाते और सायंकाल को अपना सारा सामान समेट कर घर वापस ले आते थे। जो कुछ थोड़ी बहुत आय होती उससे परिवार किसी न किसी प्रकार से अपना पेट पाल रहा था। कुली का कार्य करने वाला उसका बेटा काली अब अपनी आय अधिकतर अपने पास ही रखता था। पिता से उसकी कम ही बनती थी। अब तो वह शराब का भी सेवन करने लगा था अत: पैसे बचने का अवसर कहाँ था।

रात्रि के समय शहर के ऊँचे-ऊँचे भवनों पर की गई प्रकाश व्यवस्था देखते ही बनती थी। माल रोड पर आने-जाने वाले वाहनों की कतारें मानों एक पूरा पुल तैयार कर देती थी। रंग-बिरंगी चमचमाती कारों की जब पंक्ति लग जाती तो बीच में से पैदल चलने वालों के लिए भी पार करना कठिन हो जाता। इसके अतिरिक्त स्कूटर, मोटर साइकिल, रिक्शा आदि का सब कुछ मानो शाम के समय एक-दूसरे के साथ होड़ लगाकर दौड़ते हैं। दीपावली के दिन तो सुबह-सुबह ही पूरा मेला लग गया। व्यापारी लोग अपने प्रतिष्ठानों को वधू की तरह सजाए बैठे थे। ऐसा लगता था कि ग्राहक आज सारी खरीददारी करके ही श्वास लेंगे। बाजारों में भीड़ बढ़ती ही जा रही थी जिसके कारण सारा वातावरण महक रहा था। गुल्लू भी अपनी मूर्तियाँ सड़क के किनारे रखे आने-जाने वालों को पुकार रहा था, 'आओ बाबूजी! बहनजी! भाई साहब! बहुत सुन्दर मूर्तियाँ हैं। ले जाओ दीवाली के दिन घर को सजाओ। ये लो रामजी, कृष्णजी, लक्ष्मी, हनुमान, गणेश, तोता-मैना, मोर, गुड़िया जो भी चाहे ले जाओ। इससे सस्ती और कहीं न मिलेगी।' कुछ लोग आते, उलट-पलट कर मूर्ति को देखते फिर आगे बढ़ जाते। गला फाड़ कर चिल्लाते-चिल्लाते उसे बहुत समय हो गया, बिक्री कुछ हो नहीं रही थी। इससे अधिक तो वह कई सामान्य दिनों में कमा लिया करता था। आज पता नहीं ग्राहक क्यों नहीं आ रहे। इन मूर्तियों के बनाने में उन सभी ने कितना परिश्रम किया था। कई घुटाई करके सब लोगों ने रात-दिन लगाकर विशेष रूप से इस त्योहार के लिए मूर्तियाँ तैयार की थी। मूर्तियाँ बनाते समय सब यह सोच-सोचकर प्रसन्न हो रहे थे कि यदि इसमें से आधी भी बिक गई तो दीवाली पर बहुत कुछ खरीदा जा सकेगा। पत्नी के लिए नई साड़ी, सन्तरों के लिए स्वेटर, सत्तू अपने लिए एक साइकिल खरीदने की हठ कर रहा था। इस परिवार के लिए ये मात्र मूर्तियाँ नहीं थी अपितु उनके सपने थे जो छोटी-छोटी वस्तुओं के लिए देखे जा रहे थे। स्वयं गुल्लू सोच रहा था कि वह एक रेहड़ी ले लेगा फिर उस पर रख कर मूर्तियाँ बेचा करेगा तो शहर में कई जगह घूम लेगा। कुछ पैसे बचेंगे तो

दीपावली पर कुछ मिठाइयाँ एवं पटाखे आदि ले लेगा।

दोपहर होने को आई परन्तु गुल्लू की बिक्री कुछ विशेष नहीं हुई। दोपहर बाद कुछ मूर्तियाँ बिकी और शाम तक उसके पास कुछ पैसे आ गए परन्तु वे इतने कम थे कि उनसे सायंकाल का खाना ही पूरा पड़ता। सायंकाल को भीड़ कम हो गई, लोग अपने घरों में धूमधाम से दीवाली मना रहे थे। पटाखों की कानों को बहरा करने वाली ध्वनियाँ गूँजनी शुरू हो गई थी। गुल्लू ने अपनी दुकान समेटी और भारी मन से घर की ओर चल दिया। पता नहीं लोगों की आजकल कैसी रुचि हो गई है? कितनी सुन्दर मूर्तियाँ बनी थी, फिर भी बिकी नहीं। घर पर पत्नी एवं पुत्री प्रतीक्षा कर रही थी कि अब पैसे आएँगे तो सपने साकार होंगे। परन्तु सपने तो सपने ही हैं। गुल्लू का लटका हुआ मुँह देखकर ही वे समझ गई कि दीवाली के रंग फीके हैं। इस समय पूरा शहर धूम-धड़ाके से गूँज रहा था परन्तु निर्धन की झोपड़ी में सन्नाटा था। चारों ओर तीव्र प्रकाश जगमग कर रहा था, परन्तु गुल्लू की झोपड़ी निराशा के गहन अन्धकार में लीन थी। नगरवासियों ने करोड़ों रुपए के पटाखे फूँक डाले, परन्तु इस निर्धन बस्ती की ओर से सब उदासीन थे। सब ओर बधाइयों का तांता लगा था, परन्तु गुल्लू और उसका परिवार अपनी दुर्दशा पर आँसू बहा रहा था। दीपावली की यह चहल-पहल, यह जगमग मानो उनको मुँह चिढ़ा रही थी। काश! कोई उनके दु:ख-दर्द को भी समझने वाला होता। कोई आकर उनकी तनिक सी भी सुध लेने वाला होता। हजारों रुपयों की अनावश्यक खरीदारी के स्थान पर कोई आकर उनके लिए भी सोचता। महलों में दीप तो सभी जलाते हैं, कोई झोपड़ी के द्वार पर एक छोटा सा दीप रख जाता। शहर की इस सजावट को देखकर सन्तरों ने पिता की ओर देखा तो मानो उसकी आँखों में एक प्रश्न था कि ये भेद क्यों है? पिता ने बच्ची को खींचकर छाती से लगा लिया और उसकी आँखों से आँसू निकल कर बच्ची के मस्तक पर टपक पड़े। ■

बसेरा

मेरा कुछ भी नहीं यहाँ,
सब तेरा ही तेरा है।
पड़ाव है आत्मा का केवल,
मेरा तो रैन बसेरा है।
नर–तन योनि दुर्लभ है,
जो शुभ करना है कर ले।
कई योनियों से विश्राम मिला है,
कुछ तो अब सँवर ले।
प्रभु की असीम कृपा से,
नर तन तूने है पाया।
दोष किसी को मत देना,
समय जो व्यर्थ गँवाया।
सुख–दु:ख की पैनी धार है जीवन,
इसमें फूल खिला ले तू।
शुभ–कर्मों की बगिया महका,
जीवन 'आदर्श' बना ले तू।
तू ही सबका स्वामी है,
तू ही सबका है माली।
केवल हम हैं निमित्त मात्र,
करता तू सबकी रखवाली।
हृदय में अबाध गति से,
आनन्द की धारा बहती है।
पर हमारे ही पापों की छाया,
तुझ तक न पहुँचने देती है।
काम, क्रोध, लोभ, मोह मद ने,
जीवन में अंगद सा पाँव जमाया है।
लाख प्रयत्न करने पर भी तू,
तू बाहर निकल न पाया है।
मानव को गिराने हेतु डाह–ईर्ष्या,
पग–पग पर विचरण करती है।
इसको ही भरमाने हेतु तृष्णाएँ भी,
अपना जाल बुना करती हैं।
विवेक हर पल है हँसता,
तूने क्यों मुझे भुलाया है।
जब–जब तू मुझको भूला,
मैंने ही तुझे रुलाया है।
अब तो जरा सम्भल जा तू,
मेरी शरण में आ जा।
मेरी शरण में जो आया,
उसने ही सब कुछ पाया।
भीतर ही भीतर झाँक ले तू,
अन्तर्मन में झाँक ले तू।
अन्त:करण पुकार उठेगा,
केवल उसकी ही यह माया है।
तेरा गहन रहस्य है ये,
ऋषि–मुनियों ने है समझाया।
वेदों ने भी नेति–नेति कह,
इसको ही दोहराया।

आदर्श आर्या

साकेत, मेरठ (उत्तरप्रदेश)
चलभाष : ९५५७८७३६३३

यह कविता विगत अगस्त में त्रुटिवश अपूर्ण प्रकाशित हो गई थी, जिसका हमें खेद है। पूर्ण कविता पाठकों के लाभार्थ पुन: प्रस्तुत है। ***–सम्पादक***

अश्वत्थे वो निषदनम्।। (यजुर्वेद १२-७९)

भावार्थ:– मनुष्यों को ऐसा विचारना चाहिये कि हमारे शरीर अनित्य और स्थिति चलायमान है इससे शरीर को रोगों से बचा कर धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष का अनुष्ठान शीघ्र करके अनित्य साधनों से नित्य मोक्ष के सुख को प्राप्त होवें। जैसे औषधि और तृण आदि फल-फूल, पत्ते, स्कन्ध और शाखा आदि से शोभित होते हैं वैसे ही रोगरहित शरीरों से शोभायमान हों॥७९॥

(महर्षि दयान्दकृत यजुर्वेद भाष्य)

करो कर्म के काम

आदित्यनाथ जी! करो धर्म के काम
सन्त बनो ऋषि दयानन्द से, करो जगत् में नाम।।
जगत् पिता जगदीश निरंजन जन्म कभी ना लेता है।
बिन कानों के सुनता है वह, सबसे बड़ा विजेता है।।
माता–पिता, गुरु है प्रभुवर, नेताओं का नेता है।
हर मानव को दयासिन्धु वह, यथायोग्य फल देता है।।
जो करते हैं भले काम वह, जाते हैं सुखधाम।
आदित्यनाथजी! करो धर्म के काम।।१।।
बाली, रावण, कुम्भकरण, अन्यायी अत्याचारी थे।
ऋषियों–मुनियों के संतापक, वेद विरोधी भारी थे।।
खान–पान दूषित था उनका, काम गलत वे करते थे।
ईश्वरभक्त सदाचारीजन, उन दुष्टों से डरते थे।।
इसीलिए तो उन दुष्टों का, काल बने थे राम।
आदित्यनाथजी! करो धर्म के काम।।२।।
जो वेदों का प्रचारक है, काम धर्म के करता है।
अबला, दीन, अनाथों के जो कष्ट हमेशा हरता है।।
वेद विरोधी शैतानों से जो निर्भय अड़ जाता है।
पाखण्डियों का करे सामना, वीर पुरुष कहलाता है।।
जो भोली जनता को ठगता, वह है नीच अधम।
आदित्यनाथजी! करो धर्म के काम।।३।।
सूरजमल नारायण ढोंगी, बहुत बड़ा पाखण्डी है।
जीवनवृत्त बताता उसका, पूरा रहा उदण्डी है।।
नगर हाथरस में उसके कारण ही काण्ड हुआ भारी।
हुई घटना बुरी, वहाँ पर, मरे सवा सौ नर–नारी।।
जनता भ्रमित की थी ठग ने, उसका था परिणाम।
आदित्यनाथजी! करो धर्म के काम।।४।।
ऐसे ढोंगी बाबा को, नेताजी! आप बचाओ मत।
संन्यासी होकर योगीजी! भारी पाप कमाओ मत।
जगत् पिता जगदीश्वर को, हे नेताजी! मत भूलो तुम।
मुख्यमन्त्री बनकर के मत, अहंकार में फूलो तुम।।
श्रीकृष्ण बन पापी के मुँह पर दो लगा लगाम।
आदित्यनाथजी! करो धर्म के काम।।५।।
देशधर्म के काम करो तुम, जग में आदर पाओगे।
ईश्वर भक्त, तपस्वी–त्यागी, देव–पुरुष कहलाओगे।।
पावन वेद प्रचार जगत् में योगीजी करवाओ तुम।
स्वामी दयानन्द बन जाओ, मोक्षधाम को जाओ तुम।।
नन्दलाल दो सत्य–धर्म का दुनिया को पैगाम।
आदित्यनाथजी! करो धर्म के काम।।६।।

करो वेद प्रचार आर्यों

बिन वेद ज्ञान के, व्याकुल है संसार।
करो वेद प्रचार आर्यों! करो विश्व उद्धार।।
अविद्या रूपी अन्धकार जब, सर्व विश्व में छाया था।
पावन वैदिक धर्म जगत् ने, पूरी तरह भुलाया था।।
नर–नारी थे लिप्त पाप में, दया–धर्म बिसराया था।
हाहाकार मचा था जग में, देव दयानन्द आया था।।
विरजानन्द का प्रिय शिष्य था, साहस का आगार।
वैदिक पथ तजकर, व्याकुल है संसार।।१।।
देव दयानन्द ने देखा, बेढंगा जग का हाल सुनो।
मानवता के तपः पूत को, भारी हुआ मलाल सुनो।।
वेद विरोधी सभी मतों को गलत बताया ऋषिवर ने।
वैदिक पथ पर चलो, चलाओ, समझाया ऋषिवर ने।।
दानव दल का किया सामना, था बल का भण्डार।
वैदिक पथ तजकर, व्याकुल है संसार।।२।।
बहिन, बेटियों,माताओं को, पूज्य बताया स्वामी ने।
सकल जगत् को गोसेवा का, पाठ पढ़ाया स्वामी ने।।
कुरान, पुराण, बाइबिल झूठे, ग्रन्थ बताए स्वामी ने।
जड़पूजा के तर्कपूर्वक, दोष गिनाए स्वामी ने।।
राज्य विदेशी बुरा बताया, किया बड़ा उपकार।
वैदिक पथ तजकर, व्याकुल है संसार।।३।।
स्वामीजी के शिष्यों ने भी, जग में बढ़कर काम किया।
किया वेद प्रचार रात–दिन, पल भर ना आराम किया।।
लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, राजपाल थे मस्ताने।
धर्म हेतु बलिदान हुए थे, दयानन्द के दीवाने।।
गुरुदत्त अरु हंसराज ने, कभी न मानी हार।
वैदिक पथ तजकर, व्याकुल है संसार।।४।।
धूर्त स्वामी पाखण्डी, अब खुले जग में घूम रहे।
ऊँचे–ऊँचे महल ठगों के, आकाश को चूम रहे।।
धन–दौलत, ऊँचे पद पाकर, मूढ़ परस्पर झगड़ रहे।
अगर उन्हें समझायें कोई, उनसे भी है अकड़ रहे।।
सच कहता हूँ ये है दानव, धरती पर हैं भार।
वैदिक पथ तजकर, व्याकुल है संसार।।५।।
त्याग करो ऋषि दयानन्द बन, जागो करो न देरी तुम।
धन–दौलत पद के दीवानो! बात मान लो मेरी तुम।।
यहीं पड़ा रह जाएगा सब, अन्त समय पछताओगे।
नन्दलाल निर्भय कहता है, भारी कष्ट उठाओगे।।
जगत गुरु ऋषि दयानन्द का दो तुम कर्ज उतार।
वैदिक पथ तजकर, व्याकुल है संसार।।६।।

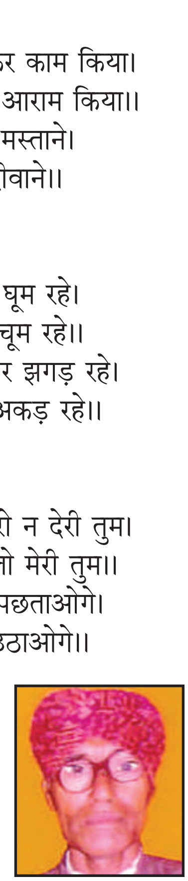

● **पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य**
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष : ९८१३८४५७७४

हम क्या खावें- घास, मांस या विषाक्त अन्न जल?

मोहनलाल दशोरा 'आर्य'

नारायणगढ़, जनपद : मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ९५७५७९८४१२

आज असीमित खाद्य पदार्थ उपलब्ध होने पर भी यह एक विकट समस्या बन गई कि मानव देह कैसे चले? पचास, साठ वर्ष पूर्व देश में निर्धनता और अभाव था। पेट भरने को अन्न की कमी थी। आयात करना पड़ता था। निर्धन लोग ज्वार, बाजरा, मक्का, जौ आदि खाकर दिन निकालते थे। कई बार तो एक समय भूखा भी रहना पड़ता था। चाय, नाश्ता, पकवानों से परिचय नहीं था। इसके बाद भी जो मिलता वह शत-प्रतिशत शुद्ध होता था, फल-फूल, हरि सब्जियों, दालें, तेल, घी, मसाले और दूध, दही, मक्खन, छाछ सब शुद्ध और स्वादिष्ट थे अब तो बिना मिलावट के कोई खाद्य पदार्थ नहीं मिल सकता। रासायनिक खाद व कीटनाशकयुक्त अन्न व खाद्य सामग्री अनिवार्य हो गई फिर अधिक से अधिक लाभ के लोभ में हर माल नकली तथा मिलावट भरा। गाय, भैंस, बकरी भी वैसा ही दूध देती है। नकली, दूध, घी, मावा, तेल, मसाले चाहो जितना हर शहर गाँव में मिल सकता है। अधिक आय के लिए जनता के साथ छल-कपट का खेल खेला जा रहा है। ऊपर से प्रदूषण व महामारी- अन्न/जल/औषधि/विचार कहीं भी शुद्ध नहीं है। मानव चोले कैसे जी रहे, चल रहे, ईश्वर ही जानें। फिर आहार-व्यवहार, सामाजिक परम्परा में भी मिलावट है। डब्बाबन्द, बाजार से रेडीमेड व ढाबों की भरमार, आलसी और तथाकथित वीआईपी लोगों की फैशन बन गई। शाकाहार/मांसाहार धूम्रपान/शराब/ तम्बाकू किसी वर्ग/ समाज/जाति की बपोती अब नहीं रही। पता ही नहीं चलता है कि कौन, कहाँ व कैसा है? पशु-पक्षी घास-पत्ती, वनस्पति, फल खाकर हृष्ट-पुष्ट जीवित रह सकते हैं। सूखे घास/चारे से दूध व रक्त बन सकता है। शक्ति व बल मिल सकता है तो मनुष्य केवल शाकाहार पर क्यों नहीं रहे? आज तो इतना अन्न/ खाद्य पदार्थ उत्पन्न हो रहा है कि तीन साल तक अकाल पड़ जाए तो भी कोई भी भूख से न मरे। फिर भूल कहाँ हो रही है? चिन्तन करें। भूल यह है कि हम भेड़ वाली चाल चल रहे हैं। एक कुएँ में गिरे तो पीछे वाली सब उसी के पीछे कुएँ में। पाश्चात्य भौतिक/ भोगवादी चाल की नकल में फँसकर देशवासी भी नकली हो गए। गलत रहन-सहन व अभक्ष्य खान-पान एक फैशन (वीआईपी पेटर्न) बन गया है। वेद, गीता, रामायण पढ़ना, संध्या-हवन करना, दुर्व्यवहार मुक्त शाकाहार करना, सादा सरल जीवन जीना अब पिछड़ापन समझा जाता है। शरीर सुख साधनों के परिग्रह में मनुष्य, देशवासी शासन विकास के नाम से पागल से हो रहे हैं। परिणाम जंगल साफ हो गए। धरती पोली हो गई। नदियाँ खाली, कुएँ, बावड़ी, तालाब, नदी, सागर सब प्रदूषित, गन्दे हो गए। आपा-धापी, दौड़-भाग, अतिव्यस्तता में कहीं भी शान्ति व सुरक्षा नहीं दिखती। हर कोई तनाव में है। ऊपर से आतंक/आपदा/ युद्ध/ महामारी की तलवारें लटकी हुई हैं। समझ में नहीं आता है कि हम विकास कर रहे हैं या विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। यदि इसे विकास मान लें तो ऐसा विकास किस काम का जो हमारी शान्ति व सुरक्षा छीन ले या मनुष्य का जीवन अस्थिर व खतरे में पड़ जाए ईश्वर तो निष्पक्ष न्यायकारी है। वह नास्तिक को भी देता है उसने प्राणिमात्र को पृथ्वी, आकाश, हवा, प्रकाश, जल, जंगल, वनस्पति व शरीर जीवन उपहार में दिया है। हम इन्हें देव समझकर सदुपयोग करने के बजाए स्वामी बन बैठे व मनमाना उपभोग, उपयोग और दुरुपयोग कर रहे हैं तो परिणाम तो वही होना है जो हम देख रहे हैं और यही गति रही तो भविष्य अधिक विस्फोटक होना निश्चित है। आज हृदयाघात, पक्षाघात, कर्क रोग, किडनी, यकृत आदि के रोग आम हो गये हैं। उम्र व समय नियत नहीं, भारी मशीनीकरण। श्रम की कमी/प्रदूषण व मिलावट आखिर शरीर का ढाँचा कब तक साथ देगा। जीवन के साथ ज्यादती व आहार–व्यवहार में मनमानी आखिर मनुष्य को कब तक क्षमा करेगी। प्रकृति प्रकोप (भूकम्प, बाढ़, तूफान, सुनामी, सूखा, दुर्घटना, हादसे) नए–नए रूप में आ रहे हैं, क्या होगा समझ में नहीं आता? विश्व के वैज्ञानिक और कर्णवीर बैठकों में चिन्ताएँ कर एक–दूसरे पर डाल देते हैं। क्या हर प्रकार के प्रदूषण/ग्लोबल वार्मिंग पर रोक नहीं लगा सकते। क्या आहार–विहार– व्यवहार, प्रकृति से व्यवहार में ठोस परिवर्तन नहीं ला सकते? आज वायरस के भूत से विश्व भयभीत है। लाखों काल के गाल में चले गए। ईश्वर का दोष है या मानव का? इस पर गहन चिन्तन कर परिवर्तन लाना यानि प्रकृति की रक्षा व समुचित व्यवहार आवश्यक है। अन्यथा.... प्रलय निकट है। ■

योग मार्ग पर चलने वाले के लिए सूक्ष्म अनुशासन का एक भाग यह है कि एक बार बताए जाने पर उस कार्य को, जो दोषयुक्त है, नहीं करे। स्थूल अनुशासन यथा मन से बिना पाँच परीक्षाएँ किए किसी भी बात को न मानना। वाणी और शरीरादि साधनों का सदुपयोग करना, उपासना में एक भी वृत्ति न उठाना आदि। जो इस प्रकार के स्थूल सूक्ष्म अनुशासन में चलता है वही आगे योग मार्ग पर चल सकता है। इसलिए उपनिषद् में इस मार्ग पर चलना छुरे की धार पर चलने के समान बताया है।

स्वास्थ्य विशेष

पंचवटी से प्राप्त करें उत्तम स्वास्थ्य

डॉ. श्वेतकेतु शर्मा 'आयुर्वेद शिरोमणि'
पूर्व सदस्य : हिन्दी सलाहकार समिति, भारत सरकार
१०/१२, केला बाग, सावित्री सदन, बरेली (उ.प्र.)
चलभाष : ७९०६१ ७८९१५

पंचवटी वर्तमान में नासिक में स्थित है, वहाँ एक साथ पाँच वृक्ष है इसलिए इस स्थान का नाम पंचवटी है। भारतीय संस्कृति में पंचवटी, पंचगव्य, पंचामृत आदि का बहुत अधिक महत्व माना गया है। भारतीय संस्कृति की मान्यता के अनुसार **'पंचानां वटानां समाहार इति पंचवटी'** अर्थात् एक साथ जहाँ पर पाँच तरह के पौधे एक साथ लगे हुए हों, उस पंचवटी में कुल पाँच पेड़ होते हैं, जिसमें पीपल, बेल, आँवला, बरगद और अशोक सम्मिलित है उसे पंचवटी कहा गया है। इन पाँचों वृक्षों का स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त महत्व होने से पवित्र पूजनीय महत्व है। इन पाँचों वृक्षों का रोपण के साथ इनमें अनेक पोषक तत्वों से शरीर स्वास्थ्यप्रद भी रहता है :-

(१) पीपल :- पीपल एक सदैव हराभरा रहने वाला वृक्ष है, जिसे भारत में अत्यन्त पवित्र माना गया है। यह न केवल प्राणवायु देता है अपितु इसके कई महत्वपूर्ण औषधीय लाभ भी हैं। पीपल के विभिन्न भागों जैसे जड़ की छाल, तने की छाल, जड़ें, पत्ते और फल का उपयोग उच्च रक्तशर्करा के स्तर को कम करने, कब्ज और अस्थमा जैसी स्थितियों के प्रबन्धन के लिए किया जाता है। पीपल का वृक्ष सबसे अधिक प्राणवायु देने वाला वृक्ष है। इसमें प्रोटीन, फैट, कैल्शियम, लौह और मैंग्नीज जैसे कई जरूरी पोषक तत्व होते हैं। आयुर्वेद के अनुसार पीपल के वृक्ष से कई रोगों का उपचार किया जा सकता है। इस पेड़ में उपलब्ध तत्व यूरिक एसिड की समस्या को कम करने में सहयोग करते है। पीपल कई औषधीय लाभ प्रदान करता है। इसका उपयोग अस्थमा, खाँसी, यौनविकार, दस्त, कान की पीड़ा, दाँत की पीड़ा, मस्तिष्क पीड़ा, आँखों की समस्या और उदरशूल समस्याओं के उपचार के लिए किया जाता है, इसकी छाल का उपयोग पारम्परिक चिकित्सा में इसके एनाल्जेसिक और सूजनरोधी गुणों के लिए किया जाता है। पीपल के पत्ते उबालकर पीने से मधुमेह में रक्तशर्करा स्तर को नियन्त्रित रखने में सहयोग प्राप्त होता है। हृदय रोगों की सम्भावना को कम करने और हृदय को स्वस्थ रखने में सहयोग करता है। पीपल दूषित कोलेस्ट्रॉल कम करने और उच्च रक्तचाप को नियन्त्रित रखने में सहायक है। पीपल के फल का रस स्वच्छ ठण्डी ताजगी दे सकता है, पाचन क्रिया को सुधारने और पाचनतन्त्र को स्वस्थ रखने में सहयोग करता है।

(२) बेल :- आचार्य चरक और सुश्रुत दोनों ने ही बेल को उत्तम संग्राही बताया है। कफ-वात शामक मानते हुए इसे ग्राही गुण के कारण पाचन संस्थान के लिए समर्थ औषधि माना गया है। आयुर्वेद के अनेक औषधीय गुणों एवं योगों में बेल का महत्त्व बताया गया है। एकाकी बिल्व, चूर्ण, मूलत्वक्, पत्र स्वरस भी अत्यधिक लाभदायक है। बेल पुरानी पेचिश, दस्त और बवासीर में अत्यधिक लाभकारी होता हैं। इससे आँतों के रोग में लाभ होता है। इससे आँतों की कार्यक्षमता भी बढ़ती है, भूख बढ़ती है एवं इन्द्रियों को बल मिलता है। बेलपत्र एक अनूठा पौधा है और इसके कई औषधीय लाभ हैं। बेल के फल में विटामिन और खनिज जैसे विटामिन ए, सी, कैल्शियम, पोटेशियम, राइबोफ्लेविन, फाइबर और बी-६, बी-१२ और बी-१ होते हैं। ये खनिज और विटामिन शरीर के विकास के लिए आवश्यक हैं। बेल की पत्तियाँ, फल, जड़, तने का उपयोग तीनों दोषों वात, पित्त और कफ को सन्तुलित करता है। मधुमेह में बेलपत्र को खाने से अत्यधिक लाभ प्राप्त होता है। बेल कब्ज और उदरवायु समस्या को दूर करता है, हृदय रोगों के लिए भी लाभदायक है, शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में महत्वपूर्ण है, किसी प्रकार के ज्वर होने पर भी इसका उपयोग करने से लाभ मिलता है। शरीर के रक्त को शुद्ध व स्वच्छ करता है। बेल बवासीर जैसी गम्भीर समस्या का समाधान करता है।

(३) आँवला:- आँवला को अमृता, अमृतफल, आमलकी भी कहते हैं। अंग्रेजी में 'एँब्लिक माइरीबालन' या इण्डियन गूजबेरी (Indian gooseberry) तथा लैटिन में 'फ़िलैंथस एँबेलिका' (Phyllanthus emblica) कहते हैं। यह वृक्ष समस्त भारत में जंगलों तथा उद्यानों में होता है। आयुर्वेद के अनुसार हरीतकी (हरड़) और आँवला दो सर्वोत्कृष्ट औषधियाँ हैं। इन दोनों में आँवले का महत्त्व अधिक है। चरक के अनुसार शारीरिक अवनति को रोकने वाले अवस्था स्थापक द्रव्यों में आँवला सबसे प्रमुख है। आयुर्वेद ऋषियों ने इसको कल्याणकारी, अवस्था को बनाए

रखने वाला तथा माता के समान रक्षा करने वाला कहा है। इसका फल पूरा पकने के पहले व्यवहार में आता हैं। ये ग्राही, मूत्रल तथा रक्तशोधक हैं। आँवला अतिसार, प्रमेह, दाह, कँवल, अम्लपित्त, रक्तपित्त, अर्श, बद्धकोष्ठ, वीर्य को दृढ़ और आयु में वृद्धि करता हैं। मेधा, स्मरणशक्ति, स्वास्थ्य, यौवन, तेज, कान्ति तथा सर्वबलदायक औषधियों में यह सर्वप्रधान है। इसके पत्तों के क्वाथ से कुल्ला करने पर मुँह के छाले और क्षत नष्ट होते हैं। सूखे फलों को पानी में रातभर भिगोकर उस पानी से आँख धोने से सूजन इत्यादि दूर होती है। सूखे फल खूनी अतिसार, आँव, बवासीर और रक्तपित्त में तथा लौहभस्म के साथ लेने पर पाण्डुरोग और अजीर्ण में लाभदायक माने जाते हैं। आँवला के ताजे फल, उनका रस या इनसे तैयार किया पेय शीतल, मूत्रल, रेचक तथा अम्लपित्त को दूर करने वाला होता है। आयुर्वेद के अनुसार यह फल पित्तशामक है और संधिवात में उपयोगी है। ब्रह्मरसायन तथा च्यवनप्राश ये दो विशिष्ट रसायन आँवले से तैयार किए जाते हैं। शरीर को नीरोग रखने तथा अवस्था स्थापन में उपयोगी माना जाता है तथा दूसरा भिन्न-भिन्न अनुपानों के साथ भिन्न-भिन्न रोगों, जैसे हृदयरोग, वात, रक्त, मूत्र तथा वीर्यदोष, स्वरक्षय, खाँसी और श्वासरोग में लाभदायक माना जाता है। आँवला में विटामिन-सी प्रचुर मात्रा में होता है, विटामिन सी अधिक मात्रा में होने से मुरब्बा बनाने में भी सारे विटामिन का नाश नहीं हो पाता। आँवले का मुरब्बा इसीलिए गुणकारी है। आँवले को सुखाकर और कूट पीसकर आहार में उपयोग करने पर लाभकारी होता है । आँवले के अचार में भी विटामिन सी प्रायः पूर्ण रूप से सुरक्षित रह जाता है ।

(४) बरगदः– बरगद के पेड़ की पत्तियाँ बड़ी, चमड़े जैसी चमकदार, हरी और अण्डाकार होती हैं । अधिकतर अंजीर की तरह पत्ती की कली दो बड़े शल्कों से ढँकी होती है। बरगद बहुवर्षीय विशाल वृक्ष है। इसे 'वट' और 'बड़' भी कहते हैं। यह एक स्थलीय द्विबीजपत्री एवं संपुष्पक वृक्ष है। इसका तना सीधा एवं कठोर होता है। इसकी

शाखाओं से जड़े निकलकर हवा में लटकती हैं तथा बढ़ते हुए धरती के भीतर घुस स्तम्भ बन जाती हैं। इन जड़ों को बरोह या प्राप जड़ कहते हैं। इसका फल छोटा गोलाकार एवं लाल रंग का होता है। इसके अन्दर बीज पाया जाता है। इसका बीज बहुत छोटा होता है किन्तु इसका पेड़ बहुत विशाल होता है। इसकी पत्ती चौड़ी एवं लगभग अण्डाकार होती है। इसकी पत्ती, शाखाओं, कलिकाओं को तोड़ने से दूध जैसा रस निकलता है जिसे लेटेक्स अम्ल कहा जाता है। **दस्त में लाभः** नए पत्तों को पानी में भिगोकर आप एक एस्ट्रिंजेंट बना सकते हैं जो जी आई ट्रैक्ट की मरम्मत और सूजन के लिए लाभप्रद होता है। **दाँतों में लाभ**– दाँतों से जड़ों को चबाने से मसूढ़ों से खून आना, दाँतों की सड़न और मसूढ़ों के रोगों के समाधान में सहयोग मिलता है। बीज दुर्गन्ध को दूर करने में सहायता करते हैं और प्राकृतिक दन्तधावन (टूथपेस्ट) की तरह काम करते हैं। **जड़ के शुद्धिकरण गुण**– मुँह की अधिकतर स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान और उनका उपचार करने में सहयोग करते हैं। **रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि**– बरगद के पेड़ की छाल रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने का एक विश्वसनीय स्रोत है। **सूजन रोधी** – बरगद पेड़ के रस में सूजन-रोधी प्रभाव होता है और इसका उपयोग गठिया के उपचार के लिए किया जाता है। यह सूजन को कम करता है। **अवसाद में लाभकारी**– अवसाद को दूर करता हैं, बरगद के पेड़ के फल से निकला अर्क मस्तिष्क में सेरोटोनिन के स्तर को बढ़ाता है। कोलेस्ट्रॉल कम करता हैः शरीर में 'अच्छा' और 'दूषित' दोनों प्रकार के कोलेस्ट्रॉल होते हैं। बरगद के पेड़ की छाल अच्छे कोलेस्ट्रॉल की उच्च मात्रा को बनाए रखते हुए प्रभावी रूप से दूषित कोलेस्ट्रॉल को कम करती है। **उच्च रक्तशर्करा :** मधुमेह के उपचार के लिए जड़ों के काढ़ा का प्रयोग लाभदायक होता है।

(५) अशोक – अशोक का वृक्ष छायादार वृक्ष होता है। इसके पत्ते ८-९ इंच लम्बे और दो-ढाई इंच चौड़े होते हैं। इसके पत्ते प्रारम्भ में ताम्बे जैसे रंग के होते हैं इसीलिए इसे **'ताम्रपल्लव'** भी कहते हैं। अशोक के पेड़ में प्रचुर मात्रा में टैनिन, फ्लेवोनोइड्स और ग्लाइकोसाइड्स होते हैं जो पूरी तरह से गर्भाशय के लिए शक्तिवर्धक के रूप में काम करते हैं। अशोक महिलाओं में विभिन्न स्त्रीरोग और मासिक धर्म सम्बन्धी समस्याओं जैसे भारी, अनियमित और पीड़ादायक मासिक धर्म को प्रबन्धित करने

में सहयोग करता है। पेट की पीड़ा और ऐंठन से राहत पाने के लिए इसे भोजन के बाद दिन में दो बार चूर्ण या कैप्सूल के रूप में लिया जा सकता है। अशोक के पेड़ की छाल या पत्तियों का सेवन करने पर पेट से कीड़े निकालने में सहयोग मिलता है। पीड़ा और सूजन से राहत मिलती है। अशोक के पेड़ की छाल में एण्टी-फंगल, एण्टी-बैक्टीरियल और पीड़ा निवारक गुण भी होते हैं। अशोक के पत्तों में हाइपोग्लाइसेमिक गुण भी पाया जाता है, जो रक्त में शर्करा के स्तर को कम करने में सहयोग करता हैं।

नोट–उपर्युक्त **'पंचवटी से प्राप्त करें उत्तम स्वास्थ्य'** लेख ज्ञानार्जन के लिए प्रस्तुत है इसका चिकित्सकीय प्रयोग करने से पूर्व किसी आयुर्वेद चिकित्सक से परामर्श करना आवश्यक है। ■

आर्यसमाज का प्रचार कैसे बढ़े? कुछ सुझाव

अशोक कुमार गुप्ता

राघवेन्द्र नगर कॉलोनी, शिवपुरी (म.प्र.)
चलभाष : ९७५५५८४९०१

वैदिक सिद्धान्तों के ज्ञाता, दृढ़ आर्यसमाजी (आर्य) बनाने की फैक्ट्री हमारे गुरुकुल है। गुरुकुलों से शिक्षित- शास्त्री, आचार्य, विद्वान्-उपदेशक, प्रचारक बनकर आर्यसमाज का प्रचार करते हैं। गुरुकुल दान पर ही आश्रित होते हैं। शासन द्वारा उन्हें कोई भी अनुदान राशि नहीं दी जाती है। अर्थाभाव के कारण गुरुकुलों का संचालन बहुत कठिन कार्य हो गया है। हम सभी का यह पावन कर्तव्य (धर्म) है कि वैदिक गुरुकुलों को दान, सहयोग देकर सक्षम, समर्थ, उच्च स्तरीय बनाये। गुरुकुलों के आर्ष पाठ्यक्रम में एकरूपता हो। सक्षम आर्यजन अपने-अपने क्षेत्र से निर्धन प्रतिभावान छात्रों को अपने व्यय पर गुरुकुल में पढ़ने भेजें। प्रतिभावान निर्धन परिवारों के छात्रों को गुरुकुल में निःशुल्क पढ़ाया जावें। सनातन धर्म और वेदों की रक्षा केवल वैदिक गुरुकुलों से ही हो सकती है। आर्ष पाठ्य विधि के अलावा कुछ उच्च स्तरीय नये गुरुकुल (पूर्णतः आवासीय विद्यालय) गुरुकुल कुरुक्षेत्र, आचार्य कुलम् हरिद्वार की तरह सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम के खोले जावें जहाँ बालकों की दिनचर्या गुरुकुलीय हो और शिक्षा आधुनिक पाठ्यक्रम की हो जिससे वैदिक संस्कारों के छात्र डॉक्टर, इंजीनियर, प्रशासनिक अधिकारी, प्रोफेसर, वकील, जज बनकर आर्य समाज के प्रचार में सहयोगी बन सकेगें। यह दायित्व डी.ए.वी. प्रबन्ध समिति दिल्ली ने लेना चाहिए।

वैदिक धर्म के विद्वानों, प्रचारकों, उपदेशकों, वानप्रस्थी, संन्यासियों को आर्य समाज द्वारा संरक्षण देना चाहिए। यह सभी जीवन पर्यन्त कष्ट, अपमान, अभाव, तिरस्कार (अपने हिन्दू भाइयों और अन्य मतावलम्बियों के द्वारा) सहकर भी वैदिक धर्म का प्रचार करते है। वह रोगावस्था, वृद्धावस्था, पारिवारिक संकटों में व्यथित रहे यह आर्य समाज और हम सभी आर्यजनों के लिए शर्म की बात है। वैदिक विद्वानों, साहित्यकारों, प्रचारकों, संन्यासियों के जीवन की सम्पूर्ण दायित्व आर्य समाज को लेनी होगी। उनके परिवार को भी आर्थिक संरक्षण देना होगा तभी कोई नया प्रचारक, उपदेशक, संन्यासी बनेगा अन्यथा आर्य समाज में इनका अभाव हो रहा है। आर्य समाज की प्रान्तीय सभायें, सार्वदेशिक सभा, परोपकारिणी सभा सभी को मिलकर एक स्थायी अक्षय कोष करोड़ों रूपये का बनाना चाहिए जिस राशि में से प्रचारकों, विद्वानों, आर्य संन्यासियों को रोगावस्था, वृद्धावस्था में, उनकी पारिवारिक कठिनाइयों में समय-समय पर सहायता राशि दी जावें। ऋषि उद्यान अजमेर, आर्यवन रोजड़, वेद मन्दिर मथुरा, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, गुरुकुल गौतमनगर, वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) में अच्छे स्तर के वानप्रस्थ, संन्यास आश्रम (वृद्धाश्रम) संचालित किये जावें जहाँ हमारे आर्य वानप्रस्थी, संन्यासियों, विद्वानों, प्रचारकों की वृद्धावस्था में सेवा-सुश्रूषा हो सकें। वृद्धावस्था में जिनका कोई पारिवारिक सहारा नहीं है उनकी पूरी देखरेख, सेवा सुश्रूषा, इलाज की निःशुल्क व्यवस्था आश्रम में हो।

हमारी प्राचीन धरोहर हमारा वैदिक साहित्य है। यह हमारी पूंजी है, इसको सम्भालकर सुरक्षित रखना होगा। आर्यसमाज के दिवंगत विद्वानों द्वारा लिखा गया वैदिक साहित्य विलुप्त हो रहा है, वह अनुपलब्ध है। उसे ढूँढ़कर सुरक्षित रखना होगा। परोपकारिणी सभा द्वारा अजमेर में, सार्वदेशिक सभा द्वारा दिल्ली में वृहद् केन्द्रीय पुस्तकालय बनाकर सम्पूर्ण वैदिक साहित्य को संग्रहीत कर सुरक्षित रखा जावें तथा उसे पुनः प्रकाशित किया जावें। दिवंगत भजनोपदेशकों द्वारा लिखे गये सारगर्भित भजनों को सुरक्षित, संग्रहीत रखा जावें। आर्य समाज का प्रचार वैदिक साहित्य के बिना असम्भव है। भजनों (भक्ति संगीत) के द्वारा सामान्यजन में वैदिक विचारधारा को समझाना आसान होता है। वैदिक धर्म प्रचार के लिए सोशल मीडिया, आधुनिक सूचना तकनीकी का उपयोग भी प्रभावी होगा। ■

ऋषि दयानन्द के चरणों में समर्पित श्रद्धांजलि

■ महर्षि दयानन्द दिव्य महापुरुष थे। उन्होंने ईसाई मत और इस्लाम के हमलों से देश की रक्षा की। आर्य समाज देश की एकता के लिए कार्य कर रहा है। **–अनन्त शयनम् आय्यंगर**

■ स्वामी दयानन्द भारतवर्ष के सुविख्यात पुरुषों की श्रेणी में एक उज्ज्वल नक्षत्र थे। **–एम. रंगाचार्य**

■ स्वामी दयानन्द इतने अच्छे और विद्वान् व्यक्ति थे कि प्रत्येक धर्म के अनुयाइयों के लिए सम्मान के पात्र थे। **–सर सैयद अहमद खाँ**

■ यह निश्चित है कि शंकराचार्य के पश्चात् दयानन्द से अधिक संस्कृतज्ञ, गम्भीर अध्यात्मवेत्ता, आश्चर्यजनक वक्ता और बुराई का निर्भय प्रहारक भारत को प्राप्त नहीं हुआ। **–मैडम ब्लेवेट्स्की**

■ स्वामी दयानन्द एकेश्वरवादी वेद पर अपने सिद्धान्तों को मानने वाले, प्रगति समर्थक तथा देशोद्धारक थे। **–मोनियर विलियम्स**

देवकुमार प्रसाद आर्य
भूतपूर्व प्रधान : आर्य समाज

५०, फौजा बागान, बारीडीह, जमशेदपुर (झारखण्ड)
चलभाष : ८९६९५४२३३९

२५ यज्ञवेदियों पर ७४ यजमान दम्पत्तियों के द्वारा की गई चतुर्दिवसीय यज्ञ की पूर्णाहुति

वेद स्वाध्याय व यज्ञ जीवन का अंग है : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी

आर्य समाज धामनोद व सैलाना, जिला रतलाम, मध्यप्रदेश के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक २३ से २७ अगस्त तक आयोजित चार दिवसीय वेदकथा के अन्तिम दिन के कार्यक्रम में वैदिक प्रवक्ता के रूप में नर्मदापुरम् से पधारे अन्तर्राष्ट्रीय मूर्धन्य वैदिक विद्वान् आचार्य आनन्द जी पुरुषार्थी ने वेदकथा कार्यक्रम व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष आहुतियों के साथ ७४ यजमानों का सामूहिक यज्ञ सम्पन्न करवाया व उपदेश में कहा कि प्रत्येक गृहस्थी को प्रतिदिन संध्या, यज्ञ व स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए। हम भारतीयों के जीवन निर्माण में संस्कारों का बड़ा महत्व है। ऋषियों ने १६ संस्कारों का विधान किया। वास्तव में ये १६ संस्कार नवागत सन्तान को श्रेष्ठ साँचे में ढालकर उसे सुसंस्कृत बनाने की एक प्रक्रिया का नाम है। इन १६ संस्कारों के माध्यम से शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के सुसंस्कृत हो जाने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है और श्रेष्ठ सन्तान के निर्माण के माध्यम से समाज व राष्ट्र का भी उत्तमता से निर्माण होता है। वर्तमान में सम्पूर्ण संसार केवल इसीलिए दुःखी है कि उसने भारत की इस संस्कार प्रणाली को अपनाने से बहुत दूरी बना ली है।

इस श्रेष्ठ प्रक्रिया को पूर्ण करने के लिए हमारे ऋषि पूर्वजों ने जिन १६ संस्कारों का विधान किया है, उनके नाम इस प्रकार हैंः- १. गर्भाधान, २. पुंसवन, ३. सीमन्तोन्नयन, ४. जातकर्म, ५. नामकरण, ६. निष्क्रमण, ७. अन्नप्राशन, ८. चूड़ाकर्म, ९. कर्णवेध, १०. उपनयन, ११. वेदारम्भ, १२. समावर्तन, १३. विवाह, १४. वानप्रस्थ, १५. संन्यास १६. अन्त्येष्टि।

साथ ही बताया कि श्रीकृष्ण प्रतिदिन यज्ञ करने वाले, वेदों के विद्वान्, महापराक्रमी, नीतिमान्, दुष्टों को दण्ड प्रदाता, सज्जनों के रक्षक थे उन्हें माखन चोर, रास-रचैया, गोपियों के कपड़े चुराना ऐसे झूठे लाँछन लगाकर उनका चरित्रहनन नहीं करना चाहिए। कार्यक्रम में बिजनौर से पधारे सुविख्यात भजनोपदेशक मान्यवर पण्डित भीष्म जी ने भी भजनों के माध्यम से बताया कि होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से, जल्दी प्रसन्न होते है भगवान यज्ञ से! जो व्यक्ति स्वर्ग की कामना करता है, सुख, धन, ऐश्वर्य चाहता है तो वह प्रतिदिन अपने घर में यज्ञ करना प्रारम्भ करे। कथा के समापन दिवस पर सैलाना, रतलाम, खाचरौद, नागदा सहित आसपास के कई ग्रामों के श्रद्धालुओं ने इस वेदकथा का श्रवण कर पुण्य लाभ प्राप्त किया।

उपजेल सैलाना पहुँचे आचार्य श्री

पूज्य आचार्य श्री आनन्द जी पुरुषार्थी ने सैलाना उपजेल में समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों व बंदियों को वेद के अमृत वचन व उपदेश प्रदान करते हुए कहा कि आपके किये बुरे कर्मो का परिणाम आपको स्वयं ही भुगतना पड़ता है, ईश्वर की न्याय व्यवस्था में क्षमा नहीं होती इसलिए कोई भी कार्य करे तो सोच विचार कर करे, और उसके दीर्घकालीन परिणाम पर विचार करे तो न केवल आप बुराइयों से बचेंगे अपितु संसार में भी अपयश व दण्ड से बच पायेंगे। कार्यक्रम में उपजेल अधीक्षक रावत जी, भीष्म जी आर्य, शेखर जी आर्य, रवि जी कसेरा, अशोक जी सोलंकी की सहभागिता रही। **-विकास शर्मा, धामनोद (रतलाम)**

उपनयन व वेदारम्भ संस्कार के साथ गुरुकुल उद्घाटन समारोह सम्पन्न

दिनांक २९ अगस्त २०२४ को स्वामी श्रद्धानन्द वैदिक गुरुकुल आश्रम, बिछिया, जिला- डिण्डौरी, मध्यप्रदेश के प्रेरणास्रोत, मार्गदर्शक पूज्य स्वामी ऋतस्पति जी परिव्राजक (निदेशक- आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम्) के ब्रह्मत्व में ब्रह्मचारियों का उपनयन, वेदारम्भ संस्कार एवं नवनिर्मित छात्रावास उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य चन्द्रेश जी (गांधीधाम, कच्छ, गुजरात), आचार्य भीमदेव जी नैष्ठिक (मण्डला), आचार्य आयुष जी शर्मा (नर्मदापुरम्), आचार्य सतेन्द्र शास्त्री (जबलपुर), आचार्य सौरभ शास्त्री एवं श्री प्रभाकर शास्त्री ने संस्कारों का महत्व प्रस्तुत कर आशीर्वचन प्रदान कर सभी का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम का संचालन आचार्य धीरेन्द्र पाण्डेय ने किया एवं गुरुकुल परिवार के सभी सदस्यों ने उत्साह से व्यवस्थाओं के साथ सभी अतिथियों का भव्य स्वागत किया। सर्वांगीण विकास और चरित्र निर्माण केन्द्र गुरुकुल में सहयोग प्रदान कर पुण्य के भागी बनें।

-आचार्य धीरेन्द्र पाण्डेय, जबलपुर

वेदकथा अमृतवर्षा का समापन

आर्य समाज धानमण्डी, रतलाम, मध्यप्रदेश के तत्वावधान में प्रमुख वैदिक प्रवक्ता के रूप में नर्मदापुरम से पधारे अन्तर्राष्ट्रीय मूर्धन्य वैदिक विद्वान् आचार्य आनन्द जी पुरुषार्थी तथा बिजनौर से पधारे सुविख्यात भजनोपदेशक मान्यवर पण्डित भीष्म जी के मुखारविन्द से और आर्य समाज इन्दिरा नगर, रतलाम के धर्माचार्य पारसनाथ जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ के द्वारा दिनांक २० अगस्त से प्रारम्भ हुई वेदकथा अमृतवर्षा का २२ अगस्त को रात्रि सत्र में अर्थ सहित वैदिक संध्योपासना व जीवन निर्माण विषयक उत्तम प्रेरणादाई उपदेश के साथ हर्षोल्लासपूर्वक समापन हुआ। आयोजनकर्ताओं की ओर से विद्वानों, उपस्थित वानप्रस्थियों तथा वैदिक संसार प्रकाशक का यथोचित सम्मान किया गया। आचार्य जी और समाज पदाधिकारियों ने वैदिक संसार विशेषांक को प्रदर्शित करते हुए उपस्थितों से प्राप्त करने का अनुरोध किया।

आँखों देखी - सुखदेव शर्मा

वेदप्रचार सप्ताह का सफलतापूर्वक समापन हुआ

श्रावणी उपाकर्म (रक्षाबन्धन) से प्रारम्भ होकर जन्माष्टमी तक वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन इन्दौर नगर की समस्त आर्य समाजों और आर्योदय वैदिक पर्व समिति के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक १९ से २७ अगस्त तक विभिन्न आर्य समाजों व परिवारों में आयोजित किया गया जिसका सफलतापूर्वक समापन आर्य समाज मोहता नगर, भागीरथपुरा, इन्दौर में मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्रीमान् प्रकाश जी आर्य की गरिमामयी उपस्थिति में २७ अगस्त को किया गया। प्रमुख वक्ता मुनि सत्यव्रत जी, मुख्य भजनोपदेशक नीरज जी, आचार्य प्रणवीर जी शास्त्री, आचार्य चन्द्रमणि जी याज्ञिक, आचार्य रामपाल जी शास्त्री सहित समस्त आर्य समाजों व आर्योदय वैदिक पर्व समिति के प्रधान और पदाधिकारी उपस्थित रहे। मुनि सत्यव्रत जी तथा श्री प्रकाश जी ने विशेष रूप से श्री कृष्ण जी के उज्ज्वल चरित्र पर प्रकाश डाला। गणमान्य महानुभावों के स्वागत, सम्मान, अभिनन्दन क्रम में वैदिक संसार मासिक पत्रिका के प्रकाशक सुखदेव शर्मा का भी स्वागत-अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम का संचालन व आभार प्रदर्शन मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री तथा आर्य समाज मोहता नगर प्रमुख प्रतापसिंह जी आर्य द्वारा किया गया।

आँखों देखी - सुखदेव शर्मा

हिन्दी भाषा हमारा सम्मान है

आर्य समाज नीमच, मध्यप्रदेश के तत्वावधान में दि. १४ सितम्बर २०२४ शनिवार को सायंकाल ५.३० बजे से हिन्दी दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसके मुख्य अतिथि श्री सुरेन्द्रसिंह शक्तावत, प्राचार्य ज्ञानोदय महाविद्यालय नीमच ने हिन्दी भाषा पर अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि हिन्दी भाषा हमारा सम्मान हैं इसे और पोषित करने की आवश्यकता है। हिन्दी भाषा विश्व की द्वितीय सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिन्दी भाषा को अपने दैनिक जीवन में उचित स्थान प्रदान करें। इससे पूर्व हिन्दी चिन्तक, विचारक श्री किशोर जी जेवियर का शाल,श्रीफल के साथ हिन्दी **'आर्य रत्न'** उपाधि से सम्मान किया गया। सम्मान पत्र का वाचन कार्यक्रम सह-संयोजक चन्द्रप्रकाश शर्मा ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री पी.सी. शर्मा से.नि. हिन्दी व्याख्याता ने की। आपने भी अपने

भाव प्रकट करते हुए हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने पर बल दिया। स्वागत उद्बोधन आर्य समाज नीमच के संयोजक मनोज स्वर्णकार ने हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज द्वारा किये गए कार्यों को विस्तार से बताया। इस अवसर पर आर्यसमाज परिवारों के ४५ प्रतिभावान बच्चों को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती मंजुला धीर ने किया। आभार प्रदर्शन संयोजक सुरेशचन्द्र शर्मा ने किया।

-मनोज स्वर्णकार, नीमच

निर्वाचन सम्पन्न

आर्यसमाज मान टाउन, सवाई माधोपुर (राज.) के निर्वाचन दिनांक २२ सितम्बर २०२४ को सम्पन्न किये जाकर निम्नानुसार कार्यकारिणी का गठन किया गया। **संरक्षक:** डॉ. आर.पी. गुप्ता, **प्रधान :** श्री रामजीलाल आर्य, **उपप्रधान :** श्री नाथूलाल जी सैनी, **मन्त्री :** श्री गोविन्द माहौर, **उपमन्त्री :** श्री वेदप्रकाश गुप्ता, **कोषाध्यक्ष :** श्री सोमेशचन्द्र दरगढ़। ६ सदस्य अन्तरंग सदस्य व तीन सदस्य का प्रतिनिधि सभा के लिए चयन किया गया।

-ब्रह्मप्रकाश शर्मा, पूर्व मन्त्री

अनुपम कृति

अनुपम कृति नारियाँ ईश की
वेदों में भी वन्दन है।
इन्हें पाँव की जूती न समझो
ये माथे का चन्दन हैं।

अन्तरिक्ष भी भेद सकें ये
जाने भू का जन-जन हैं। इन्हें पाँव की...

युद्ध में देकर बलि पति की
करें नहीं ये क्रन्दन हैं। इन्हें पाँव की...

यदि देती ये अग्नि परीक्षा
बन जाती फिर कुन्दन हैं। इन्हें पाँव की...

कर्तव्य को फैलाये बाँहें
कहें नहीं ये बँधन हैं। इन्हें पाँव की...

ये खेलती अंगारों से
हम करते अभिनन्दन हैं। इन्हें पाँव की...

देश धर्म की खातिर ये तो
तुच्छ कहें तन मन धन हैं। इन्हें पाँव की...

इस माटी में उपजी हैं ये
कहती बस जन गण मन हैं। इन्हें पाँव की...

जिस कुल की ये वंशज होती
कहते देहरी धन-धन हैं। इन्हें पाँव की...

नहीं चाहती हीरा माणिक
केवल विद्या ही धन हैं। इन्हें पाँव की...

त्रेतायुग की कौशल्या हैं
और पुत्र रघुनन्दन हैं। इन्हें पाँव की...

ये भारत की पन्ना धाय
शीश झुका कर वन्दन हैं। इन्हें पाँव की...

पुष्पा शर्मा
मोदी नगर, जिला गाजियाबाद (उ.प्र.)
चलभाष : ९०४५४४३१४१

श्रावणी उपाकर्म एवं वेदप्रचार आयोजन का समापन

ईश्वर की असीम तथा महती कृपा व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की सद्प्रेरणा से आर्य समाज मन्दिर मल्हारगंज, इन्दौर, मध्यप्रदेश के तत्वावधान में पूर्व वर्षों की भाँति इस वर्ष भी वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। वेदप्रचार का यह आयोजन मात्र एक सप्ताह ही नहीं अपितु एक मास पर्यन्त आयोजित किया गया। वेदप्रचार का अभियान आर्य समाज मल्हारगंज के धर्माचार्य आचार्य चन्द्रमणि याज्ञिक जी के ब्रह्मत्व में दिनांक १ से ३१ अगस्त २०२४ तक प्रातः व सायं दोनो समय यज्ञ, भजन एवं प्रवचनों के द्वारा वेद व वैदिक सिद्धान्त तथा आर्यसमाज का परिचय जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ आर्यसमाज मल्हारगंज के मन्त्री डॉ. विनोद आहलुवालिया जी के निवास स्थान पर यज्ञ व सत्संग से प्रारम्भ हुआ। तत्पश्चात् आचार्य याग्निक जी के सान्निध्य में विभिन्न धार्मिक संस्थाओं एवं पौराणिक मन्दिरों, परिवारों में यज्ञ एवं वेदप्रचार किया गया।

वेदप्रचार की श्रृंखला में इन्दौर के सुप्रसिद्ध हरसिद्धि मन्दिर में श्रीमती शशि गुप्ता के सानिध्य में यज्ञ किया गया। इस अवसर पर आचार्य याग्निक जी ने वेदों का परिचय देते हुए कहा कि सबसे प्राचीन संस्कृति वैदिक संस्कृति है, यही सनातन संस्कृति है संसार में विकसित अन्य सभ्यताएँ मिट जाती हैं परन्तु वैदिक संस्कृति नहीं मिटती क्योंकि सभ्यताओं को विकसित करने वाला कोई मनुष्य होता है किन्तु वैदिक संस्कृति ईश्वरिय है अतः हमें वैदिक संस्कृति को आत्मसात् करना चाहिए। जो मनुष्य वैदिक संस्कृति से विमुख हो जाता है वह पतन को प्राप्त हो जाता है। इस अवसर पर उपस्थित सज्जनों ने भी यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की। आर्यसमाज के सैद्धान्तिक प्रचार-प्रसार हेतु सभा प्रधान प्रकाश जी आर्य की पुस्तक वितरीत की गई। इस अवसर पर इन्दौर सम्भाग के उपमन्त्री श्री प्रतापसिंह जी आर्य भी उपस्थित रहे।

इसी क्रम में १९ अगस्त को श्रावणी उपाकर्म के शुभ अवसर पर उपस्थित अनेक सज्जनों, बालक, युवाओं ने यज्ञोपवित परिवर्तन कर यज्ञ में आहुति प्रदान की तथा तीनों ऋण देवऋण, पितृऋण, एवं ऋषिऋण से उऋण होने के लिए आर्षग्रन्थों के स्वाध्याय का संकल्प लिया। इस अवसर पर हैदराबाद सत्याग्रह के बलिदानियों को भी स्मरण किया गया। उनकी नामावली को श्री रमेशचन्द्र जी चौहान द्वारा वाचन किया गया तथा इस सत्याग्रह के सत्याग्रही के सुपौत्र न्यायमूर्ति वीरेन्द्रदत्त जी ज्ञानी ने सत्याग्रह के इतिहास पर प्रकाश डाला व युवाओं को सत्याग्रहों से प्रेरणा प्राप्त करने का आह्वान किया। इस अवसर पर श्री उमरावसिंह भाटी एवं आचार्य याग्निक जी का भी उद्बोधन हुआ। इस अवसर पर आर्यजगत् की वैदिक सैद्धान्तिक सुप्रसिद्ध पत्रिका वैदिक संसार के प्रकाशक श्री सुखदेव शर्मा जी एवं उनके सुपुत्र प्रितेश शर्मा उपस्थित रहे। इसी प्रकार से लगातार निम्न परिवारों में यज्ञ एवं वेद प्रचार-प्रसार किया गया। उपरोक्त कार्यक्रमों में श्री उमेश गुप्ता जी, अनीता गुप्ता, श्री हरिसिंह जी, श्री नीलमसिंह जी, श्रीमती शशि गुप्ता, डॉ. दक्षदेव जी गौड़ प्रधान आर्य समाज मल्हारगंज, श्रीमती विमला गौड़, श्री रमेशचन्द्र जी चौहान वरिष्ठ उपप्रधान मल्हारगंज, प्रद्युम्न जी चौहान, डॉ. विनोद जी आहलुवालिया, श्रीमती गीता आहलूवालिया, श्री उमरावसिंह जी भाटी, डॉ. अखिलेशचन्द्र जी शर्मा, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्रीमती मनोरमा आर्या जी, श्री गेन्दालाल जी, स्नेहल जी, वेदप्रकाश जी, रामप्रसाद जी, भाग्यश्री, यामिनीसिंह उपस्थित रहे। उपरोक्त कार्यक्रमों में प्रयास यह किया गया कि अधिक से अधिक संख्या में लोग आर्य समाज से जुड़े, वैदिक सिद्धान्तों को जाने इसी उद्देश्य को लेकर जो पौराणिकजन है उनके बीच में जाकर कार्यक्रम किए गए। बहुत सारे ऐसे लोग थे जिनको आर्य समाज के बारे में जानकारी नहीं थी। उन लोगों को आर्यसमाज से जोड़ा गया। कुछ साहित्य भी भेंट किया गया। साथ ही साथ यज्ञ के प्रति उनको उत्साहित कर, पाँच हवनकुण्ड, यज्ञपात्र दिए गए। उनमें से कुछ लोग रविवार सत्संग में भी उपस्थित हुए। जिन परिवारों में श्रावणी पर्व वेदप्रचार के अन्तर्गत सत्संग का आयोजन किया गया उनका और उन सभी महानुभाव का जिन्होंने तन मन धन एवं समय का योगदान देकर हम सभी का उत्साहवर्धन किया का हृदय से धन्यवाद एवं आभार।

● **आचार्य चन्द्रमणि याग्निक**
पुरोहित आर्य समाज, मल्हारगंज, इन्दौर

दयानन्द आश्रम, बड़वानी पर सातवाँ मासिक अतिथि यज्ञ, जन्मदिवस, प्रथम जन्मवर्षगाँठ तथा चूड़ाकर्म संस्कार के संलग्न सम्पन्न किया गया

महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम, बड़वानी (म.प्र.) पर प्रतिमास प्रथम शनिवार सायंकालीन और रविवार प्रातःकाल मासिक अतिथि यज्ञ के अन्तर्गत सितम्बर मास का अतिथि यज्ञ मुनि सत्यव्रत जी दर्शनाचार्य, के मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया गया। ७ सितम्बर, २०२४ शनिवार को सायंकाल ५ बजे सायंकालीन वृहद् यज्ञ के संलग्न पुत्रवधू श्रीमती हर्षिता शर्मा का जन्मदिवस, जन्मदिवस विषयक विशेष वेदमन्त्रों की आहुतियाँ प्रदान कर मनाया गया। यज्ञ व संध्योपासना पश्चात् पुत्रवधू को कल्याणकारी मंगलवचनों के साथ पुष्पवर्षा कर शुभाशीष / शुभकामनाएँ उपस्थितों के द्वारा प्रदान की गई। भोजनावकाश पश्चात् रात्रिकालीन सत्र में मुनि जी व उपस्थित महानुभावों के प्रेरणादाई प्रवचन/उद्बोधन सम्पन्न हुए। जिला-शाजापुर के आर्य समाज बेरछा के प्रधान श्री आनन्दीलाल जी नाहर व आर्य समाज झोकर के प्रधान श्री रमेशचन्द्र जी पाटीदार अधिवक्ता भी अतिथि स्वरूप उपस्थित रहे।

द्वितीय दिवस ८ सितम्बर रविवार को प्रातःकाल मुनि सत्यव्रत जी के ब्रह्मत्व में साप्ताहिक यज्ञ-सत्संग के संलग्न सुपौत्र देवप्रज्ञ सुपुत्र प्रितेश शर्मा व श्रीमती प्रज्ञा शर्मा की प्रथम जन्मवर्षगाँठ विशिष्ट वेदमन्त्रों की आहुतियाँ प्रदान कर मनाई गई तथा इस अवसर पर देवप्रज्ञ का चूड़ाकर्म (मुण्डन) संस्कार भी सम्पन्न किया गया। यज्ञ व संस्कार सम्पन्न होने के पश्चात् उपस्थितों ने बालक को शुभाशीष प्रदान किया। अधिवक्ता श्री रमेशचन्द्र जी, श्री आनन्दीलाल जी नाहर के उद्बोधन के पश्चात् यज्ञब्रह्मा मुनि जी के प्रेरणादाई प्रवचन सम्पन्न हुए। विद्यार्थी प्रवचन के अन्तर्गत आश्रम निवासरत बालक मांगीलाल टैगोर ने **'संगतीकरण का प्रभाव'** विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। मांगीलाल टैगोर व पूर्व में प्रवचन प्रस्तुत कर चुके विद्यार्थी प्रज्ञा बमनका, रमिला सोलंकी, मोनिका डावर, रानी बघेल, दीपिका मुजाल्दा का अभिनन्दन अतिथियों के करकमलों द्वारा **'आर्य मान्यताएँ'** पुस्तक भेंट कर किया गया।

श्री रामभरोस जी विश्वकर्मा पीपलरांवा, जिला-शाजापुर व गंधवानी, जिला-धार से श्री बसन्तीलाल जी शर्मा व धीरेन्द्र जी शर्मा भी उपस्थित रहे। आपको भी आर्य मान्यताएँ पुस्तक भेंटकर वैदिक पथ पर चलने की प्रेरणा प्रदान की गई। शान्तिपाठ पश्चात् दाल-बाफले, लड्डू आदि के भोजन के साथ मधुर स्मृतियों को संजोए हुए आयोजन सम्पन्न हुआ। अतिथि स्वरूप सेवा प्रदान करने के अभिलाषी आर्यजन सादर आमन्त्रित हैं। कृपया सम्पर्क करें-

सुखदेव शर्मा, ९४२५०६९४९१

(चित्र देखें पृष्ठ संख्या ३५ पर)

दयानन्द आश्रम बड़वानी पर सितम्बर मास के मासिक अतिथि यज्ञ के अतिथि महोदय का संक्षिप्त परिचय

- **नाम :** मुनि सत्यव्रत जी
- **पिता का नाम :** स्मृति शेष श्री सुरेश जी
- **माता का नाम :** श्रीमती ललिता देवी जी
- **जन्म दिनांक :** १९/१/१९६८
- **जन्म स्थान :** मसूरी, जिला देहरादून, उत्तराखण्ड।
- **शैक्षणिक योग्यता** : एम एस सी, एम ए (पत्रकारिता), षड्दर्शनाचार्य, आयुर्वेद अध्येता।
- **गृहस्थ जीवन :** विवाह उपरान्त डेढ़ वर्ष की अवधि में बिना सन्तान वर्ष २००० से पूर्व धर्मपत्नी के निधन पश्चात् विरक्त जीवन।
- **संक्षिप्त जीवन यात्रा व आर्य समाज में पदार्पण :** देहरादून में निजी पत्रकारिता का कार्य किया। केन्द्रीय विद्यालय आसाम में अध्यापन सेवा प्रदान की किन्तु आध्यात्मिकता में बाधा व स्वास्थ्य की प्रतिकूलता आदि कारणों से सेवा छोड़कर वापसी घर लौट आए। आध्यात्मिक और स्वाध्याय प्रवृत्ति के कारण गायत्री परिवार शान्तिकुँज, हरिद्वार से जुड़कर गायत्री मन्त्र दीक्षा ली। रामकृष्ण परमहंस मिशन से भी जुड़े वहाँ से रोम्या रोला द्वारा रचित रामकृष्ण परमहंस की जीवनी प्राप्त कर उसे पढ़ा। उस जीवनी में रामकृष्ण परमहंस के समकालीन आध्यात्मिक विभूतियों महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, ब्रह्मसमाज के केशवचन्द्र सेन, राधास्वामी आदि के विषय में तथा आर्य समाज के विषय में भी उल्लेख होने से आप महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की ओर आकृष्ट हुए। मसूरी में आर्यसमाज निष्क्रिय था। आपने २००६ में प्रयागराज के कुम्भ मेले से सत्यार्थ प्रकाश और इन्द्र विद्यावाचस्पति द्वारा रचित महर्षि दयानन्द जी की जीवनी क्रय कर स्वाध्याय किया। देहरादून के रामतीर्थ मिशन में भी आप जाते थे, वहाँ पर वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी के एक सज्जन भी आते थे। उनसे भेंट होने पर आपने उनसे वैदिक साधन आश्रम तपोवन के विषय में जाना और वहाँ जाकर आचार्य आशीष जी से भेंट की इस प्रकार आपका आर्य समाज में आने का मार्ग प्रशस्त हुआ। वर्ष २००९ के अन्त में आप दर्शन योग महाविद्यालय आ गए और फिर आपने पीछे मुड़कर नहीं देखा।
- **गुरुकुलीय शिक्षा :** दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़, वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़, महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर, राजस्थान
- **वानप्रस्थ दीक्षाः** वर्ष २०२१ में ऋषि उद्यान अजमेर में।
- **दीक्षा गुरुः** स्वामी मुक्तानन्द सरस्वती
- **अध्यापन :** महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर, राजस्थान
- **धर्माचार्य :** आर्य समाज दयानन्द गंज (गंजी कम्पाउण्ड), इन्दौर, मध्यप्रदेश।
- **वेद, आर्ष प्रचार कार्य क्षेत्र :** राजस्थान, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, मध्यप्रदेश, गुजरात आदि
- **ध्येय :** वैदिक धर्म संस्कृति, आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए अहर्निश आजीवन समर्पित।
- **प्रेरणा व मार्गदर्शनः** विद्यालय, इण्टर कॉलेज, महाविद्यालय, बी एड महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के मध्य वेदादि भारतीय ज्ञान परम्परा, मार्गदर्शन, आयुर्वेद स्वास्थ्य संवर्धन, प्रदूषण निवारण, योग, यज्ञ आदि विषयों पर प्रवचन एवं परामर्श।
- **चलभाष संख्या :** ८५९५२४२९४३

महर्षि दयानन्द गुरुकुल महाविद्यालय पूठ का स्थापना दिवस एवं वेदारम्भ संस्कार महोत्सव

महर्षि दयानन्द गुरुकुल महाविद्यालय पूठ का स्थापना दिवस एवं वेदारम्भ संस्कार महोत्सव दिनांक ८.९.२०२४ रविवार को गुरुकुल प्रांगण में धूमधाम के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय डी.पी. यादव जी पूर्व मन्त्री व सांसद लोकसभा/राज्यसभा ने यज्ञ आहुतियाँ प्रदान की। डी.पी. यादव ने कहा कि वैदिक संस्कृति से समाज को एक सूत्र में बाँध सकते हैं। समाज को प्रगति पथ पर ले जाने की प्रेरणा गुरुकुलों से ही मिल रही है। उन्होंने कहा कि गुरुकुल समाज को सही दशा व दिशा दिखा सकते हैं। आज समाज में अनेक कुरीतियों ने जन्म ले लिया है। यदि उन्हें समाप्त करना है तो वैदिक संस्कृति को अपनाना होगा।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए श्रीमती रेखा नागर अध्यक्ष जिला पंचायत हापुड़ ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने सबको शिक्षा का अधिकार दिया और वेदों की ओर लौटो का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हमें अपने बच्चों को संस्कारित करने की आवश्यकता है। सबको अपने बच्चों पर ध्यान देना चाहिये। वो गलत संगत में न पड़ें। वेदारम्भ संस्कार का शुभारम्भ वैदिक रीति से मन्त्रोच्चारण के बीच यज्ञ में आहुति देते हुए विश्वकल्याण की कामना कर किया गया। यज्ञब्रह्मा स्वामी अखिलानन्द जी व आचार्य प्रमोद कुमार रहे। सभी नवीन ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार किया गया। मंच संचालन आचार्य सोमेन्द्र शास्त्री (चरणानुरागी स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती) ने किया। उन्होंने कहा कि हम सभी गुरुकुल पूठ के शुभचिन्तकों को गुरुकुल को आगे बढ़ाना है तथा स्वामीजी के स्वप्नों को पूर्ण करना है। सब आर्यजनों को महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के विचारों को प्रचारित-प्रसारित करना है। कार्यक्रम में ब्रह्मचारियों ने भजन, भाषण, सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये। इस शुभ अवसर पर ज्ञानेन्द्र गाँधी, अजबसिंह, ए.के. सोती, मयंक आर्य, आचार्य राजीव कुमार, आचार्य हर्षदेव, सुधीर, दिनेश आचार्य, मोहनदास तिवारी, संदीप, अनिल, मुकुल आर्य, मदान जी, रणजीत, डॉ. देवेश प्रकाश आर्य, नीरज आदि उपस्थित रहे।

वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया

आर्य समाज, नीमच, मध्यप्रदेश में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की बेला में दि. २६ से ३१ अगस्त २०२४ तक ६ दिवसीय कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें प्रातः व सायंकाल दो सत्रों में आर्य परिवारों में व सार्वजनिक स्थानों पर कुल ११ कार्यक्रम आयोजित किये गये। इसमें आर्य विदुषी आचार्या डॉ. प्रियंका आर्य भुसावर, जि.भरतपुर (राज.) का यज्ञ व वेद मंत्रों के साथ भजनोपदेश के माध्यम से परिवार, समाज, धर्म के विषयों पर ओजस्वी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

-मनोज स्वर्णकार, नीमच

शोक समाचार : जगदीशचन्द्र जी इन्द्रिया का निधन

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित करने में आता है कि ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के अनन्य भक्त, वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार में प्राण-प्रण से समर्पित, वैदिक संसार के अभिन्न सहयोगी श्री रमेशचन्द्र जी इन्द्रिया (पाटीदार) निवासी ग्राम झोकर, जिला-शाजापुर, मध्यप्रदेश के अनुज स्मृतिशेष श्री जगदीशचन्द्र जी इन्द्रिया का निधन दिनांक ११ सितम्बर २०२४ बुधवार को ७३ वर्ष की आयु में हो गया। आपको आर्यसमाज तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा अपने पिता स्मृतिशेष दौलतसिंह जी इन्द्रिया से विरासत में प्राप्त हुई थी। आपने झोकर भारतीय जनता पार्टी के नगर अध्यक्ष और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ झोकर के नगर कार्यवाह के दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन किया। आप स्मृतिशेष लक्ष्मीनारायण जी पटेल मक्सी निवासी, पूर्व विधायक शाजापुर विधानसभा क्षेत्र के साले थे। आप कृषि व्यवसाय में रत होकर सामाजिक कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेकर सरल, सहज, मिलनसार, सेवाभावी व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति थे। आपके निधन से परिवार के साथ-साथ सम्पूर्ण मानव समाज की भी अपूरणीय क्षति हुई है। आपके अन्तिम संस्कार पश्चात् अधिवक्ता रमेशचंद्र जी पाटीदार के संचालन में आहुत श्रद्धांजलि सभा में व आपके निवास पर अनेक गणमान्य महानुभावों ने उपस्थित होकर अपनी शोक संवेदना व्यक्त की तथा शोकसंतप्त परिजनों को ढाँढस बँधाया। आप अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीबाई तथा तीन सुपुत्र दिलीपकुमार जी, सन्तोषकुमार जी, धर्मेन्द्रकुमार जी व सुपुत्री श्रीमती मंजू प्रकाशचन्द्र पाटीदार निवासी पनवाड़ी का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। वैदिक संसार परिवार दिवंगत आत्मा के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

दयानन्द आश्रम, बड़वानी पर सातवाँ मासिक अतिथि यज्ञ जन्मदिवस, जन्म वर्षगाँठ व चूड़ाकर्म संस्कार के संलग्न सम्पन्न

मुनि सत्यव्रत जी के ब्रह्मत्व में शनिवार सायंकालीन यज्ञ के संलग्न पुत्रवधू श्रीमती हर्षिता का जन्मदिवस विशिष्ट वेदमन्त्रों की आहुतियाँ प्रदान कर मनाया गया।

रात्रिकालीन प्रवचन सत्र में अतिथियों के उद्बोधन/ प्रवचन श्रवण करते बालक-बालिकाएँ।

रविवार प्रातःकाल के साप्ताहिक यज्ञ-सत्संग संलग्न सुपौत्र देवप्रज्ञ की प्रथम जन्म वर्षगाँठ व चूड़ाकर्म संस्कार सम्पन्न किये गये।

पिता प्रितेश पुत्र देवप्रज्ञ की चूड़ाकर्म क्रिया सम्पन्न करते हुए।

मंचस्थ अतिथिगण व अतिथि प्रवचन उद्बोधन।

विद्यार्थी प्रवचन के प्रवचनकर्ता बालक-बालिकाओं को आर्य मान्यताएँ पुस्तक भेंट कर सम्मानित किया गया।

पुत्रवधू श्रीमती हर्षिता को उसके जन्मदिवस पर उपस्थितजन शुभाशीष/ शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए।

सुपौत्र देवप्रज्ञ को प्रथम जन्म वर्षगाँठ व चूड़ाकर्म (मुण्डन) संस्कार के उपलक्ष्य में उपस्थितजन शुभाशीष प्रदान करते हुए।

एम.पी.एच.आई.एन.-२०१२/४५०६९ ● सम्पादक : ओमप्रकाश आर्य ● डाक पंजीयन : एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०२४-२६

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी २००वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में भव्य एवं दिव्य ऋषि मेला समारोह

दिनांक : १८ से २० अक्टूबर २०२४ तक | आयोजन स्थल : ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.)

यजुर्वेद पारायण यज्ञ : १४ से २० अक्टूबर तक, यज्ञ ब्रह्मा : प्रो. कमलेश कुमार शास्त्री, अहमदाबाद

सम्पर्क सूत्र : श्री रमेशचन्द्र भाट (९४१३३५६७२८), श्री दिवाकर गुप्ता (७८७८३०३३८२)

दयानन्द जन कल्याण आश्रम, आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी
जरैल, जिला- मधुबनी, बिहार के तत्वावधान में
महर्षि दयानन्द सरस्वती के द्विजन्म शताब्दी अवसर पर आयोजित

वैदिक मिथिला महोत्सव

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर
दिनांक : १० से १४ अक्टूबर २०२४ तक
सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा समापन समारोह
दिनांक : १४ अक्टूबर २०२४, प्रातः १० बजे
निवेदक : वैदिक मिथिला महोत्सव आयोजन समिति
सम्पर्क : ८८०९८५२१८७, ६२०५९६७९५७

श्रद्धानन्द आर्यसमाज चिचोली, जिला बैतूल (म.प्र.)

११६वाँ वेद प्रचार महोत्सव

दिनांक : १३ से १७ अक्टूबर २०२४ तक
आमन्त्रित विद्वान् : यज्ञब्रह्मा : आचार्य हरिशंकर जी अग्निहोत्री, आगरा
स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती, नागदा जंक्शन (उज्जैन)
आचार्य आर्य नरेश, हिमाचल प्रदेश, आचार्या दीप्ति आर्या, देहरादून
भजनोपदेशक : डॉ. कैलाश जी कर्मठ, कोलकाता
श्रीमती निकिता आर्या, हरिद्वार
सम्पर्क : प्रधान- रोहित आर्य (७८२८३०४५९९)
मन्त्री- क्रान्ति आर्य (९४२४४६०८३७)

आर्य जगत् के भामाशाह, राष्ट्र निर्माण पार्टी प्रमुख ठाकुर विक्रमसिंह जी को दिल्ली स्थित कार्यालय पर जन्म दिवस की शुभाकांक्षा प्रदान की गई।

श्री नीरज जी शर्मा, राजेन्द्र नगर, इन्दौर सपरिवार दयानन्द आश्रम बड़वानी पधारे। सत्यार्थ प्रकाश व विविध वैदिक साहित्य भेंट कर आपका आत्मीय अभिनन्दन किया गया।

वरिष्ठ समाजसेवी, जांगिड ब्राह्मण जिला सभा, जयपुर के पूर्व प्रधान श्री नवलकिशोरजी जांगिड एवं भाभीजी श्रीमती प्रेमदेवी दोनों पूर्व पार्षद जयपुर को विशेषांक प्रति भेंट की गई।

आर्य समाज डॉ. बर्राट रोड, जबलपुर के यशस्वी धर्माचार्य डॉ. धीरेन्द्र जी पाण्डेय को विशेषांक प्रति यज्ञशाला के समीप भेंट की गई।

आर्य जगत् के मूर्धन्य वैदिक विद्वान् आचार्य आनन्द जी पुरुषार्थी आर्यसमाज, रतलाम के वेदकथा अमृतवर्षा आयोजन पर विशेषांक प्रदर्शित करते हुए।

आर्यत्व के धनी देवेन्द्रार्य भगत जी, दिल्ली को उनके सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठान भगत जी स्वीट्स हाउस पर विशेषांक प्रति भेंट की।

आर्य समाज चैनपुर, जिला पलामू, झारखण्ड के संरक्षक श्री बसन्त जी शर्मा को विशेषांक प्रति भेंट की गई। साथ हैं श्री बैजनाथ प्रसाद आर्य।

आर्य समाज वैशाली नगर, जयपुर के वार्षिकोत्सव समापन दिवस पर यज्ञब्रह्मा डॉ. हरिप्रसाद जी, हैदराबाद को विशेषांक भेंट किया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान डॉ. के.के. वशिष्ठ जी द्वारा वैदिक संसार प्रकाशक का अभिनन्दन किया गया।

वेलकम हार्डवेयर, विजयनगर इन्दौर के संचालक श्री सुरेश जी लछेटा (लोनसरा) एवं श्री संजय लछेटा को विशेषांक प्रति भेंट की गई।

श्री राममेहर जी शर्मा, जीवन पार्क, दिल्ली को विशेषांक प्रति भेंट की गई। साथ हैं समधी अशोक कुमार जी शर्मा, मोदीनगर।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : सुखदेव शर्मा, इन्दौर द्वारा इन्दौर ग्राफिक्स, २४, कुँवर मण्डली से मुद्रित एवं १२/३, संविद नगर, इन्दौर-१८ से प्रकाशित